https://freehindipustakalya.blogspot.com

विषय-सूची

प्रस्तावना पृष्ठ क्र. xi

नियम 1 पृष्ठ क्र. 1
कभी बॉस से श्रेष्ठ न दिखें

नियम 2 पृष्ठ क्र. 6
शत्रुओं से काम लेना सीखें

नियम 3 पृष्ठ क्र. 12
अपने इरादे छिपाकर रखें

नियम 4 पृष्ठ क्र. 18
हमेशा ज़रूरत से कम बोलें

नियम 5 पृष्ठ क्र. 24
प्रतिष्ठा पर बहुत कुछ निर्भर करता है - हर क़ीमत पर इसकी रक्षा करें

नियम 6 पृष्ठ क्र. 30
हर क़ीमत पर सबका ध्यान आकर्षित करें

नियम 7 पृष्ठ क्र. 35
काम दूसरों से करवाएँ, लेकिन श्रेय ख़ुद लें

नियम 8 पृष्ठ क्र. 40
दूसरों को अपने पास बुलाएँ - ज़रूरत पड़ने पर दाना भी डालें

नियम 9 पृष्ठ क्र. 46
बहस से नहीं, अपने कामों से जीतें

नियम 10 पृष्ठ क्र. 51
संक्रमण: दुखी और बदक़िस्मत लोगों से बचें

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम 11 पृष्ठ क्र. 56
लोगों को अपने पर निर्भर बनाना सीखें

नियम 12 पृष्ठ क्र. 61
शिकार को निरस्त्र करने के लिए थोड़ी सी
ईमानदारी और उदारता का इस्तेमाल करें

नियम 13 पृष्ठ क्र. 66
मदद माँगते समय दया या कृतज्ञता की नहीं,
बल्कि स्वार्थ की दुहाई दें

नियम 14 पृष्ठ क्र. 71
मित्र की तरह दिखें, लेकिन काम जासूस की तरह करें

नियम 15 पृष्ठ क्र. 76
अपने दुश्मन को पूरी तरह से मिटा दें

नियम 16 पृष्ठ क्र. 81
सम्मान पाने के लिए दूरी बनाएँ

नियम 17 पृष्ठ क्र. 86
दूसरों को दुविधा में रखें : अनिश्चय का माहौल बनाएं

नियम 18 पृष्ठ क्र. 91
अपनी सुरक्षा के लिए किले न बनाएँ - एकाकीपन ख़तरनाक है

नियम 19 पृष्ठ क्र. 96
यह जानें कि आपके सामने कौन है -
ग़लत व्यक्ति को नाराज़ न करें

नियम 20 पृष्ठ क्र. 102
किसी के पिट्ठू न बनें

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम 21 पृष्ठ क्र. 108
मूर्ख बनाने के लिए मूर्ख बनने का नाटक करें - सामने वाले से ज़्यादा मूर्ख दिखें

नियम 22 पृष्ठ क्र. 114
समर्पण की चाल का प्रयोग करें : कमज़ोरी को शक्ति में बदलें

नियम 23 पृष्ठ क्र. 119
अपनी शक्तियों को केंद्रित करें

नियम 24 पृष्ठ क्र. 124
आदर्श दरबारी की भूमिका निभाएँ

नियम 25 पृष्ठ क्र. 131
खुद को नए साँचे में ढालें

नियम 26 पृष्ठ क्र. 136
अपने हाथ साफ़ रखें

नियम 27 पृष्ठ क्र. 141
अनुयायी बनाने के लिए लोगों के विश्वास का लाभ उठाएँ

नियम 28 पृष्ठ क्र. 147
बहादुरी के साथ काम करने उतरें

नियम 29 पृष्ठ क्र. 152
अंत तक पूरी योजना बनाएं

नियम 30 पृष्ठ क्र. 157
अपनी उपलब्धियों को आसान दिखाएँ

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम 31 पृष्ठ क्र. 162

विकल्पों पर नियंत्रण करें : दूसरों को ताश के उन पत्तों से खिलाएँ, जो आपने बाँटे हैं

नियम 32 पृष्ठ क्र. 167

लोगों की फ़ंतासियों के साथ खेलें

नियम 33 पृष्ठ क्र. 173

हर व्यक्ति की कमज़ोर नस पहचानें

नियम 34 पृष्ठ क्र. 179

शहंशाहों की तरह रहें : सम्राट जैसा सम्मान पाने के लिए सम्राट की तरह काम करें

नियम 35 पृष्ठ क्र. 184

टाइमिंग की कला में माहिर बनें

नियम 36 पृष्ठ क्र. 190

जो चीज़ें आप पा न सकें, उनका तिरस्कार करें : उन्हें नज़रअंदाज़ करना ही सर्वश्रेष्ठ प्रतिशोध है

नियम 37 पृष्ठ क्र. 195

चकाचौंध का आभामंडल बनाएँ

नियम 38 पृष्ठ क्र. 200

जैसा चाहे सोचें, लेकिन व्यवहार सबके जैसा करें

नियम 39 पृष्ठ क्र. 205

मछली पकड़ने के लिए पानी हिलाएँ

नियम 40 पृष्ठ क्र. 211

मुफ़्त लंच का तिरस्कार करें

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम 41 पृष्ठ क्र. 217
महान व्यक्ति का अनुसरण न करें

नियम 42 पृष्ठ क्र. 222
गड़रिए को मार दें, भेड़ें तितर-बितर हो जाएँगी

नियम 43 पृष्ठ क्र. 227
दूसरों के दिल और दिमाग़ पर काम करें

नियम 44 पृष्ठ क्र. 232
दर्पण दिखाकर निरस्त्र और क्रोधित करें

पृष्ठ क्र. 237
परिवर्तन की आवश्यकता का भाषण दें, लेकिन एकदम बहुत ज़्यादा सुधार कभी न करें

नियम 46 पृष्ठ क्र. 242
बहुत आदर्श नज़र न आएँ

नियम 47 पृष्ठ क्र. 248
लक्ष्य से आगे न जाएँ, सीखें कि जीतने के बाद कहाँ रुकना है

नियम 48 पृष्ठ क्र. 253
निराकार बनें

https://freehindipustakalya.blogspot.com

प्रस्तावना

शक्तिहीन होना हममें से किसी को भी पसंद नहीं होता है। असहाय या अशक्त होने पर हम दुखी हो जाते हैं। कोई भी अपनी शक्ति घटाना नहीं चाहता है; सभी अपनी शक्ति बढ़ाना चाहते हैं। बहरहाल, लोगों को यह नहीं लगना चाहिए कि हम शक्ति के भूखे हैं। शक्ति पाने के हमारे दाँव-पेंच किसी को नज़र नहीं आने चाहिए। हमें हमेशा न्यायपूर्ण और नेक दिखना चाहिए। इसीलिए हमें शक्ति पाने के सूक्ष्म दाँव-पेंचों की ज़रूरत होती है। सफलता का सूत्र यह है कि चालाक होने के बावजूद हम नेक और प्रजातांत्रिक दिखें।

सतत छल-कपट का यह खेल शक्ति के उसी खेल की तरह है, जो पुराने ज़माने के सामंती दरबारों में खेला जाता था। पूरे इतिहास में शक्तिशाली व्यक्ति - महाराजा, महारानी या सम्राट - के चारों तरफ़ हमेशा एक दरबार लगा रहता था। दरबारी अपने स्वामी के निकट आने की कोशिश तो करते थे, लेकिन वे जानते थे कि अगर वे खुलकर चापलूसी करेंगे या शक्ति पाने की कोशिश करेंगे, तो बाक़ी दरबारियों का ध्यान उनकी तरफ़ चला जाएगा और वे उनके इरादों को नाकामयाब कर देंगे। यही वजह थी कि वे सूक्ष्म तरीक़ों से अपने स्वामी का दिल जीतने की कोशिश करते थे। जो दरबारी इस सूक्ष्म कला में समर्थ और कुशल थे, उन्हें भी अपने साथी दरबारियों से सतर्क रहना पड़ता था, क्योंकि वे उन्हें दरकिनार करने की योजनाएँ बनाते रहते थे।

दरबार सभ्यता और सुसंस्कृति की पराकाष्ठा माना जाता था, इसलिए वहाँ शक्ति की हिंसक या खुली चालों को पसंद नहीं किया जाता था। जो दरबारी शक्ति का खुला प्रयोग करते दिखते थे, दूसरे दरबारी गोपनीय रूप से उनके ख़िलाफ़ काम करने लगते थे। यह दरबारी की दुविधा थी। एक तरफ़ तो उसे शालीनता की मूर्ति दिखना था और दूसरी तरफ़ उसे अपने विरोधियों को दबाकर आगे निकलना था। सफल दरबारी ने समय के साथ अपनी चालों को छिपाना सीख लिया। अपने विरोधी की पीठ में छुरा भोंकते समय भी उसके हाथ पर मख़मल का दस्ताना और उसके चेहरे पर मधुर मुस्कान होती थी। खुले विश्वासघात या बल-प्रयोग के

बजाय आदर्श दरबारी प्रलोभन, सम्मोहन, धोखे और सूक्ष्म रणनीति से अपना उल्लू सीधा करता था। वह हमेशा कई कदम आगे तक की योजना बनाता था। दरबारी जीवन एक अंतहीन खेल था, जिसमें सतत सावधानी और राणनीतिक चिंतन की जरूरत होती थी। यह सभ्य युद्ध था।

आज हम भी दरबारियों जैसे ही विरोधाभास का सामना कर रहे हैं। हर चीज़ सभ्य, नेक, प्रजातांत्रिक और न्यायपूर्ण दिखनी चाहिए। लेकिन अगर हम सचमुच इन गुणों के हिसाब से चलेंगे, तो हमारे आस-पास के ज्यादा समझदार लोग हमें कुचल देंगे। जैसा पुनर्जागरण काल के कूटनीतिज्ञ और दरबारी निकोलो मैकियावेली ने लिखा है, 'जो व्यक्ति हमेशा अच्छा बनने की कोशिश करता है, बहुसंख्यक बुरे लोगों की दुनिया में उसका विनाश तय है।'

दरबार को सुसंस्कृति की पराकाष्ठा माना जाता था, लेकिन इसकी चमकती सतह के नीचे स्याह भावनाओं - ईर्ष्या, लालच, नफ़रत - का अलाव धधकता रहता था। आज हमारी दुनिया भी खुद को न्याय और सभ्यता की पराकाष्ठा मानती है, लेकिन वही निकृष्ट भावनाएँ हमारे अंदर अब भी घुमड़ती हैं। खेल वही है। बाहर से तो आपको अच्छा दिखना होगा, लेकिन अंदर से आपको समझदारी सीखनी होगी और वही करना होगा, जिसकी सलाह नेपोलियन ने दी थी : अपने लोहे के हाथ को मख़मल के दस्ताने के भीतर रखें। अगर पुराने ज़माने के दरबारी की तरह आप भी अप्रत्यक्ष और सूक्ष्म कलाओं में महारत हासिल कर सकें, अगर आप प्रलोभन, सम्मोहन, धोखे और चतुर योजनाओं से अपने विरोधियों को दबाना सीख सकें, तो आप शक्ति की ऊँचाइयों पर पहुँच जाएँगे। आप दूसरे लोगों को अपनी मर्ज़ी से चलाएँगे, लेकिन उन्हें इसका एहसास तक नहीं होगा। और अगर उन्हें यह एहसास ही नहीं होगा, तो वे आपसे द्वेष नहीं रखेंगे या आपका विरोध नहीं करेंगे।

'शक्ति के 48 नियम' को अप्रत्यक्ष कलाओं की मार्गदर्शिका समझें। इस पुस्तक को पढ़ने के बाद आप शक्ति और इसकी कुंजी को समझ जाएँगे तथा यह सीख लेंगे कि नेक छवि बनाकर स्वार्थ-सिद्धि कैसे की जा सकती है। अगर आप इन सिद्धांतों पर अमल करते हैं, तो आप आधुनिक दुनिया में काफ़ी सफल हो सकते हैं ।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम

1

कभी बॉस से श्रेष्ठ न दिखें

विचार

अपने से वरिष्ठ लोगों को यह महसूस करने दें कि वे आपसे श्रेष्ठ हैं। उन्हें खुश और प्रभावित करने के लिए अपनी योग्यताओं का ज़रूरत से ज़्यादा प्रदर्शन न करें। अगर आप ऐसा करेंगे, तो परिणाम ठीक उलटा होगा - वे भयभीत और असुरक्षित महसूस करेंगे। इसके बजाय अगर आप अपने बॉस को ज़्यादा प्रतिभाशाली बताते रहेंगे, तो आप बुलंदियों को छू लेंगे।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

शक्ति की कुंजी

हर इंसान में असुरक्षा की भावनाएँ होती हैं। जब आप लोगों के सामने अपने गुणों का प्रदर्शन करते हैं, तो उनमें द्वेष, ईर्ष्या और असुरक्षा की भावनाएँ जाग जाती हैं। यह स्वाभाविक है और इसका कोई इलाज नहीं है। दूसरों की ओछी भावनाओं की चिंता करके आप अपनी ज़िंदगी बर्बाद नहीं कर सकते। बहरहाल, अपने से ऊपर बैठे लोगों के प्रति आपको एक अलग नीति अपनाना चाहिए। बॉस से श्रेष्ठ दिखना या उससे ज़्यादा प्रभावशाली दिखना शक्ति हासिल करने की राह में शायद सबसे बड़ी ग़लती होती है।

यह सोचने की मूर्खता न करें कि दुनिया लुई चौदहवें और मेडिसी के युग के बाद बहुत बदल चुकी है। ऊँचे पद पर बैठे लोग राजाओं और रानियों की तरह होते हैं। वे अपने पद पर सुरक्षित महसूस करना चाहते हैं। बुद्धि, वाकचातुर्य और आकर्षण के मामले में वे अपने आस-पास के लोगों से श्रेष्ठ दिखना चाहते हैं। आप भूल से भी इस आम धारणा पर न चलें कि प्रतिभा और गुणों का प्रदर्शन करके आप बॉस की सद्भावना हासिल कर लेंगे। हो सकता है बॉस ऊपर से तो आपकी प्रशंसा करने का नाटक करे, लेकिन मौक़ा मिलते ही वह आपकी जगह पर किसी कम बुद्धिमान, कम आकर्षक और कम ख़तरनाक लगने वाले व्यक्ति को नियुक्त कर देगा।

आपको यह जान लेना चाहिए कि इस नियम के दो पहलू हैं। पहली बात, हो सकता है कि

आप कोशिश किए बिना ही अपने बॉस से श्रेष्ठ या ज़्यादा दैदीप्यमान दिखते हों। बहरहाल, कुछ बॉस दूसरों से ज़्यादा असुरक्षित महसूस करते हैं। हो सकता है कि अपने आकर्षण और गुणों की बदौलत आप बिना कुछ किए ही उनसे ज़्यादा प्रभावशाली दिखते हों। अगर आप अपने आकर्षण को कम न करना चाहें, तो भी कम से कम आपको आत्म-प्रदर्शन के इस दैत्य से बचना चाहिए और बॉस के साथ रहते समय अपने अच्छे गुणों को दबाने का तरीक़ा खोजना चाहिए।

दूसरी बात, यह कभी न मानें कि चूँकि बॉस आपसे प्रेम करता है, इसलिए आप अपनी मनमर्ज़ी का हर काम कर सकते हैं। ऐसे कई प्रिय पात्रों या मुँहचढ़े लोगों पर किताबें लिखी जा सकती हैं, जिन्होंने यह मान लिया था कि वे हमेशा बॉस की नज़रों में चढ़े रहेंगे, लेकिन बॉस से ज़्यादा चमकने के कारण वे उसकी नज़रों से गिर गए।

अपने बॉस से श्रेष्ठ दिखने के ख़तरे को जानने के बाद आप इस नियम से लाभ उठा सकते हैं। सबसे पहले तो आपको अपने मालिक की चापलूसी करना चाहिए और उसे चने के झाड़ पर चढ़ाना चाहिए। प्रत्यक्ष या सीधी चापलूसी असरदार होती है, लेकिन इसकी कुछ सीमाएँ भी हैं। प्रत्यक्ष चापलूसी बहुत स्पष्ट होती है और साफ़ दिख जाती है। इसके अलावा यह दूसरे दरबारियों को भी चुभ जाती है। इसके बजाय अप्रत्यक्ष या छिपाकर की गई चापलूसी बहुत शक्तिशाली होती है। उदाहरण के लिए, अगर आप अपने बॉस से ज़्यादा बुद्धिमान हैं,

https://freehindipustakalya.blogspot.com

तो इसके विपरीत प्रदर्शन करें। उसे अपने से ज्यादा बुद्धिमान नजर आने दें। मूर्खता का अभिनय करें। ऐसा दिखावा करें, जैसे आपको उसकी विशेषज्ञतापूर्ण सलाह की जरूरत है। ऐसी हानिरहित प्रतिक्रिया करें, जिनसे आपको आगे चल कर नुकसान न पहुँचे, लेकिन जिनके कारण आपको उसकी मदद मांगने का अवसर मिले। हर बॉस को अपने ज्ञान का प्रदर्शन करना अच्छा लगता है। अगर आप अपने बॉस के अनुभव खजाने से सलाह नहीं मांगेंगे तो वह आपके प्रति आक्रोश और दुर्भावना रख सकता है।

अगर आपके विचार अपने बॉस के विचारों से ज्यादा रचनात्मक हैं, तो सबके सामने उनका श्रेय उसे ही दें। सबको यह स्पष्ट बता दें कि आपकी सलाह दरअसल बॉस की सलाह की प्रतिध्वनि मात्र है।

अगर आप अपने बॉस से ज्यादा सामाजिक और उदार हैं, तो आपको सावधान रहना चाहिए। इस बात का ध्यान रखें कि आपका बॉस सूर्य है और आपको उसकी चमक रोकने वाला बादल नहीं बनना चाहिए। सबके सामने हमेशा बॉस को सूर्य साबित करते रहें, जिसके चारों तरफ हर व्यक्ति ग्रहों की तरह चक्कर लगाता है। उसे शक्ति और प्रकाश का पुंज बना दें। उसे ध्यान का केंद्र बना दें।

इन सभी मामलों में अपने गुणों को छिपाना कमजोरी नहीं है, क्योंकि इसके परिणामस्वरूप आपको शक्ति हासिल होती है। जब आप बॉस को अपने से ज्यादा चमकने देते हैं, तो बागडोर आपके हाथ में होती है। आप उसकी असुरक्षा

https://freehindipustakalya.blogspot.com

के शिकार नहीं बनते हैं। यह उस दिन काम आएगा, जब आप निचले पद से ऊपर उठने की कोशिश करेंगे। अगर आप बॉस को ख़ुद से ज़्यादा चमकने देंगे, तो वह आपको ईश्वर का दिया वरदान मानेगा और तत्काल आपकी तरक्की कर देगा।

तस्वीर : आसमान में सितारे। एक समय में सिर्फ़ एक ही सूर्य रह सकता है। कभी भी सूरज की रोशनी में बाधा न डालें या उसकी चमक से मुक़ाबला न करें। इसके बजाय आसमान में ख़ुद को धुँधला बनाकर और सूर्य की रोशनी को अधिकतम बनाने के तरीक़े खोजें।

विशेषज्ञ की राय : अपने मालिक से ज़्यादा तेज़ी से चमकने से बचें। किसी भी तरह की श्रेष्ठता लोगों को नापसंद होती है और वे उसकी निंदा करते हैं, लेकिन अपने बॉस से ज़्यादा श्रेष्ठ दिखने की कोशिश तो मूर्खतापूर्ण ही नहीं, बल्कि घातक भी हो सकती है। आसमान के सितारे हमें यही सबक़ सिखाते हैं - हो सकता है वे सूर्य जितने ही चमकदार हों, लेकिन सूर्य के चमकते समय वे नज़र नहीं आते हैं। (बाल्तेसर ग्रेशियन, 1601-1658)

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम
2

मित्रों पर कभी ज़्यादा भरोसा न करें, शत्रुओं से काम लेना सीखें

विचार

मित्रों से सावधान रहें। मित्र बहुत जल्दी से ईर्ष्या करने लगते हैं, इसलिए वे आपको बहुत जल्दी धोखा भी देंगे। मित्र भविष्य में कष्ट का कारण बन सकते हैं। इसके बजाय अगर आप किसी पुराने शत्रु को काम पर रखेंगे, तो वह मित्र से ज़्यादा वफ़ादार होगा, क्योंकि उसे बहुत कुछ साबित करना है। दरअसल आपको शत्रुओं से नहीं, बल्कि मित्रों से डरना चाहिए। अगर आपका कोई शत्रु नहीं है, तो शत्रु बनाने के तरीके खोजें।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

शक्ति की कुंजी

यह स्वाभाविक है कि ज़रूरत पड़ने पर हम अपने मित्रों को काम पर रखना चाहते हैं। यह दुनिया निर्मम है और आपके मित्र उसकी निर्ममता को कम करते हैं। इसके अलावा, आप उन्हें अच्छी तरह जानते भी हैं। मित्रों के होते हुए किसी अजनबी पर निर्भर क्यों रहें?

दिक्क़त यह है कि अक्सर आप अपने मित्रों को उतनी अच्छी तरह से नहीं जानते हैं, जितना आपको लगता है। मित्र अक्सर बहस टालने के लिए आपकी हाँ में हाँ मिला देते हैं। आपको कष्ट न पहुँचे, इसलिए वे अपने अप्रिय गुण छिपा लेते हैं। आप जब मज़ाक़ करते हैं, तो वे थोड़ा ज़्यादा हँसते हैं। चूँकि ईमानदारी और सच्चाई से मित्रता की नींव मज़बूत नहीं होती है, इसलिए वास्तव में आपको यह पता ही नहीं होता कि आपके बारे में आपके मित्रों की असली भावनाएँ क्या हैं। मित्र आपके मुँह पर तो यही कहेंगे कि उन्हें आपकी कविता बहुत अच्छी लगती है, आपका गाना-बजाना बेहद पसंद है, आपके कपड़ों का चयन बेहद सुंदर लगता है – हो सकता है वे सचमुच आपकी तारीफ़ कर रहे हों, लेकिन प्रायः ऐसा नहीं होता है।

जब आप अपने किसी मित्र को नौकरी पर रखने का निर्णय लेते हैं, तो आपके सामने वे गुण धीरे-धीरे सामने आते हैं, जिन्हें उसने अब तक छिपा रखा था। अजीब बात यह है कि आपकी उदारता के इस काम से संबंधों का

अपने शत्रुओं से लाभ लेना

सम्राट हिएरो को एक बार उनके एक शत्रु ने बताया कि उनके मुँह से बहुत बदबू आती है। सम्राट को यह बात बहुत बुरी लगी और महल में पहुँचते ही उन्होंने रानी को फटकारा, "तुमने मुझे कभी इसके बारे में क्यों नहीं बताया?" रानी चरित्रवान, पतिव्रता और भोली थी। उसने कहा, "स्वामी, मुझे लगा कि शायद सभी मर्दों के मुँह से इसी तरह की बदबू आती होगी।" इस तरह से यह स्पष्ट हो जाता है कि जो दोष स्पष्ट दिखाई देते हैं, उनके बारे में हमारे शत्रु हमारे मित्रों या परिचितों से ज़्यादा जानते हैं।

प्लूटार्क, 46-120 ईस्वी

किसी के लिए लाभ के बजाय नुकसान का बदला चुकाने के लिए लोग ज्यादा तत्पर होते हैं, क्योंकि कृतज्ञता बोझ है और प्रतिशोध आनंद है।

टैलिट्स,

53 - 120 ईस्वी

https://freehindipustakalya.blogspot.com

संतुलन बिगड़ जाता है। सभी लोग यह महसूस करना चाहते हैं कि उन्हें यह अवसर अपने दम पर मिला है। इसलिए आपका एहसान उन्हें बोझ की तरह लगता है। वे जानते हैं कि उन्हें योग्यता के कारण नहीं, बल्कि मित्रता के कारण नौकरी मिली। मित्रों को नौकरी देने में एक एहसान छिपा होता है, जिससे वे मन ही मन परेशान हो जाते हैं।

मित्रों का प्रयोग करने या उन्हें नौकरी पर रखने में समस्या यह है कि इससे आपकी शक्ति निश्चित रूप से सीमित हो जाएगी। बहुत कम मामलों में ही ऐसा होता है कि मित्र किसी काम के लिए सबसे योग्य व्यक्ति हो और आपकी मदद करने में सबसे ज्यादा सक्षम हो। अंतिम विश्लेषण में, योग्यता और क्षमता मित्रतापूर्ण भावनाओं से ज्यादा महत्वपूर्ण होती हैं।

कामकाज की सभी स्थितियों में लोगों बीच थोड़ी दूरी होना चाहिए। आप मित्र बनाने की नहीं, बल्कि कोई काम करने की कोशिश कर रहे हैं और मित्रता चाहे सच्ची हो या झूठी, इस तथ्य को ढँक लेती है। शक्ति की कुंजी यह है कि आपमें यह मूल्यांकन करने की क्षमता होनी चाहिए कि आपको सबसे ज्यादा फायदा कौन पहुंचा सकता है।

दूसरी ओर, आपके शत्रु सोने की ऐसी अनछूई खान हैं, जिसका दोहन करना आपको सीखना चाहिए। नेपोलियन का विदेश मंत्री टैलीरेंड 1807 में इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि नेपोलियन फ्रांस को बर्बादी के रास्ते पर ले जा

रहा है, इसलिए उसके ख़िलाफ़ विद्रोह करना चाहिए। टैलीरैंड सम्राट के ख़िलाफ़ षड्यंत्र करने के ख़तरों को अच्छी तरह जानता था। उसे एक साथी की ज़रूरत थी। उसने सोचा, इस तरह के अभियान में वह किसी मित्र पर भरोसा नहीं कर सकता। उसने ख़ुफ़िया विभाग के प्रमुख फ़ोके को चुना, जो उसका सबसे बड़ा शत्रु था और जिसने उसकी हत्या करवाने की भी कोशिश की थी। वह जानता था कि उन दोनों की पुरानी नफ़रत के कारण भावनात्मक समझौते का अवसर मिलेगा। वह जानता था कि फ़ोके उससे कोई आशा नहीं रखेगा और यह साबित करने के लिए जीतोड़ मेहनत करेगा कि टैलीरैंड ने उसे चुनकर कोई ग़लती नहीं की है। जो व्यक्ति कुछ साबित करना चाहता है, वह आपके लिए ज़मीन-आसमान एक कर देगा। अंत में टैलीरैंड यह जानता था कि फ़ोके के साथ उसका संबंध आपसी स्वार्थ पर आधारित होगा और मित्रता की व्यक्तिगत भावनाओं द्वारा दूषित नहीं होगा। उसका चुनाव सही साबित हुआ, हालाँकि वे नेपोलियन को सिंहासन से उतारने में सफल नहीं हुए। जब इतने शक्तिशाली और परस्पर-विरोधी दो व्यक्तियों ने मिलकर सम्राट के ख़िलाफ़ मुहिम छेड़ी, तो जनता ने भी इसमें उत्सुकता दिखाई और धीरे-धीरे सम्राट के प्रति विरोध बढ़ने लगा। टैलीरैंड और फ़ोके के बीच सुखद कार्यकारी संबंध बने रहे। इसलिए जब भी मौक़ा मिले, अपने दुश्मन के प्रति दुश्मनी को दफ़न कर दें और उसे अपनी

https://freehindipustakalya.blogspot.com

सेवा में रखने की कोशिश करें।

शत्रुओं की मौजूदगी से विचलित या दुखी न हों। आप मित्र के बजाय शत्रु के साथ बेहतर स्थिति में होते हैं, क्योंकि मित्रों के मामले में आपको यह मालूम ही नहीं होता है कि आपके छिपे हुए कौन से मित्र दरअसल आपके शत्रु हैं। शक्तिशाली व्यक्ति संघर्ष से लाभ उठाता है और अपने शत्रुओं का इस्तेमाल करता है। ऐसा करके वह उस आत्मविश्वासी योद्धा की छवि बना लेता है, जिस पर अनिश्चितता के समय में विश्वास किया जा सकता है।

तस्वीर : कृतघ्नता का जबड़ा। आप जानते हैं कि अगर आप शेर के मुँह में उँगली रखेंगे, तो इसका परिणाम क्या होगा। इसलिए आप ऐसा नहीं करते हैं। मित्रों के साथ आप इस तरह की सतर्कता नहीं रखते हैं, इसलिए अगर आप उन्हें नौकरी पर रखेंगे, तो वे कृतघ्नता से आपको कच्चा चबा जाएँगे।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

विशेषज्ञ की राय : यह सीखें कि अपने लाभ के लिए दुश्मनों का इस्तेमाल कैसे किया जाता है। आपको धार की तरफ़ से तलवार नहीं पकड़नी चाहिए, वरना आपका हाथ कट जाएगा। इसके बजाय आपको मूठ की तरफ़ से तलवार पकड़नी चाहिए, ताकि आप खुद की रक्षा कर सकें। बुद्धिमान व्यक्ति अपने शत्रुओं से भी लाभ लेता है, जबकि मूर्ख व्यक्ति अपने मित्रों से भी हानि उठाता है। (बाल्तेसर ग्रेशियन, 1601-1658)

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम

3

अपने इरादे छिपाकर रखें

विचार

आप किस उद्देश्य से काम कर रहे हैं, यह ज़ाहिर न होने दें। इससे लोग अंधेरे में रहेंगे और अपनी योजना नहीं बना पाएंगे। अगर उन्हें इस बात का अंदाज़ा ही नहीं होगा कि आप क्या करना चाहते हैं, तो वे अपनी रक्षा की योजना नहीं बना सकते। इस तरह आप उन्हें ग़लत दिशा में काफ़ी दूर तक ले जा सकते हैं और काफ़ी समय तक गुमराह कर सकते हैं। जब तक उन्हें आपके इरादों का एहसास होगा, तब तक बहुत देर हो चुकी होगी।

शक्ति की कुंजी

ज़्यादातर लोग खुली किताब की तरह होते हैं। वे अपने मन की बात तत्काल कह देते हैं। वे मौक़ा मिलते ही अपने विचार प्रकट कर देते हैं। वे अपनी योजनाओं और इरादों के बारे में लगातार बोलते रहते हैं। वे ऐसा कई कारणों से करते हैं। पहली बात, अपनी भावनाओं और भावी योजनाओं के बारे में बातें करने की इच्छा बहुत आम और स्वाभाविक होती है। अपनी ज़ुबान पर लगाम कसना और अपनी बातों पर नियंत्रण रखना मुश्किल होता है। दूसरी बात, कई लोग यह मानते हैं कि ईमानदारी और स्पष्टतावादिता से वे लोगों का दिल जीत लेंगे और अपनी भलमनसाहत को प्रमाणित कर देंगे। वे बहुत मुग़ालते में रहते हैं। ईमानदारी दरअसल एक भौंथरा हथियार है, जिससे कटता कम है, ख़ून ज़्यादा बहता है। आपकी ईमानदारी से लोगों को चोट पहुँचने की संभावना ज़्यादा होती है। इसलिए समझदारी इसी में है कि शब्दों को नाप-तौलकर बोलें। बुद्धिमानी इसमें है कि लोगों से वही कहें, जो लोग सुनना चाहते हैं। यह समझदारी नहीं है कि आप उन्हें वह कटु सच्चाई बता दें, जो आप महसूस करते या सोचते हैं। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि जब आप अपने इरादों और भावी योजनाओं के बारे में खुलकर बता देते हैं, तो आपके बारे में कुछ भी छिपा नहीं रह जाता है। ऐसी स्थिति में लोग न तो आपका सम्मान करेंगे, न ही आपसे डरेंगे। ध्यान देने वाली बात यह है कि जिसका

हालाँकि आज की दुनिया में चालाक बने बिना काम नहीं चल सकता, लेकिन चालाकी की छवि न बनाएँ। आपकी सबसे बड़ी चालाकी यह होना चाहिए कि आप अपनी चालाकी को छिपा लें।

बाल्तेसर ग्रेशियन, 1601-1658

भरी दोपहर में समुद्र पार करें

इसका मतलब यह है कि अपने चेहरे के सामने जाना-पहचाना मुखौटा लगा लें।

चूंकि सब लोगों को जानी-पहचानी चीजें देखने की आदत पड़ जाती है, इसलिए रणनीति बनाने वाला नज़र आए बिना आराम से अपनी योजना बना सकता है।

"द थर्टी सिक्स स्ट्रैटजीज़," थॉमस क्लीयरी द्वारा उद्धृत, द जापानीज़ आर्ट ऑफ़ वार, 1991

लोग सम्मान नहीं करते हैं या जिससे लोग डरते नहीं है, उस व्यक्ति के पास शक्ति कभी नहीं आती है।

अगर आप शक्ति चाहते हैं, तो ईमानदारी को एक तरफ रख दें और अपने इरादों को छिपाने की कला सीखें। अगर आप इस कला में पारंगत हो जाएँगे, तो आप हमेशा फ़ायदे में रहेंगे। इरादों को छिपाने की योग्यता के पीछे मानवीय स्वभाव की यह साधारण सी सच्चाई है : प्रायः हम दिखने वाली चीजों पर भरोसा करते हैं। हम जो देखते और सुनते हैं, उसकी सच्चाई पर हम संदेह नहीं करते हैं। अगर हम दिखने वाली चीज़ों के पीछे दूसरी चीज़ों के छिपे होने की कल्पना करेंगे, तो हम न सिर्फ बहुत थक जाएँगे, बल्कि दहशत में भी रहेंगे। इस कारण इरादों को छिपाना तुलनात्मक रूप से ज़्यादा आसान हो जाता है। ऐसा लक्ष्य या उद्देश्य बताएँ, जिससे लोग प्रभावित हो जाएँ। ज़रूरी नहीं है कि आपका असली लक्ष्य वही हो। जब आप उस लक्ष्य को लोगों की आँखों के सामने बार-बार रखते रहेंगे, तो वे उसे ही आपका असली लक्ष्य मान लेंगे।

इरादों को छिपाने का एक तरीक़ा यह है कि आप अपनी इच्छाओं और लक्ष्यों के बारे में लगातार बातें करें - लेकिन वे आपकी असली इच्छाएँ और लक्ष्य नहीं होने चाहिए। इस तरह आप एक पत्थर से तीन शिकार करेंगे : आप दोस्ताना, निष्कपट और विश्वसनीय नज़र आएँगे; आप अपने इरादों को छिपा लेंगे; और आप

https://freehindipustakalya.blogspot.com

https://freehindipustakalya.blogspot.com

अपने प्रतिद्वंद्वियों को ग़लत दिशा में भेज देंगे, जिससे उनका समय बर्बाद होगा।

लोगों को गुमराह करने का एक और सशक्त औज़ार है झूठी निष्कपटता (sincerity)। लोग ग़लती से निष्कपटता को ईमानदारी मान लेते हैं। जब लोगों को ऐसा लगता है कि आप जो कह रहे हैं, उसमें आप विश्वास करते हैं, तो इससे आपके शब्दों का वज़न बहुत बढ़ जाता है। इयागो ने इसी तरह ओथेलो को धोखा दिया था और उसे बर्बाद किया था। ऐसा लग रहा था कि इयागो की भावनाएँ सच्ची हैं। ऐसा लग रहा था कि डेस्डेमोना की बेवफ़ाई के बारे में उसकी चिंता निष्कपट है। ऐसे में ओथेलो उस पर अविश्वास कैसे कर सकता था?

अगर आप यह मानते हैं कि धोखेबाज़ लोग हवाबाज़ होते हैं, जो बड़े-बड़े झूठों और अतिशयोक्तिपूर्ण कहानियों से गुमराह करते हैं, तो आप बहुत ग़लत सोचते हैं। सबसे अच्छे धोखेबाज़ वे होते हैं, जो उदासीन और अदृश्य मुखौटे का इस्तेमाल करते हैं, जिस वजह से उनकी तरफ़ किसी का ध्यान नहीं जाता है। वे जानते हैं कि अनावश्यक शब्दों और हरकतों से लोगों का संदेह तत्काल जाग जाएगा। इसलिए वे अपने लक्ष्य को सामान्य, जाने-पहचाने और मासूम शब्दों के पीछे छिपा लेते हैं।

एक बार जब आप जाने-पहचाने शब्दों का इस्तेमाल करके लोगों की सतर्कता को दबा देंगे, तो फिर उनका ध्यान इस तरफ़ नहीं जाएगा कि इन शब्दों के पीछे धोखा देने के

https://freehindipustakalya.blogspot.com

इरादे हैं। आपका नकाब जितना एकरूप होगा, आपके इरादे उतनी ही अच्छी तरह से छिपे रहेंगे।

नाकाब का सबसे आसान रूप है चेहरे के भाव। उदासीन और भावहीन चेहरे के पीछे हर तरह की विनाशकारी योजना बनाई जा सकती है, जिसकी किसी को भनक भी नहीं लगेगी। इतिहास के सबसे शक्तिशाली लोग इस हथियार का इस्तेमाल करने में निपुण थे। कहा जाता है कि फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट के चेहरे को देखकर कोई भी उनके दिल की बात नहीं समझ सकता था। बैरन जेम्स रॉथ्सचाइल्ड ने तो पूरी जिंदगी इस बात का अभ्यास किया कि वे नकली मुस्कराहटों और भावहीन चेहरे के पीछे अपने असली विचार छिपा लें।

याद रखें : अपनी प्रभावशाली वाकपटुता को छिपाने और भावहीनता का नक़ाब पहनने में धैर्य और विनम्रता की जरूरत होती है। इस तरह के नीरस नक़ाब को लगाकर निराश न हों। अक्सर भावहीनता से लोग आपकी तरफ आकर्षित होते हैं और आप शक्तिशाली नज़र आने लगते हैं।

तस्वीर - भेड़ की खाल। भेड़ कभी अचानक हमला नहीं करती है, भेड़ कभी धोखा नहीं देती है, भेड़ बहुत ही सीधी और आज्ञाकारी होती है। भेड़ की खाल पहनकर लोमड़ी बड़े आराम से मुर्गियों के दड़बे में घुस सकती है।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

विशेषज्ञ की राय : जो योग्य सेनापति शत्रु पर अचानक हमला करने का इरादा रखता है, वह अपने शत्रु को अपने इरादे की भनक भी नहीं लगने देता है। अपने उद्देश्य और अपनी प्रगति को छिपाएँ। अपनी योजनाओं को तब तक प्रकट न करें, जब तक कि उनका विरोध करना असंभव न हो जाए, जब तक कि युद्ध पूरा ही न हो जाए। युद्ध की घोषणा करने से पहले ही विजय हासिल कर लें। संक्षेप में, उन सेनापतियों का अनुसरण करें, जिनकी योजनाएं सिर्फ उन्हीं बर्बाद इलाकों को मालूम होती है, जहां से वे अपनी सेना लेकर गुज़रे हैं। (निर्नोन डे ला एन्क्लोस 1623-1706)

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम
4

हमेशा ज़रूरत से कम बोलें

विचार

लोगों को शब्दों से प्रभावित करने की कोशिश न करें। आप जितना ज़्यादा बोलेंगे, उतने ही ज़्यादा साधारण नजर आएँगे और आपका नियंत्रण उतना ही कम होगा। अगर आप अपनी बात को अस्पष्ट, गोलमोल और अजीब रखेंगे, तो आपकी नीरस बात भी मौलिक लगेगी। सशक्त लोग कम बोलकर प्रभावित करते हैं और रौबदार दिखते हैं। इस बात की ज़्यादा संभावना होती है कि ज़्यादा बोलते समय आपके मुँह से कोई न कोई मूर्खतापूर्ण बात निकल ही जाएगी।

शक्ति की कुंजी

शक्ति कई मायनों में दिखावे का खेल है। जब आप ज़रूरत से कम बोलते हैं, तो आप हमेशा वास्तविकता से ज़्यादा महान और शक्तिशाली नज़र आते हैं। आपकी चुप्पी से दूसरे लोग परेशान हो जाएँगे। इंसान विश्लेषण और स्पष्टीकरण करने वाली मशीनें हैं। वे यह जानने की फिराक में रहते हैं कि आप क्या सोच रहे हैं। जब आप अपने शब्दों को सावधानी से नियंत्रित करते हैं, तो वे आपके इरादों या आपकी मंशा को नहीं समझ पाते हैं।

आपके संक्षिप्त जवाब या ख़ामोशी से वे रक्षात्मक हो जाएँगे और बीच में कूद पड़ेंगे। आपकी ख़ामोशी के ख़ाली स्थान को भरने की हड़बड़ी में वे घबराकर कुछ भी बोलने लगेंगे, जिससे आपको उनके और उनकी कमज़ोरियों के बारे में बहुमूल्य जानकारी मिलेगी। आपसे मिलकर जाने के बाद उन्हें ऐसा लगेगा, जैसे वे लुट गए हों। घर जाकर वे आपके हर शब्द पर गहराई से विचार करेंगे। आपकी संक्षिप्त टिप्पणियों पर जब लोग अतिरिक्त ध्यान देंगे, तो इससे आपकी शक्ति तो बढ़नी ही है।

युवावस्था में चित्रकार एंडी वारहोल को यह समझ में आ गया कि लोगों से बातें करके उनसे अपना मनचाहा काम करवाना असंभव है। बातों से लोग आपके ख़िलाफ़ हो जाएँगे, आपकी इच्छाओं के विपरीत काम करेंगे और अपने दुष्ट स्वभाव की वजह से आपकी अवज्ञा करेंगे। उन्होंने एक मित्र से एक बार कहा था,

पटकथा लेखक माइकल आर्लेन 1944 में न्यूयॉर्क गए। उनके सितारे गर्दिश में चल रहे थे। अपना ग़म ग़लत करने के लिए उन्होंने मशहूर रेस्तराँ "21" में जाने का फ़ैसला किया। वहाँ पर वे लॉबी में सैम गोल्डविन से टकरा गए, जिन्होंने उन्हें रेसहॉर्स ख़रीदने की अव्यावहारिक सलाह दी। बार के अंदर पहुँचने पर आर्लेन की मुलाक़ात लुइस बी. मेयर से हो गई, जो उनके पुराने परिचित थे। लुइस ने आर्लेन से पूछा कि भविष्य के लिए उनकी क्या योजना है। इस पर आर्लेन ने इस तरह से जवाब देना शुरू किया, "मैं अभी सैम गोल्डविन से बात कर रहा था..." मेयर ने बीच में बात काटते हुए

https://freehindipustakalya.blogspot.com

कहा, "उसने तुम्हारे सामने कितने का प्रस्ताव रखा?"

आर्लेन ने असली बात को छिपाते हुए कहा, "मुझे जमा नहीं।" मेयर ने पूछा, "तीस सप्ताह के लिए पंद्रह हजार का प्रस्ताव तो तुम्हें जम जाएगा?" इस बार आर्लेन ने कोई हिचकिचाहट नहीं दिखाई और "हाँ" कह दिया।

द लिटिल ब्राउन बुक ऑफ़ एनेक्डोट्स से, क्लिफ़टन फैडिमैन, संपादक

"मैंने यह सीखा है कि जब आप चुप रहते हैं, तो दरअसल आपके पास ज़्यादा शक्ति होती है।"

बाद के जीवन में वारहोल ने इस तकनीक का इस्तेमाल बहुत अच्छी तरह किया। इंटरव्यू में वे भविष्यवाणी (Oracle) की तरह बहुत संक्षिप्त वाक्य बोलते थे। वे कोई जटिल और रहस्यमयी बात कह देते थे और इंटरव्यू लेने वाला इस उधेड़बुन में रहता था कि इसका न जाने क्या मतलब होगा। वह सोचने लगता था कि वारहोल के अर्थहीन दिख रहे वाक्यों के पीछे कोई गहरी बात छिपी होगी। वारहोल अपनी पेंटिंग्स के बारे में कभी बातें नहीं करते थे। वे इसके विश्लेषण का काम दूसरों पर छोड़ देते थे। वे अपने काम के बारे में जितना कम बोलते थे, दूसरे लोग उसके बारे में उतनी ही ज़्यादा बातें करते थे। और लोग उसके बारे में जितनी ज्यादा बातें करते थे, वारहोल की पेंटिंग्स उतनी ही ज़्यादा महँगी बिकती थीं।

ज़रूरत से कम बोलकर आप अपनी शक्ति का नाटकीय को बहुत ज़्यादा बढ़ा लेते हैं। इसके अलावा, आप जितना कम बोलेंगे, आपके मुँह से कोई मूर्खतापूर्ण या ख़तरनाक बात निकलने का जोखिम भी उतना ही कम होगा। 1825 में निकोलस प्रथम रूस के सिंहासन पर बैठे। उनके सिंहासन पर बैठते ही उनके ख़िलाफ विद्रोह होने लगा। यह विद्रोह उदारवादी कर रहे थे, जो आधुनिकीकरण की माँग कर रह थे। वे चाहते थे कि रूस में यूरोप के बाकी

https://freehindipustakalya.blogspot.com

https://freehindipustakalya.blogspot.com

देशों की तरह उद्योग-धंधे और इमारतें बनें। दिसंबर के विद्रोह के नाम से मशहूर इस विद्रोह का निर्ममता से दमन करते हुए निकोलस प्रथम ने विद्रोही नेता कोंदरेटी रयेलेयेव को मृत्युदंड देने का आदेश दिया। रयेलेयेव को फाँसी दी जाने के तख़्ते पर खड़ा किया गया और उसके गले में रस्सी बाँध दी गई। फिर नीचे से तख़्ता हटा लिया गया। लेकिन रयेलेयेव जैसे ही रस्सी से झूला, रस्सी टूट गई और वह ज़मीन पर गिर गया। उस वक़्त इस तरह की घटनाएँ ईश्वर का इंसाफ़ मानी जाती थीं और जो व्यक्ति मृत्युदंड से इस तरह बचता था, उसे आम तौर पर माफ़ कर दिया जाता था। जब रयेलेयेव अपने पैरों पर खड़ा हुआ, तो उसे चोट तो लगी थी, लेकिन उसे यक़ीन था कि उसकी जान बच गई है, इसलिए वह भीड़ से चिल्लाकर बोला, "तुम लोगों ने देखा, रूस वाले कोई भी काम ठीक तरह से नहीं कर सकते। उन्हें तो रस्सी बनानी भी नहीं आती है!"

एक संदेशवाहक तत्काल यह ख़बर लेकर सम्राट के पास गया कि मृत्युदंड नहीं दिया जा सका। इस निराशाजनक ख़बर से चिंतित होने के बावज़ूद निकोलस प्रथम विद्रोही नेता रयेलेयेव के माफ़ी नामे पर हस्ताक्षर करने लगे। लेकिन तभी उन्होंने संदेशवाहक से पूछा, "क्या इस घटना के बाद रयेलेयेव ने कुछ कहा था?" संदेशवाहक ने जवाब दिया, "उसने कहा था कि रूस वालों को तो रस्सी बनानी भी नहीं

पूर्णिमा के दिन जब चाँद पूरी तरह चमकता है, तो ईस्टर्स पूरी तरह खुल जाते हैं। खुले हुए ईस्टर को देखकर केकड़ा उसमें कोई कंकड़ या तिनका डाल देता है। चूँकि ईस्टर अब दोबारा बंद नहीं हो सकता, इसलिए यह केकड़े का आहार बन जाता है। उस आदमी की क़िस्मत भी ईस्टर की तरह ही होती है, जो अपना मुँह ज़रूरत से ज़्यादा खोलता है और श्रोता की दया पर ज़िंदा रहता है।

लियोनार्डो द विंशी, 1452-1519

https://freehindipustakalya.blogspot.com

आती है।"

सम्राट ने माफ़ीनामे को फाड़ते हुए कहा, "अगर ऐसी बात है, तो हम उसकी बात को गलत साबित करके दिखा देंगे।" अगले दिन रयेलेयेव को दोबारा फांसी के फंदे पर लटकाया गया और इस बार रस्सी नहीं टूटी।

यह सबक़ सीख लें : एक बार बाहर निकल जाने के बाद आप शब्दों को दोबारा नहीं लौटा सकते। उन्हें नियंत्रण में रखें। व्यंग्य के प्रति खास तौर पर सावधान रहें। आपके व्यंग्य-बाणों से आपको क्षणिक संतुष्टि तो मिल सकती है, लेकिन बदले में आपको उनकी बहुत ज़्यादा कीमत चुकानी पड़ती है।

तस्वीर :

डेल्फी की भविष्यवाणी।

जब आगंतुक डेल्फी की भविष्यवाणी सुनने जाते थे, तो पुजारिन कुछ जटिल शब्द बोल देती थी, जो अर्थपूर्ण और महत्वपूर्ण लगते थे। भविष्यवाणी के शब्दों की अवज्ञा कोई नहीं करता था - क्योंकि उनमें जिंदगी और मौत की शक्ति होती थी।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

विशेषज्ञ की राय : अधीनस्थों के बोलने से पहले कभी अपने होंठ न हिलाएँ। मैं जितनी ज़्यादा देर तक चुप रहता हूँ, दूसरे उतनी ही जल्दी बोलने लगते हैं। जब वे बोलते हैं, तो मैं उनके शब्दों से उनके असली इरादे समझ सकता हूँ... अगर सम्राट रहस्यमय न हो, तो मंत्रियों की तो चाँदी ही हो जाएगी। (हान फ़ेई त्सू, चीनी दार्शनिक, तीसरी सदी ईसा पूर्व)

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम

5

प्रतिष्ठा पर बहुत कुछ निर्भर करता है - हर क़ीमत पर इसकी रक्षा करें

विचार

प्रतिष्ठा शक्ति की नींव है। सिर्फ़ प्रतिष्ठा के माध्यम से ही आप दबदबा कायम कर सकते हैं और विजय पा सकते हैं। एक बार भी फिसल जाने पर आप असुरक्षित हो जाएंगे और आप पर सभी दिशाओं से हमला होने लगेगा। ऐसी प्रतिष्ठा बनाएं कि उस पर कोई हमला न कर सके। हमेशा संभावित हमलों के बारे में सचेत रहें और उनके होने से पहले ही उन्हें ख़त्म कर दें। इस दौरान अपने शत्रुओं की प्रतिष्ठा में सेंध लगाकर उन्हें नष्ट करना सीखें। फिर दूर खड़े हो जाएं और जनता को उनकी आलोचना करने दें।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

शक्ति की कुंजी

हमारे चारों तरफ़ के लोग, भले ही वे हमारे सबसे पक्के दोस्त हों, हमेशा कुछ हद तक रहस्यमय और अबूझ रहते हैं। उनके चरित्र में ऐसे ख़ुफ़िया गलियारे होते हैं, जिन्हें वे प्रकट नहीं करते हैं। अगर हम इस बारे में ज़्यादा सोचेंगे, तो हम परेशान हो जाएँगे, क्योंकि जब तक हम उन्हें पूरी तरह से नहीं जानते हैं, तब तक हम उनका मूल्यांकन कैसे कर सकते हैं। इसलिए हम इस तथ्य को नज़रअंदाज़ कर देते हैं और सिर्फ़ दिखावे के आधार पर ही लोगों का मूल्यांकन करते हैं। हमारे मूल्यांकन का आधार वह होता है, जो हमारी आँखों को साफ़ नज़र आता है – कपड़े, मुद्राएँ, शब्द, कार्य। समाज में प्रदर्शन ही हमारे सारे मूल्यांकनों का पैमाना होता है। आप किसी दूसरे तरीक़े से विश्वास उत्पन्न नहीं कर सकते। आपकी एक ग़लती या आपके हुलिये में एक भी अजीब या अकस्मात परिवर्तन विनाशकारी साबित हो सकता है।

इस वजह से यह बेहद महत्वपूर्ण है कि आप ख़ुद अपनी प्रतिष्ठा बनाएँ और उसे बनाए रखें।

यह प्रतिष्ठा दिखावे के ख़तरनाक खेल में आपकी रक्षा करेगी। यह प्रतिष्ठा लोगों की पैनी आँखों को यह पता नहीं चलने देगी कि आप सचमुच कैसे हैं। इससे आप दुनिया से अपनी शर्तों पर अपना मूल्यांकन करवाते हैं – यह स्थिति सचमुच सशक्त है।

जैसा सिसरो ने कहा है, जो लोग शोहरत के ख़िलाफ़ बहस करते हैं, वे भी इसके विरोध में ऐसी किताबें लिखना चाहते हैं, जिनके कवर पर उनका नाम हो। शोहरत का विरोध करते हुए भी वे मशहूर होना चाहते हैं। हर चीज़ का आदान-प्रदान होता है। हम अपने दोस्तों को अपना सामान दे सकते हैं, ज़रूरत पड़ने पर उनके लिए जान भी दे सकते हैं, लेकिन अपनी शोहरत बाँटने के मामले में दूसरों को अपनी प्रतिष्ठा का उपहार देने का उदाहरण मुश्किल से मिलेगा।

मॉन्टेन, 1533-1592

https://freehindibookskalia.blogspot.com

बुरी प्रतिष्ठा के मुकाबले बुरे विवेक का सामना करना आसान होता है।

फ्रेडरिक नीत्शे,

1844 - 1900

शुरुआत में आपको किसी एक विशेष गुण की प्रतिष्ठा बनाने के लिए मेहनत करना चाहिए, चाहे यह उदारता हो या ईमानदारी या चतुरता। वह गुण आपको दूसरों से अलग कर देता है और इसके कारण दूसरे आपके बारे में बातें करने लगते हैं। इसके बाद आप अपनी प्रतिष्ठा का प्रचार ज़्यादा से ज़्यादा लोगों में करें (हालाँकि यह काम बहुत समझदारी से करना चाहिए। धीरे धीरे प्रतिष्ठा बनाएँ और इसकी नींव मज़बूत बनाएँ।) कुछ समय बाद जंगल में लगी आग की तरह तेजी से फैल जाएगी।

ठोस प्रतिष्ठा आपके वज़न को बढ़ाती है और आपकी मेहनत के बिना आपकी शक्तियों को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाती है। यह आपके चारों तरफ़ आभामंडल भी बना सकती है, जिससे लोगों के मन में आपके प्रति सम्मान, यहाँ तक कि भय भी जाग जाए। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान उत्तर अफ्रीकी रेगिस्तान में लड़ते समय जर्मन सेनापति अर्विन रोमल ने चालाकी और धोखेबाज़ी की प्रतिष्ठा बना ली थी, जिससे उनसे लड़ने वाली हर सेना दहशत में आ जाती थी। हालाँकि उनकी सेना मुट्ठी भर बची थी और ब्रिटिश टैंकों की संख्या उनसे पाँच गुना ज़्यादा थी, लेकिन रोमल के आने की ख़बर सुनते ही पूरे के पूरे शहर ख़ाली हो जाते थे।

अपनी प्रतिष्ठा को किसी एक विशेष गुण पर आधारित करें। यह इकलौता गुण - चाहे कार्यकुशलता हो या आकर्षण - विज़िटिंग कार्ड की तरह आपका परिचय देता है और लोगों पर

जादू कर देता है।

प्रतिष्ठा किसी खजाने की तरह कीमती है, इसलिए इसे सावधानीपूर्वक हासिल करें और सुरक्षित रखें। ख़ासकर शुरुआत में आपको दृढ़ता से इसकी रक्षा करनी चाहिए और इस पर होने वाले हमलों का पहले से ही अनुमान लगा लेना चाहिए। ठोस प्रतिष्ठा बनने के बाद अपने शत्रुओं की आलोचनात्मक टिप्पणियों से नाराज़ या रक्षात्मक होने से ऐसा लगेगा कि आपको अपनी प्रतिष्ठा पर भरोसा नहीं है और आप असुरक्षित महसूस कर रहे हैं। इसके बजाय उच्च मार्ग अपनाएँ और कभी अपना बचाव करने की हड़बड़ी न दिखाएँ। दूसरी तरफ, किसी दूसरे की प्रतिष्ठा पर हमला करना बहुत कारगर अस्त्र है, ख़ास तौर पर जब वह आपसे ज़्यादा शक्तिशाली हो। इस तरह के युद्ध में नुकसान उसी का होता है, क्योंकि खोने के लिए उसी के पास ज्यादा होता है। अगर वह आप पर पलटकर हमला करेगा, तो उसके सामने एक छोटा लक्ष्य होगा, क्योंकि आपकी प्रतिष्ठा अभी कम है। लेकिन इस रणनीति का प्रयोग बहुत सूझ-बूझ से करना चाहिए। यह नहीं लगना चाहिए कि आप ओछे प्रतिशोध में उलझ रहे हैं। अगर आप चतुराई से अपने दुश्मन की प्रतिष्ठा को धूमिल नहीं कर पाए, तो अनजाने में ही आप अपनी प्रतिष्ठा को धूमिल कर लेंगे।

कभी भी किसी पर हमला करते समय ज़्यादा दूर तक न जाएँ क्योंकि इससे लोग

https://freehindipustakalya.blogspot.com

https://freehindipustakalya.blogspot.com

उसकी ग़लतियों पर कम और आपके प्रतिशोध पर ज़्यादा ध्यान देने लगेंगे। अगर आपकी प्रतिष्ठा ठोस बन चुकी हो, तो अपने विरोधी को कमज़ोर करने के लिए अधिक सूक्ष्म रणनीतियों का प्रयोग करें, जैसे व्यंग्य या मखौल, इससे लोग आपको मज़ेदार मसखरा मानने लगेंगे। शक्तिशाली शेर अपने रास्ते में आने वाले चूहे के साथ मज़े लेता है - अगर वह कोई दूसरी प्रतिक्रिया करने लगे, तो उसकी भयावह प्रतिष्ठा ही ख़त्म हो जाएगी।

तस्वीर :
हीरों और
माणिकों से भरी
खान। आपने इस खान
को खोजा खुदाई की थी और
अब आपकी दौलत सुनिश्चित है।
इसकी रक्षा अपने प्राणों से ज़्यादा करें।
हर दिशा से डकैत और चोर इसे लूटने के
लिए आएँगे। अपनी दौलत के बारे में
असावधान न रहें और लगातार इसे चमकाते
रहें-समय जवाहरातों की चमक फीकी कर देगा
और उन्हें ओझल करके दफ़न कर देगा।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

विशेषज्ञ की राय : इसलिए मैं यह चाहूंगा कि हमारा दरबारी चतुराई और निपुणता से अपने आंतरिक मूल्य को बढ़ाए और वह सुनिश्चित करे कि जब वह नए अनजान देशों में जाए, तो उसकी अच्छी प्रतिष्ठा उससे पहले ही वहाँ पहुँच जाए... बहुमत की राय पर आधारित शोहरत बहुत महत्वपूर्ण होती है। इससे व्यक्ति में विश्वास जागता है। साधारण लोग बड़ी आसानी से ऐसे व्यक्ति पर विश्वास कर लेते हैं, क्योंकि उनके लिए बहुमत की राय महत्वपूर्ण होती है। (वाल्डेसेर कास्टिग्लिओन, 1478 -1529)

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम
6

हर क़ीमत पर सबका ध्यान आकर्षित करें

विचार

हर चीज़ का मूल्यांकन दिखने के आधार पर किया जाता है। जो नज़र नहीं आता है, उसका कोई मूल्य ही नहीं होता है। इसलिए भीड़ का हिस्सा न बनें और गुमनामी में दफ़न होकर न रहें। सबसे अलग हटकर दिखें। हर क़ीमत पर लोगों की नजरों में रहें। नीरस और भीरु जनता से ज़्यादा महान, ज़्यादा दिलचस्प और ज़्यादा रहस्यमय दिखकर ऐसा चुंबक बन जाएँ, जो सबका ध्यान अपनी तरफ़ खींचे।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

शक्ति की कुंजी

अपने आस-पास के लोगों से ज़्यादा चमकदार दिखना एक ऐसी कला है, जो जन्मजात नहीं होती है। आपको लोगों का ध्यान आकर्षित करना सीखना पड़ता है। अपने कैरियर की शुरुआत में ही आपको अपना नाम और प्रतिष्ठा किसी एक गुण या छवि से जोड़ लेना चाहिए, ताकि आप दूसरे लोगों से अलग नज़र आ सकें। यह छवि कुछ भी हो सकती है, जैसे कपड़ों की विशेष शैली या व्यक्तित्व की कोई अनूठी बात, जिससे लोगों की रुचि जागे और वे आपके बारे में बातें करें। एक बार जब आपकी प्रतिष्ठा स्थापित हो जाती है, तो आपके पास एक दिखावे का आसमान तैयार हो जाता है, जिसमें आपका ही सितारा जगमगाता रहता है।

यह सोचना ग़लत है कि आपका यह अनुठा रूप विवादास्पद नहीं होना चाहिए या लोगों की आलोचना बुरी बात है। सच्चाई इसके बिलकुल विपरीत है। आलोचना से बचने की कोशिश न करें। किसी दूसरे को अपने से ज़्यादा कुख्यात न बनने दें। आपको इस बात की परवाह नहीं होना चाहिए कि आपकी तरफ़ ध्यान क्यों दे रहे हैं। लोगों का ध्यान चाहे जिस कारण से आपकी ओर आकर्षित हो रहा हो, आपको फ़ायदा ही होता है।

लुई चौदहवें के दरबार में बहुत से योग्य लेखक, कलाकार, सुंदरियाँ और चरित्रवान स्त्री-पुरुष थे। लेकिन ड्यूक डक ले लॉज़न के

ततैया और राजकुमार

पिनटेल नाम का एक ततैया था। वह लंबे समय से कोई ऐसा काम करना चाहता था, जो उसे हमेशा के लिए मशहूर कर दे। इसलिए एक दिन वह राजमहल में घुसा और उसने बिस्तर पर सो रहे नन्हे राजकुमार को काट लिया। दर्द के मारे राजकुमार जाग गया और ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा। राजा और दरबारी भागकर यह देखने अंदर आए कि क्या हुआ था। राजकुमार लगातार रो रहा था, क्योंकि ततैया उसे बार-बार काट रहा था। दरबारियों ने ततैये को पकड़ने की कोशिश की, लेकिन उसने उन्हें भी काट लिया। पूरा राजमहल वहाँ इकट्ठा हो गया। यह ख़बर आग की

https://freehindipustakalya.blogspot.com

तरह फैल गई और लोग झुंड बनाकर महल की तरफ़ आने लगे। पूरे शहर में हल्ला मच गया और सारा कामकाज ठप्प हो गया। ततैये ने अपनी कोशिशों के कारण मरने से पहले सोचा, "जो नाम मशहूर नहीं है, वह बिना लपटों वाली आग की तरह है। हमेशा लोगों का ध्यान आकर्षित करना चाहिए, चाहे उसकी कोई भी क़ीमत क्यों न चुकानी पड़े।"

भारतीय दंतकथा

बारे में जितनी बातें होती थीं, उतनी किसी और के बारे में नहीं होती थीं। ड्यूक नाटे थे और बहुत ही बदतमीज़ी का व्यवहार करते थे। वे राजा की प्रेमिकाओं के साथ सोते थे और खुलेआम न सिर्फ़ दूसरे दरबारियों के साथ बदतमीज़ी करते थे, बल्कि सम्राट का भी अपमान करते रहते थे। बहरहाल, लुई को ड्यूक का अनूठापन इतना मोहक लगता था कि वे दरबार में उनकी अनुपस्थिति बर्दाश्त नहीं कर पाते थे। इसका कारण स्पष्ट है : ड्यूक के चरित्र की विचित्रता सबका ध्यान आकर्षित करती थी। उनसे मंत्रमुग्ध होने के बाद लोग हर क़ीमत पर उन्हें अपने आस-पास रखना चाहते थे।

समाज हमेशा ऐसे लोगों को पसंद करता है, जो औसत लोगों से बड़े या अलग हों। इसलिए ऐसे गुण विकसित करें, जिनके कारण आप दूसरों से अलग दिखें और आपके प्रति लोगों का ध्यान आकर्षित हो। इसलिए विवाद को गले लगाएँ, यहाँ तक कि स्कैंडल को भी। लोग आपको नज़रअंदाज़ करें, इससे तो बेहतर है कि वे आपकी आलोचना करें। कम से कम आप चर्चा में तो रहेंगे।

सवाल यह है कि अगर आप किसी छोटे पद पर हैं, जहाँ आपके पास दूसरों का ध्यान आकर्षित करने के बहुत कम अवसर हैं, तब क्या करें ? इस स्थिति में कारगर तरीक़ा यह है कि अपने आस-पास के सबसे मशहूर और शक्तिशाली व्यक्ति पर हमला कर दें। जब सोलहवीं सदी का युवा रोमन दास पियेत्रो

https://freehindipustakalya.blogspot.com

अरेटिनो कवि के रूप में मशहूर होना चाहता था, तो उसने पालतू हाथी के प्रति पोप के प्रेम का मखौल उड़ाते हुए कई व्यंग्य कविताएँ लिखीं। इस हमले से अरेटिनो तत्काल लोगों की नज़रों में चढ़ गया। किसी ऊँचे पद पर बैठे व्यक्ति की आलोचना करने का भी यही प्रभाव होता है। बहरहाल इतना याद रखें कि जनता का ध्यान आकर्षित होने के बाद इस रणनीति का प्रयोग कभी-कभार ही करें, क्योंकि बार-बार ऐसा करने पर लोग इसे गंभीरता से नहीं लेंगे।

एक बार लोगों की नज़रों में चढ़ने के बाद आपको उनका ध्यान आकर्षित करने के नए-नए तरीक़े खोजने चाहिए। अगर आप ऐसा नहीं करेंगे, तो लोग-बाग़ आपसे ऊब जाएँगे, आपकी तरफ़ ज़्यादा ध्यान नहीं देंगे और किसी नए सितारे की तरफ़ आकर्षित हो जाएँगे। इस खेल में निरंतर सावधानी और रचनात्मकता की ज़रूरत होती है। पाब्लो पिकासो ने खुद को कभी पृष्ठभूमि में ग़ुम नहीं होने दिया। वे हमेशा जान-बूझकर जनता के सामने पेंटिंग्स की एक नई श्रृंखला रख देते थे, जो सबकी अपेक्षाओं के विपरीत होती थी। वे यह मानते थे कि लोग उनकी पेंटिंग की शैली से ज़्यादा परिचित हों, इससे पहले ही कुछ बुरी और विचलित करने वाली पेंटिंग्स बनाकर उन्हें हैरान कर देना चाहिए। यह अच्छी तरह से समझ लें लोग खुद को उस व्यक्ति से श्रेष्ठ मानते हैं, जिसके काम के बारे में वे पहले से भविष्यवाणी कर सकते हैं। अगर आप उनकी अपेक्षाओं के

जब मेरी आलोचना होती है, तब भी मैं मशहूर तो होता ही हूँ।

पियेत्रो अरेटिनो, 1492–1556

https://freehindipustakalya.blogspot.com

विपरीत जाकर उन्हें यह बता देते हैं कि नियंत्रण की बागडोर आपके हाथ में है, तो आपको उनका सम्मान भी मिलेगा और आप लंबे समय तक उनका ध्यान भी आकर्षित कर पाएँगे।

तस्वीर :

लाइमलाइट। जो अभिनेता इस चमकदार रोशनी में क़दम रखता है, उसकी उपस्थिति ज़्यादा प्रबल हो जाती है। सबकी आँखें उसी पर टिकी रहती हैं। लाइमलाइट के सँकरे दायरे में एक बार में सिर्फ एक अभिनेता के खड़े होने की ही जगह होती है। खुद को लाइमलाइट में रखने की पूरी कोशिश करें। अपने कार्यों को बहुत बड़ा, दिलचस्प और विवादास्पद बनाएं, ताकि रोशनी हमेशा आप पर ही रहे और बाकी सब अभिनेता अँधेरे में रहें।

विशेषज्ञ की राय : स्वयं को प्रदर्शित करें और सबकी नज़रों के सामने रहें... जो दिखता नहीं है, एक तरह से उसका अस्तित्व ही नहीं होता है... रोशनी के कारण ही दुनिया दिखाई देती है। प्रदर्शन से कई खाली स्थान भरते हैं, कई कमियाँ ढकती हैं और नया जीवन मिलता है, खासकर तब जब इसके पीछे सच्ची योग्यता होती है। (बाल्तेसर ग्रेशियन. 1601-1658)

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम

7

काम दूसरों से करवाएँ, लेकिन श्रेय खुद लें

विचार

अपने लक्ष्यों तक पहुँचने के लिए दूसरों की समझदारी, ज्ञान और मेहनत का इस्तेमाल करें। इस तरह से आप न सिर्फ अपना बहुमूल्य समय और ऊर्जा बचाएँगे, बल्कि इससे यह छवि भी बनेगी कि आप बहुत कार्यकुशल और तीव्र हैं। लोग आपको याद रखेंगे और आपके सहायक गुमनामी के अंधेरे में खोकर रह जाएंगे। दूसरों से जो काम करवा सकते हों, उसे खुद कभी न करें।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

अंधी मुर्गी

एक मुर्गी की आँखों की रोशनी चली गई थी। अंधी होने के बावज़ूद वह बहुत मेहनत से भोजन की तलाश में ज़मीन खोदती रहती थी। इस मेहनती मूर्ख को क्या फायदा होना था? दूसरी तेज़ आँख वाली मुर्गी अपने कोमल पैरों की शक्ति को बचाकर रखती थी। वह हमेशा अंधी मुर्गी के पास ही रहती थी और उसकी मेहनत का फल चखती रहती थी। जब भी अंधी मुर्गी अनाज का दाना खोदकर निकालती थी, तो उसकी तेज़ आँख वाली सहेली उस दाने को खा जाती थी।

फ़ेबल्स गॉटहोल्ड लेसिंग,

1729-1781

शक्ति की कुंजी

ताकत की दुनिया जंगल की दुनिया की तरह है: कुछ जानवर खुद शिकार करके जीते हैं, जबकि ज़्यादातर जानवर (गीदड़, गिद्ध) दूसरों के शिकार पर जीते हैं। बाद वाली श्रेणी के जानवरों में कल्पनाशीलता कम होती है और वे अक्सर शक्ति की ज़रूरत वाले काम को नहीं कर सकते हैं। वे जल्दी ही यह बात समझ लेते हैं कि अगर वे इंतजार करेंगे, तो उन्हें कोई न कोई ऐसा जानवर मिल जाएगा, जो उनके लिए शिकार कर देगा। नादान न बनें : इस समय जब आप किसी गधे की तरह काम कर रहे हैं, तो आपके ऊपर भी गिद्ध मँडरा रहे हैं और आपकी रचनात्मकता से फायदा उठाने का तरीक़ा सोच रहे हैं। इसके बारे में शिकायत करना या आगबबूला होना बेकार है। बेहतर यह है कि आप ख़ुद की रक्षा करें और इस खेल को निपुणता से खेलें। शक्ति का आधार स्थापित करने के बाद आप गिद्ध बन जाएँ। इस नीति पर चलने से बहुत सा समय और मेहनत बच जाएगी।

कलाकार पीटर पॉल रयूबेन्स के कैरियर के उत्तरार्द्ध में उनकी पेंटिंग्स की माँग बहुत बढ़ गई। उन्होंने एक सिस्टम बना लिया : वे अपने बड़े स्टूडियो में दर्जनों अच्छे पेंटर्स को नौकरी पर रखते थे। उनमें से एक कपड़े बनाने में माहिर था, तो दूसरा पृष्ठभूमि बनाने में और इसी तरह बाक़ी क्षेत्रों के विशेषज्ञ भी थे। उनके इस स्टूडियो में एक साथ बहुत से चित्रों पर

https://freehindipustakalya.blogspot.com

काम चलता था। जब कोई महत्वपूर्ण ग्राहक स्टूडियो देखने आता था, तो र्‌यूबेन्स उस दिन नौकरी पर रखे पेंटर्स को भगा देते थे। जब ग्राहक बालकनी से देखता था, तो उसे र्‌यूबेन्स अविश्वसनीय तेज़ी और ऊर्जा से कई पेंटिंग्स पर एक साथ काम करते दिखाई देते थे। ग्राहक हैरान रह जाता था कि यह व्यक्ति कितना असाधारण है, जो इतने कम समय में इतने सारे मास्टरपीस पेंट कर सकता है।

यही इस नियम का सार है : काम दूसरों से करवाना सीखें और श्रेय खुद लें, ताकि लोगों को यह लगे कि आपमें अनूठी शक्ति है। अगर आप हर काम खुद करना चाहेंगे, तो आपकी ऊर्जा ख़ामख्वाह बर्बाद होगी और आप थकान के मारे निढाल हो जाएँगे। ऐसे लोगों को ढूँढ़ें, जिनमें वे योग्यताएँ और रचनात्मकता हो, जिनकी आपमें कमी हो। या तो उन्हें नौकरी पर रख लें और उनके काम पर अपने नाम का लेबल लगाना शुरू कर दें या फिर उनके काम पर अपना नाम चिपकाने का कोई और तरीक़ा खोजें। इस तरह से उनकी रचनात्मकता लोगों के सामने आपकी रचनात्मकता बन जाती है और आप जीनियस नज़र आने लगते हैं।

इस नियम का इस्तेमाल आप एक और तरीक़े से भी कर सकते हैं। इसमें आपको परजीवी की तरह अपने समकालीनों की मेहनत का फ़ायदा उठाने की ज़रूरत नहीं होती। इस तरीक़े का सार यह है कि ज्ञान और बुद्धि के वृहद कोण यानी अतीत का इस्तेमाल करें।

अगर कोई शिकारी घोड़ागाड़ी पर सवार होकर छह घोड़ों के पैरों का इस्तेमाल करता है और वैंग लियांग को उनकी बागडोर थामने देता है, तो वह बिना थके तेज़ जानवरों से आगे निकल जाएगा। अब यह मान लें कि वह घोड़ागाड़ी के लाभ को छोड़ दे, घोड़ों के उपयोगी पैरों तथा वैंग लियांग की निपुणता का इस्तेमाल न करे और पैदल ही जानवरों के पीछे भागने लगे, तो उसके पैर भले ही लिऊ ची जितने तेज़ हों, लेकिन वह जानवरों से आगे नहीं निकल पाएगा। सच तो यह है कि अच्छे घोड़े और मजबूत घोड़ागाड़ी का इस्तेमाल करके साधारण से साधारण आदमी भी

जानवरों को पकड़ सकता है।

हैन फ़ेई त्सु,

चीनी दार्शनिक, तीसरी सदी ई. पू.

https://freehindipustakalya.blogspot.com

आइसैक न्यूटन ने इसे "कद्दावर लोगों के कंधों पर खड़े होने" की संज्ञा दी थी। उनका मतलब यह था कि अपनी खोज करते समय उन्होंने अतीत के लोगों की सफलताओं का सहारा लिया था। न्यूटन ने प्राचीन, मध्ययुगीन रेनेसां युग के वैज्ञानिकों के ज्ञान का भरपूर लाभ उठाया था और वह यह बात जानते थे। शेक्सपियर ने दूसरों की कहानियों पर नाटक लिखे। उन्होंने प्लूटार्क से कथानक, चरित्र-चित्रण, यहाँ तक कि संवाद भी चुरा लिए, क्योंकि वे जानते थे कि सूक्ष्म मनोविज्ञान को समझने और चुटीले संवाद लिखने में प्लूटार्क का कोई सानी नहीं था। बाद के कितने सारे लेखकों ने शेक्सपियर से सीखा या चुराया है?

चाहे वे रणनीति के प्राचीन महारथी हों, मानवीय मूर्खता के इतिहासकार हों या मानवीय चरित्र की गहराइयों में डूबे लेखक हों सभी का ज्ञान धूल खा रहा है। यह ज्ञान इंतज़ार कर रहा है कि आप आएँ और उनके कंधों पर खड़े हो जाएँ। उनका वाक-कौशल आपका वाक-कौशल बन सकता है, उनकी निपुणता आपकी निपुणता बन सकती है और वे सभी कब्र से उठकर कभी लोगों को यह बताने नहीं आएँगे कि आपने उनका ज्ञान चुराया है। आपके पास दो रास्ते हैं : या तो मौलिक काम करने की कोशिश में ज़िंदगी भर मेहनत करें, लगातार ग़लतियाँ करें, अपना समय और ऊर्जा बरबाद करें। या फिर अतीत की सेनाओं का इस्तेमाल करके किला फ़तह कर लें। जैसा बिस्मार्क ने एक बार कहा

https://freehindipustakalya.blogspot.com

था, "मूर्ख कहते हैं कि वे अपने अनुभव से सीखते हैं। मैं दूसरों के अनुभव से लाभ उठाना पसंद करता हूँ।"

तस्वीर : गिद्ध। जंगल के सभी जीवों में उसका काम सबसे आसान होता है। दूसरों की कड़ी मेहनत से उसका काम आसान बन जाता है। उनके मरने से उसे भोजन मिलता है। गिद्ध पर निगाह जमाए रखें - जब दूसरे कड़ी मेहनत करते हैं, तो वह उनके ऊपर मँडराता रहता है। उसे बुरा न मानें, बल्कि उसके साथ जुड़ जाएँ।

विशेषज्ञ की राय : इस छोटे से जीवन में सीखने को बहुत कुछ है और ज्ञान के बिना ज़िंदगी अर्थहीन है। इसलिए सबसे ज्ञान हासिल करना एक उत्कृष्ट तकनीक है। दूसरों की जीतोड़ मेहनत के बल पर आप महानता की प्रतिष्ठा हासिल करना सीखें। (बाल्तेसर ग्रेशियन, 1601-1658)

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम

8

दूसरों को अपने पास बुलाएँ - ज़रूरत पड़ने पर दाना भी डालें

विचार

जब आप दूसरे व्यक्ति को कोई काम करने के लिए मजबूर करते हैं, तो नियंत्रण आपके हाथ में होता है। हमेशा ज़्यादा अच्छा यही होता है कि आपका विरोधी आपके पास आए और इस प्रक्रिया में अपनी योजनाएँ छोड़ दे। बहुत बड़ा प्रलोभन देकर उसे ललचाएँ - फिर उस पर हमला कर दें। तुरुप के सारे पत्ते आपके हाथ में होते हैं।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

शक्ति की कुंजी

यह नाटक इतिहास में बहुत बार खेला गया है: कोई आक्रामक लीडर बहुत से साहसिक क़दम उठाता है, जिससे वह बहुत शक्तिशाली बन जाता है। कुछ समय बाद वह शक्ति के शिखर पर पहुँच जाता है। लेकिन इसके कुछ समय बाद ही हर चीज़ उसके ख़िलाफ़ होने लगती है। उसके असंख्य दुश्मन आपस में गठबंधन कर लेते हैं। अपनी शक्ति को बनाए रखने की कोशिश में वह हर दिशा में लड़ता है, जिससे वह थक जाता है और अंततः उसका पतन हो जाता है। ऐसा होने का कारण यह है कि यह आक्रामक व्यक्ति कभी भी पूरे नियंत्रण में नहीं होता है। वह दो-चार क़दमों से ज़्यादा आगे तक नहीं देख पाता है। वह अपने साहसिक कार्यों के परिणामों को नहीं देख पाता है। चूँकि उसे हमेशा अपने शत्रुओं के क़दमों और अपने जल्दबाज़ी के कामों पर प्रतिक्रिया करनी पड़ती है, इसलिए उसकी आक्रामक ऊर्जा ही उसकी दुश्मन बन जाती है।

जब मैं हिरण के लिए दाना डालता हूँ, तो मैं दाना सूँघने आने वाले पहले हिरण को गोली नहीं मारता हूँ, बल्कि तब तक इंतज़ार करता हूँ, जब तक कि पूरा का पूरा झुंड वहाँ नहीं आ जाता।

ओटो वॉन बिस्मार्क, 1815–1898

शक्ति के संसार में आपको खुद से पूछना चाहिए, अगर नियंत्रण मेरे हाथ में नहीं है, तो यहाँ से वहाँ भागने, समस्याएँ सुलझाने और शत्रुओं को हराने की कोशिश करने का क्या फ़ायदा है? मैं घटनाओं को नियंत्रित करने के बजाय उन पर प्रतिक्रिया करने में ही क्यों उलझा रहता हूँ? जवाब आसान है: शक्ति की आपकी परिभाषा ही ग़लत है। आपने ग़लती से आक्रामक काम को ही प्रभावी काम मान लिया

https://freehindipustakalya.blogspot.com

है। अक्सर सबसे प्रभावी काम होता है पीछे बने रहना, शांत बने रहना और दूसरों को अपने बिछाए जाल में फँसाना। तत्काल विजय पाने के बजाय दीर्घकालीन शक्ति का खेल खेलना ज़्यादा असरदार होता है।

याद रखें : शक्ति का मूल आधार है पहल करने की योग्यता, अपने कार्यों पर दूसरों से प्रतिक्रिया करवाना, अपने विरोधियों और अपने आस-पास के लोगों को रक्षात्मक होने पर मजबूर करना। जब आपकी रणनीति के कारण दूसरे लोग आपके पास आने लगते हैं, तो अचानक स्थिति का नियंत्रण आपके हाथ में आ जाता है। और जिसके पास नियंत्रण होता है, उसी के पास शक्ति होती है। इस स्थिति तक पहुँचने के लिए आपके पास दो चीज़ें होनी चाहिए : आपको अपनी भावनाओं पर क़ाबू रखना सीखना चाहिए और कभी नाराज़ नहीं होना चाहिए। आपको लोगों की स्वाभाविक प्रवृत्ति का लाभ उठाना चाहिए, जिन्हें जब उकसाया या प्रलोभन दिया जाता है, तो वे भड़क जाते हैं। दूसरों को अपने पास आने के लिए मजबूर करने की योग्यता दीर्घकालीन रणनीति के लिहाज़ से आपका सबसे शक्तिशाली अस्त्र है।

जब विरोधी मजबूर होकर आपके पास आएगा, तो इसका एक लाभ यह भी होगा कि वह आपके इलाक़े में होगा। शत्रु के क्षेत्र में आने की वजह से वह घबरा रहा होगा, इसलिए वह अक्सर हड़बड़ी में काम करेगा और उससे

गलतियाँ होंगी। समझदारी इसी में होती है कि बातचीत या बैठकों में दूसरे व्यक्ति आपके इलाक़े में या कम से कम आपकी पसंद के इलाक़े में आएँ। इस तरह से आप जाने-पहचाने माहौल में होते हैं, जबकि सामने वाला अनजान माहौल में होता है और उसे मजबूरन रक्षात्मक बनना पड़ता है।

स्वार्थ-साधन एक ख़तरनाक खेल है। जब किसी को यह शक हो जाए कि उससे मतलब निकलवाया जा रहा है, तो उसे नियंत्रित करना ज़्यादा मुश्किल हो जाता है। लेकिन जब आप अपने विरोधी को अपने पास आने के लिए मजबूर करते हैं, तो उसे यह भ्रम हो जाता है कि स्थिति को वही नियंत्रित कर रहा है।

उन्नीसवीं सदी के मशहूर निवेशक डेनियल ड्रू शेयर बाज़ार के मंजे हुए खिलाड़ी थे। जब वे यह चाहते थे कि बाक़ी लोग किसी ख़ास कंपनी के शेयर को ख़रीदें या बेचें और उसके भाव को ऊपर या नीचे धकेलें, तो वे कभी सीधी नीति का इस्तेमाल नहीं करते थे। वे चालाकी से काम लेते थे। उनकी एक चाल यह थी कि वे वॉल स्ट्रीट के रास्ते में पड़ने वाले एक क्लब में जाकर कहते थे कि उन्हें जल्दी ही स्टॉक एक्सचेंज पहुँचना है। फिर वे अपना पसीना पोंछने के लिए लाल रूमाल निकालते थे। इस रूमाल से एक काग़ज़ गिरता था, लेकिन वे उसके गिरने पर ध्यान नहीं देते थे। क्लब के सदस्य हमेशा ड्रू के क़दमों को भाँपने की कोशिश करते थे, इसलिए उनके जाने के

https://freehindipustakalya.blogspot.com

https://freehindipustakalya.blogspot.com

बाद वे लपककर उस काग़ज़ को उठा लेते थे। उस काग़ज़ में किसी कंपनी के शेयर के बारे में गोपनीय जानकारी लिखी रहती थी। बात फैल जाती थी और सदस्य उस जानकारी के आधार पर धड़ाधड़ वह शेयर ख़रीदने-बेचने लगते थे और इस तरह ड्रू के हाथों का खिलौना बन जाते थे।

हर चीज़ इस बात पर निर्भर करती है कि आप जो दाना डाल रहे हैं, वह कितना मीठा है। अगर आपका जाल आकर्षक है, तो आपके दुश्मनों की इच्छाओं और भावनाओं की उलझन उन्हें सच्चाई नहीं देखने देगी। उनका लोभ जितना बढ़ेगा, उन्हें उतना ही घुमाया जा सकता है।

तस्वीर : शहद लगा भालू का फंदा। भालुओं का शिकारी अपने शिकार के पीछे दौड़ नहीं लगाता है। अगर भालू को यह पता चल जाए कि उसका पीछा किया जा रहा है, तो उसे पकड़ना लगभग असंभव होता है। और मान लीजिए, अगर किसी ने उसे पकड़ भी लिया, तो वह हिंसक हो जाएगा। इसलिए शिकारी भालू का पीछा नहीं करता है। इसके बजाय वह फंदे में शहद लगा देता है। वह भालू का पीछा करके ख़ुद को थकाता नहीं है। वह भालू के पीछे भागकर अपनी जान जोखिम में नहीं डालता है। वह तो बस फंदा तैयार कर देता है और फिर इंतज़ार करता है।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

विशेषज्ञ की राय : अच्छे योद्धा कभी दूसरों के पास नहीं जाते हैं, बल्कि दूसरों को अपने पास आने के लिए मजबूर कर देते हैं। यह दूसरों के ख़ालीपन और खुद के भरे होने का सिद्धांत है। जब आप अपने विरोधियों को अपने पास आने के लिए प्रेरित करते हैं, तो उनकी शक्ति हमेशा ख़ाली होती है। जब तक आप उनके पास नहीं जाते, तब तक आपकी शक्ति हमेशा भरी होती है। ख़ालीपन पर हमला करना अंडे पर पत्थर मारने की तरह है। (झँग यु. द आर्ट ऑफ़ वॉर पर 11वीं सदी के टिप्पणीकार)

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम

9

बहस से नहीं, अपने कामों से जीतें

विचार

बहस से मिलने वाली क्षणिक विजय दरअसल खोखली होती है। इससे सामने वाले के विचार नहीं बदलते हैं। इसके बजाय उसके मन में द्वेश और दुर्भावना उत्पन्न होती है, जो काफ़ी समय तक़ कायम रहती है। कुछ बोले बिना अपने कार्यों से दूसरों को प्रभावित करना बहुत ज़्यादा असरदार होता है। बोलें नहीं, बल्कि काम करके दिखा दें।

शक्ति की कुंजी

शक्ति के क्षेत्र में आपको अपने क़दमों का मूल्यांकन इस बात से करना चाहिए कि दूसरों पर उनका दीर्घकालीन प्रभाव कैसा पड़ रहा है। बहस करके अपनी बात मनवाने या जीतने की कोशिश करने में दिक्क़त यह होती है कि आप यक़ीन से कभी भी यह नहीं कह सकते हैं कि सामने वाले पर इसका क्या प्रभाव पड़ा है : हो सकता है वह आपसे सहमत तो दिख रहा हो, लेकिन अंदर ही अंदर आपसे द्वेश कर रहा हो। या फिर शायद आपने अनजाने में कोई ऐसी बात कह दी हो, जो बुरी लग गई हो। ध्यान रहे कि सामने वाला अपने मूड और असुरक्षा के आधार पर आपके कहे शब्दों का मतलब निकालता है। अच्छे से अच्छे तर्क की भी कोई ठोस नींव नहीं होती है, क्योंकि हम सब शब्दों की छलावे भरी प्रकृति से वाक़िफ़ होने के कारण उन पर अविश्वास करते हैं। किसी के साथ बहस करने के कुछ ही दिन बाद हम सिर्फ़ आदत की वजह से अपने पुराने विचारों पर वापस लौट आते हैं।

इस बात को समझ लें : शब्द चवन्नी के सौ मिलते हैं। हर कोई जानता है कि बहस करने के आवेश में हम अपनी बात के समर्थन में कुछ भी कह सकते हैं। हम बाइबल का हवाला दे सकते हैं या ऐसे आँकड़ों का ज़िक्र कर सकते हैं, जिनकी पुष्टि नहीं की जा सकती। इस तरह की हवाबाज़ी से कौन हम पर विश्वास कर सकता है? कार्य इससे कहीं ज़्यादा शक्तिशाली और अर्थपूर्ण होते हैं। वे

अमैसिस के कार्य

जब एप्रीयस को गद्दी से उतार दिया गया, तो अमैसिस सिंहासन पर बैठा। वह सईस जिले का था और सिअफ क़स्बे का निवासी था। पहले तो मिस्र के नागरिक उसका सम्मान नहीं करते थे, क्योंकि वह ग़रीब घर से आया था और उसने अपना कैरियर बहुत निचले स्तर से शुरू किया था। मिस्र के नागरिकों का सम्मान पाने के लिए उसने सख़्त क़दम नहीं उठाए, बल्कि चतुराई से उन्हें अपने पक्ष में कर लिया। उसकी बहुत सी संपत्तियों में से एक था पैर धोने का वह स्वर्ण पात्र, जिसमें वह और उसके अतिथि ख़ास अवसरों पर अपने पैर धोते थे। उसने इसे तुड़वाकर इससे एक देवता की

https://freehindipustakalaya.blogspot.com

सोने की मूर्ति बनवाई और उसे शहर की सबसे अच्छी जगह पर लगा दिया। मिस्र के नागरिक मूर्ति का सम्मान करने लगे। जैसे ही अमैसिस ने यह सुना, उसने एक सभा आयोजित की। सभा में उसने यह बताया कि यह सम्मानित मूर्ति कभी उसके पैर धोने का पात्र थी, जिसमें लोग अपने पैर धोते थे, कुल्ला करते थे और गंदगी साफ करते थे। उसने कहा कि उसका हाल भी मूर्ति की तरह ही है, क्योंकि वह भी कभी एक साधारण व्यक्ति था और अब सम्राट बन गया है। उसने कहा कि अच्छा यही रहेगा कि जिस तरह लोग पैर धोने के पात्र का सम्मान करने लगे हैं, उसी

https://freehindipustak.blogspot.com

हमारी आंखों के सामने होते हैं और हम उन्हें देख सकते हैं। कार्यों में चुभने वाले शब्द नहीं होते हैं और ग़लत निष्कर्ष की कोई संभावना भी नहीं होती है। सामने दिखाई देने वाले सबूत के साथ कोई भी बहस नहीं कर सकता। जैसा बाल्तेसर ग्रेशियन कहते हैं, "सत्य आम तौर पर सुनाई नहीं, दिखाई देता है।"

सर क्रिस्टोफ़र रेन इंग्लैंड के पुनर्जागरण काल में इस बात के जीते-जागते उदाहरण थे। उन्होंने गणित, खगोल शास्त्र, भौतिक शास्त्र और जीव-विज्ञान में महारत हासिल कर ली थी। वे इंग्लैंड के सबसे मशहूर वास्तुविद थे। इस क्षेत्र में उनके लंबे कैरियर में उनके ग्राहकों ने उन्हें डिज़ाइन बदलने के बारे में बहुत में अव्यावहारिक सुझाव दिए। उन्होंने कभी ग्राहकों से बहस नहीं की या चुभने वाले शब्द नहीं कहे। उनके पास अपनी बात साबित करने के दूसरे तरीके थे।

1688 में रेन ने वेस्टमिंस्टर शहर के लिए एक शानदार टाउन हॉल डिज़ाइन किया, लेकिन मेयर उससे संतुष्ट नहीं था। उसने रेन से कहा कि दूसरी मंज़िल सुरक्षित नहीं है और यह पहली मंज़िल पर बने उसके ऑफ़िस पर कभी भी गिर सकती है। उसने रेन से कहा कि वह अतिरिक्त सहारे के लिए पत्थर के दो खंभे और लगा दे। रेन बहुत ही कुशल इंजीनियर थे। वे अच्छी तरह जानते थे कि खंभे लगाने का कोई मतलब नहीं है और मेयर का डर निराधार था। लेकिन उन्होंने खंभे लगा दिए,

जिससे मेयर बहुत खुश हो गया। कुछ साल बाद जब कुछ मज़दूर साफ़-सफ़ाई करने के लिए ऊँची नसेनी पर चढ़े, तब जाकर पता चला कि खंभे छत को सहारा नहीं दे रहे थे, बल्कि उससे थोड़ी दूर पर ही ख़त्म हो गए थे। खंभे सिर्फ़ दिखने के लिए लगाए गए थे। लेकिन इससे दोनों ही लोगों को वह मिल गया, जो वे चाहते थे। मेयर को तसल्ली हो गई और रेन जानते थे कि भावी पीढ़ियाँ समझ लेंगी कि उनकी मूल डिज़ाइन सही थी और खंभों की ज़रूरत नहीं थी।

काम के माध्यम से अपने विचार प्रकट करने से आपके विरोधी रक्षात्मक नहीं होते हैं, इसलिए वे आसानी से आपकी बात मान जाते हैं। बहस के बजाय कार्य से शाब्दिक और भौतिक दोनों रूपों में अपनी बात मनवाना ज़्यादा कारगर होता है।

अगर आपका लक्ष्य शक्ति पाना या उसे सुरक्षित रखना है, तो हमेशा अप्रत्यक्ष मार्ग खोजें और युद्ध का मैदान सावधानी से चुनें। अगर दीर्घकालीन दृष्टि से इस बात से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता है कि सामने वाला आपसे सहमत है या नहीं - या अगर समय और उनका अनुभव उन्हें आपका मतलब समझा देगा - तो सबसे अच्छा यही रहेगा कि आप उन्हें समझाने की कोशिश ही न करें। अपनी ऊर्जा बचाएँ और वहाँ से चल दें।

तरह वे उसका भी सम्मान करने लगे। इस तरह से मिस्र के नागरिक उसे अपना स्वामी मानने के लिए तैयार हो गए।

द हिस्ट्रीज़, हेरोडोटस, पाँचवीं सदी, ई.पू.

https://freehindipustakalya.blogspot.com

https://freehindipustakalya.blogspot.com

तस्वीर : सी-सॉ। बहस करने वाले ऊपर-नीचे होते रहते हैं और कहीं भी नहीं पहुँच पाते हैं। सी-सॉ से नीचे उतरें और लोगों को लात मारे या धक्का दिए बिना उन्हें अपना मतलब दिखा दें। उन्हें शिखर पर छोड़ दें, गुरुत्वाकर्षण शक्ति उन्हें अपने आप धरती पर ले आएगी।

विशेषज्ञ की राय : कभी बहस न करें। समाज में किसी भी चीज़ पर बहस नहीं होनी चाहिए। सिर्फ़ परिणाम देने पर अपना ध्यान केंद्रित करें। (बेंजामिन डिज़राइली, 1804-1881)

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम
10

संक्रमण : दुखी और बदक़िस्मत लोगों से बचें

विचार

आप किसी दूसरे के दुख से मर सकते हैं - भावनात्मक अवस्थाएँ बिमारियों ही की तरह संक्रामक होती हैं। हो सकता है आपको लगे कि आप डूबते आदमी की मदद कर रहे हैं, लेकिन यह याद रखें कि ऐसा करके आप सिर्फ़ अपनी मुश्किलें बढ़ा रहे हैं। बदक़िस्मत लोग बदक़िस्मती को अपनी तरफ आकर्षित करते हैं। अगर आप उनकी मदद करेंगे, तो बदक़िस्मती आपकी तरफ़ भी आकर्षित हो जाएगी। इसलिए सुखी और खुशक़िस्मत लोगों के साथ रहें।

बीज और घंटाघर

एक कौआ एक बीज को अपनी चोंच में दबाकर घंटाघर के ऊपर से जा रहा था। तभी वह बीज उसकी चोंच से फिसल गया और घंटापर के नीचे की दरार में गिर गया। बीज मरते-मरते बच गया। उसने घंटाघर की दीवार से आग्रह किया कि वह उसकी रक्षा करे। उसने ईश्वर की कृपा का वास्ता दिया और दीवार की ऊंचाई, सुंदरता तथा उसके घंटे की आवाज़ की तारीफ के पुल बाँधने लगा। उसने कहा, "अफ़सोस कि मैं अपने पिता के पेड़ों की हरी शाखाओं के नीचे नहीं गिरा। अफ़सोस कि मैं ऐसी ज़मीन पर नहीं गिरा, जो पत्तियों से ढँकी हो। लेकिन कम से कम आप

शक्ति की कुंजी

कुछ लोग दुर्भाग्यशाली होते हैं। ये लोग अपनी ग़लतियों के कारण नहीं, बल्कि परिस्थितियों के कारण दुर्भाग्य का शिकार होते हैं। ये हमारी मदद और सहानुभूति के हक़दार हैं। लेकिन कई लोग दुर्भाग्य या दुख के शिकार नहीं होते हैं, बल्कि अपने विनाशकारी कामों और दूसरों पर बुरे प्रभाव के कारण दुर्भाग्य को स्वयं आमंत्रित करते हैं। इन लोगों की मदद करने के बारे में हमें सतर्क रहना चाहिए। हम यह सोचते हैं कि उन्हें मुसीबत से उबारना या उनकी आदतें बदलना नेकी का काम होगा, लेकिन अक्सर उनकी आदतें हम में आ जाती हैं और उनकी बजाय हम बदल जाते हैं। इसका कारण समझना आसान है - इंसान जिन लोगों के साथ रहता है, उनके मूड, भावनाओं और सोचने के तरीक़ों का उस पर बहुत प्रभाव पड़ता है।

इस बात को समझ लें : शक्ति के खेल में यह बेहद महत्वपूर्ण है कि आप कैसे लोगों के साथ जुड़ते हैं। बुरा प्रभाव डालने वालों के साथ जुड़ने में जोखिम यह है कि आप अपना बहुमूल्य समय और ऊर्जा बर्बाद करेंगे। इसके अलावा लोग जब आपको ऐसे लोगों के साथ उठता-बैठता देखेंगे, तो आपके बारे में उनकी राय अच्छी नहीं होगी। कभी भी बुरे प्रभाव के ख़तरों को कम न आँकें।

बुरे प्रभाव का सिर्फ़ एक ही समाधान है : बचकर रहो। ख़तरा यह है कि बुरे प्रभाव डालने वाले ये लोग अक्सर ऐसा अभिनय करते हैं कि

https://freehindipustakalya.blogspot.com

https://freehindipustakalaya.blogspot.com

दोष उनका नहीं, बल्कि परिस्थितियों का है। इसलिए शुरुआत में यह देखना मुश्किल होता है कि उन्होंने दुखों को खुद आमंत्रित किया है। जब तक आप समस्या की हकीकत जान पाते हैं, तब तक अक्सर बहुत देर हो चुकी होती है। आप इस तरह के खतरनाक संक्रमण से खुद को कैसे बचा सकते हैं? जवाब यह है कि आप लोगों का मूल्यांकन इस बात से न करें कि वे अपनी समस्याओं के क्या कारण बताते हैं, बल्कि इस बात से करें कि दुनिया पर उनका क्या प्रभाव पड़ता है। बुरा प्रभाव डालने वालों को इन बातों से पहचाना जा सकता है कि वे दुर्भाग्य को आमंत्रित करते हैं, उनका अतीत बहुत उथल-पुथल वाला होता है, बहुत से लोगों से उनके संबंध टूट जाते हैं, उनके कैरियर अस्थिर होते हैं और उनके चरित्र में एक खतरनाक शक्ति होती है, जिससे प्रभावित होकर आप अपनी तर्कशक्ति खो देते हैं। बुरा प्रभाव डालने वालों की इन विशेषताओं को देखकर पहले से ही सचेत हो जाएँ। उनकी आँखों से असंतुष्टी के भाव को देखना सीखें। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उस पर तरस न खाएँ और उनकी मदद करने की कोशिश में खुद न उलझ जाएँ। बुरा प्रभाव डालने वालों के पास से दूर भाग जाएँ, वरना आपको इसके परिणाम भुगतने पड़ेंगे।

बुरे प्रभाव का दूसरा पहलू भी उतना ही सही है और इसे समझना शायद ज्यादा आसान है, कुछ लोग अपने ख़ुशनुमा स्वभाव, स्वभाविक उत्साह और बुद्धिमत्ता के द्वारा खुशी को आकर्षित

मुझे नहीं त्याग दें।
जब मैंने खुद को
क्रूर कौवे की चोंच में
पाया तो मैंने एक
प्रतिज्ञा की, कि
अगर मैं बच गया तो
मैं अपने जीवन को
एक छोटे से छेद में
समाप्त कर दूंगा।

"इन शब्दों से,
दयावश दीवार ने
उस बीज को वहाँ
आश्रय दे दिया जहाँ
यह गिर गया था।
कुछ समय बाद, वह
बीज फट गया :
इसकी जड़ें पत्थरों
के दरारों के बीच
पहुँच गईं और उन्हें
अलग धकेलने लगीं;
इसके अंकुर
आकाश की ओर
बढ़ने लगे। वे जल्द
ही ऊपर भवन की
ओर उठने लगे और
जैसे-जैसे मुड़ते गए
जड़ें मोटी होती गईं,
और प्राचीन पत्थरों

को उनकी जगह से दूर हटाने लगीं। बहुत देर बाद जाकर दीवार को होश आया कि दया के कारण उसने अपने ही विनाश को आमंत्रित कर लिया है, लेकिन अब अफ़सोस करने से कोई फ़ायदा नहीं था, क्योंकि कुछ ही समय बाद दीवार गिर गई।

लियोनार्डो द विंशी, 1452-1519

करते हैं। वे सुख का स्रोत होते हैं और आपको उनके साथ संबंध जोड़ना चाहिए, ताकि आप भी उनके सुख में हिस्सेदार बन सकें।

यह सिर्फ़ ख़ुशनुमा स्वभाव और सफलता पर ही लागू नहीं होता है : सभी सकारात्मक गुण हम पर अच्छा प्रभाव डाल सकते हैं। टैलीरेंड में कई विचित्र गुण थे, लेकिन ज़्यादातर लोग उन्हें फ़्रांस का सबसे शालीन, आकर्षक और हाज़िरजवाब सामंत मानते थे। उनका परिवार देश के सबसे पुराने कुलीन परिवारों में से एक था। हालाँकि उन्हें प्रजातंत्र और फ्रांसीसी गणराज्य में विश्वास था, लेकिन इसके बावज़ूद उन्होंने अपने सामंती गुणों को नहीं छोड़ा। उनके समकालीन नेपोलियन कई मायनों में उनके विपरीत थे। नेपोलियन कोर्सिका के किसान परिवार से आए थे और मितभाषी, असभ्य, यहाँ तक की उग्र भी थे।

नेपोलियन टैलीरेंड की जितनी प्रशंसा करते थे, उतनी किसी की भी नहीं करते थे। वे टैलीरेंड को हमेशा अपने पास रखने की कोशिश करते थे और यह चाहते थे कि टैलीरेंड के गुणों के प्रभाव से वे भी सुसंस्कृति बन जाएँ। इसका असर हुआ। समय के साथ-साथ नेपोलियन में कई

तस्वीर :

वाइरस। यह बिना दिखे, बिना चेतावनी दिए आपके शरीर में घुस जाता है और चुपचाप धीरे-धीरे फैलता रहता है। आपको इसका पता चल पाए, इससे पहले ही यह आपके शरीर में गहरी जड़ें जमा लेता है।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

https://freehindipustakalya.blogspot.com

बदलाव हुए। टैलीरेंड के साथ रहने से उनके चरित्र के कई अनगढ़ पहलू सुघड़ हो गए।

इस भावनात्मक आदान-प्रदान के सकारात्मक पहलू का लाभ लें। उदाहरण के लिए अगर आप कंजूस हैं, तो उदार लोगों के साथ रहें, ताकि उनके प्रभाव के कारण आपकी कंजूसी ख़त्म हो जाए। अगर आप निराशावादी हैं, तो हँसमुख लोगों के आस-पास रहें। अगर आप एकाकी हैं, तो बहिर्मुखी लोगों से दोस्ती करें। कभी भी ऐसे लोगों से न जुड़ें, जिनमें आपके जैसे दोष हों - इससे सिर्फ़ आपके दोष ही मज़बूत होंगे। सिर्फ़ सकारात्मक गुणों वाले लोगों के साथ जुड़ें। अगर आप ज़िंदगी में इस नियम पर चलेंगे, तो आपको दुनिया की किसी भी दवा से ज़्यादा फ़ायदा होगा।

विशेषज्ञ की राय : खुशक़िस्मत लोगों को पहचानें, ताकि आप उनके साथ रहने का निर्णय ले सकें। बदक़िस्मत लोगों को भी पहचानें, ताकि आप उनसे बच सकें। दुर्भाग्य आम तौर पर मूर्खता के कारण आता है और इसके शिकार लोगों से ज़्यादा संक्रामक और कोई नहीं होता। अपने दरवाज़े को छोटे से छोटे दुर्भाग्य के लिए भी न खोलें, क्योंकि अगर आप ऐसा करते हैं, तो उसके पीछे-पीछे बहुत से दुर्भाग्य चले जाएँगे... दूसरे के दुख से न मरें। (बाल्तेसर ग्रेशियन, 1601-1658)

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम

11

लोगों को अपने पर निर्भर बनाना सीखें

विचार

अपनी स्वतंत्रता बनाए रखने के लिए आपको ऐसा बनना चाहिए, ताकि लोगों को हमेशा आपकी ज़रूरत पड़े और वे आपको चाहें। आप पर जितना ज़्यादा भरोसा किया जाएगा, आपके पास उतनी ही ज़्यादा स्वतंत्रता होगी। कुछ ऐसा करें, ताकि दूसरे अपनी सुख-समृद्ध के लिए आप पर निर्भर बन जाएँ। ऐसा करने के बाद आपको किसी चीज़ का डर नहीं रहेगा। लोगों को इतना न सिखाएँ कि आपके बिना उनका काम चल जाए।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

शक्ति की कुंजी

आपकी शक्ति का सबसे बड़ा सबूत यह है कि आप लोगों से अपनी इच्छा के अनुसार काम करवा सकते हों। जब आप लोगों को मजबूर या आहत किए बिना ऐसा करें, यानी जब वे अपनी मर्ज़ी से आपकी इच्छा के अनुरूप काम करें, तो आपकी शक्ति कोई छू भी नहीं सकता है। इस स्थिति में आने का सर्वश्रेष्ठ तरीक़ा निर्भरता के संबंध बनाना है। मालिक को आपकी सेवाओं की ज़रूरत है। वह कमज़ोर है या आपके बिना काम नहीं कर सकता है। आप इतनी गहराई तक उसके काम में डूब चुके हैं कि आपको हटाने से उसे बहुत मुश्किल आएगी या आपकी जगह पर किसी अन्य व्यक्ति को प्रशिक्षण देने में उसका बहुत सा क़ीमती समय बर्बाद होगा। एक बार जब इस तरह का संबंध स्थापित हो जाता है, तो आपकी स्थिति सशक्त हो जाती है और आप मालिक से अपना मनचाहा काम करवा सकते हैं। आप सिंहासन के पीछे बैठे राजा के उस सेवक की तरह होते हैं, जो दरअसल राजा को नियंत्रित करता है।

उन लोगों जैसे न बनें, जो ग़लती से यह मान लेते हैं कि आत्मनिर्भरता सबसे बड़ी शक्ति है। शक्तिसंपन्न बनने के लिए लोगों से संबंध बनाना ज़रूरी है। आपको समर्थकों, प्यादों या कमज़ोर मालिकों की ज़रूरत हमेशा पड़ेगी।

अगर आप खुद को अनिवार्य नहीं बना पाते हैं, तो पहला मौक़ा मिलते ही आपको बाहर निकाल दिया जाएगा। आपकी जगह पर

दो घोड़े

दो घोड़े अपनी पीठ पर एक-एक गट्ठर लादकर ले जा रहे थे। आगे वाला घोड़ा अच्छी तरह चल रहा था, लेकिन पीछे वाला घोड़ा आलसी था। उनके मालिक ने पीछे वाले घोड़े का गट्ठर भी सामने वाले घोड़े पर लाद दिया। गट्ठर का वज़न हटने के बाद पीछे वाला घोड़ा आसानी से चलने लगा और आगे वाले घोड़े से बोला, "तुम मेहनत करो और पसीना बहाओ! तुम जितनी ज़्यादा मेहनत करोगे, तुम्हें उतना ही ज़्यादा कष्ट उठाना पड़ेगा।" जब वे सराय तक पहुँच गए, तो मालिक ने कहा, "जब मैं एक ही घोड़े पर सारा सामान लाद सकता हूँ, तो फिर मैं दो घोड़ों को

खिलाने पिलाने का ख़र्च क्यों उठाऊँ? इससे अच्छा तो यह रहेगा कि मैं एक घोड़े को भरपेट खिलाऊँ और दूसरे की खाल उतरवा लूँ। कम से कम मुझे उसकी चमड़ी तो मिल ही जाएगी।" और उसने ऐसा ही किया।

फ़ेबल्स, लियो टॉल्स्टॉय,

1828-1910

किसी कम उम्र वाले, कम महंगे और कम जोखिम वाले नए व्यक्ति को नियुक्त कर दिया जाएगा। यह जोखिम न लें और लोगों को अपने पर निर्भर बनाएँ। जब सब कुछ आप पर निर्भर होगा, तो आपको निकाला नहीं जा सकता। आपको निकालने का मतलब तबाही है, इसलिए आपका मालिक यह जोखिम कभी नहीं ले सकता। इस तरह की स्थिति में आने के बहुत से तरीक़े हैं। उनमें सबसे महत्वपूर्ण है किसी ऐसी योग्यता या रचनात्मक प्रतिभा का होना, जिसका कोई विकल्प ही न हो।

आपको जीनियस होने की ज़रूरत नहीं है। आपको तो बस एक ऐसी योग्यता की ज़रूरत है, जो आपको भीड़ से अलग कर दे। आपको ऐसी स्थिति बनाना चाहिए, जिसमें आप तो दूसरा मालिक या संरक्षक आसानी से खोज सकते हों, लेकिन आपका मालिक आपके जितनी विशेष योग्यता वाला दूसरा सेवक आसानी से नहीं खोज सकता हो और अगर आप वास्तव में अपरिहार्य न हों, तो भी आपको अपरिहार्य होने का नाटक करना चाहिए। विशेषतापूर्ण ज्ञान और कुशलता का ढोंग करने से ऊपर बैठे लोग यह सोचेंगे कि आपके बिना उनका काम नहीं चल सकता।

जब निक्सन ने व्हाइट हाउस में बैठने के बाद बहुत से लोगों को निकाला, तो हेनरी किसिंजर बच गए। इसलिए नहीं, क्योंकि निक्सन की नज़र में किसिंजर से ज़्यादा अच्छा कूटनीतिज्ञ नहीं था - कई कूटनीतिज्ञ किसिंजर से ज़्यादा

https://freehindipustakalaya.blogspot.com

https://freehindipustakalye.blogspot.com

निपुण थे - इसलिए भी नहीं, क्योंकि दोनों में अच्छी पटती थी। उनके विश्वास और राजनीतिक विचार भी अलग-अलग थे। किसिंजर इसलिए बच गए, क्योंकि उन्होंने राजनीतिक तंत्र के इतने सारे क्षेत्रों में घुसपैठ कर ली थी कि उन्हें हटाने से भारी अव्यवस्था का माहौल बन जाता। प्रशासन के इतने सारे पहलुओं और विभागों में उनका दख़ल था कि यह उनका ट्रम्प कार्ड बन गया। इससे उनके कई समर्थक बन गए। अगर आप इस तरह की स्थिति में आ जाते हैं, तो आपसे पीछा छुड़ाने में बहुत बड़ा जोखिम होता है - क्योंकि सभी आप पर निर्भर हैं।

आख़िरी चेतावनी : यह न सोचें कि अगर आपका मालिक आप पर निर्भर है, तो वह आपसे प्रेम भी करेगा। सच तो यह है कि वह आपसे द्वेष करेगा और डरेगा - लेकिन जैसा मैकियावली ने कहा था, प्रेम के बजाय लोगों में डर उत्पन्न करें। डर को तो आप नियंत्रित कर सकते हैं, लेकिन प्रेम को आप कभी नियंत्रित नहीं कर सकते हैं। प्रेम या मित्रता जैसे सूक्ष्म और बदलने वाले भाव पर निर्भर रहने से आप असुरक्षित बनते हैं। लोकप्रिय बनने से अच्छा तो यह है कि लोग आप पर निर्भर रहें और इस बात से डरें कि आपके चले जाने के कितने बुरे परिणाम होंगे।

समझदार राजा हर स्थिति में अपने नागरिकों को स्वयं पर और राज्य पर निर्भर रखता है, तभी उन पर भरोसा किया जा सकता है।

निकोलो मैकियावली,

1469-1527

https://freehindipustakalya.blogspot.com

तस्वीर : काँटेदार बेल।

नीचे जड़ें गहरी और चौड़ी बढ़ती हैं। ऊपर बेल पेड़ों, खंभों और खिड़कियों के चारों तरफ़ लिपटती रहती है। बेल से पीछा छुड़ाने में बहुत मेहनत लगेगी इतना खून-पसीना बहाना पड़ेगा, कि उसे बढ़ने देना ही ज़्यादा आसान लगता है।

विशेषज्ञ की रायः लोगों को अपने पर निर्भर बनाएँ। इस तरह की निर्भरता से ऐसा बहुत कुछ हासिल हो सकता है, जो शिष्टाचार से नहीं हो सकता। जो अपनी प्यास बुझा लेता है, वह तत्काल कुएँ की तरफ़ पीठ कर लेता है, क्योंकि अब उसे उसकी ज़रूरत नहीं है। जब निर्भरता ख़त्म हो जाती है, तो शिष्टता और सभ्यता भी ख़त्म हो जाती है, और उसके बाद सम्मान भी। अनुभव से आपको पहला सबक़ यह सीखना चाहिए कि आशा को जीवित तो रखें, लेकिन पूरी तरह संतुष्ट न करें। सम्राट को हमेशा आपकी ज़रूरत होनी चाहिए। (बाल्तेसर ग्रेशियन, 1601-1658)

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम

12

शिकार को निरस्त्र करने के लिए थोड़ी सी ईमानदारी और उदारता का इस्तेमाल करें

विचार

एक सच्चा और ईमानदार क़दम बेईमानी के दर्जनों क़दमों को ढँक लेगा। संदेह करने वाले लोगों के रक्षाकवच आपकी ईमानदारी और उदारता के कामों से शिथिल हो जाते हैं। जब आपकी थोड़ी सी ईमानदारी उनके कवच में छेद कर दे, तो इसके बाद आप उन्हें इच्छानुसार धोखा दे सकते हैं और उनसे मतलब निकाल सकते हैं। सही समय पर दिया गया उपहार यानी ट्रोजन हॉर्स भी इसी उद्देश्य को पूरा करता है।

शक्ति की कुंजी

धोखा देने का मूल मंत्र है ध्यान भटकना। जिन लोगों को आप धोखा देना चाहते हैं, उनका ध्यान भटकाने से आपको धोखा देने का समय और मौक़ा मिल जाता है। दयालुता, उदारता या ईमानदारी के काम से लोगों का ध्यान सबसे अच्छी तरह से भटकाया जा सकता है, क्योंकि इससे उनकी शंका ख़त्म हो जाती है। इससे वे बच्चे बन जाते हैं और हर तरह की प्रेमपूर्ण मुद्रा को स्वीकार करने के उत्सुक रहते हैं।

प्राचीन चीन में इसे "लेने से पहले देना" कहा जाता था। पहले देने से सामने वाले का ध्यान इस बात पर नहीं जाता था कि आप उससे लेने वाले हैं। इस तरकीब के अनंत व्यावहारिक प्रयोग हैं। किसी से खुलेआम कुछ लेना ख़तरनाक है, शक्तिशाली लोगों के लिए भी। शिकार प्रतिशोध की योजना बनाएगा। ज़रूरत की चीज़ मांगना भी ख़तरनाक है, भले ही आप कितनी भी विनम्रता से माँगें। जब तक सामने वाले व्यक्ति को अपना फ़ायदा नहीं दिखेगा, तब तक वह आपकी ज़रूरत पर ध्यान नहीं देगा, हो सकता है वह इससे चिढ़ भी जाए। लेने से पहले देना सीखें। इससे ज़मीन नर्म हो जाती है, भावी आग्रह का आघात धीरे से लगता है और ध्यान भटकता है। कुछ देने के कई रूप हो सकते हैं : वास्तविक उपहार, उदारतापूर्ण कार्य, एहसान, "सच्ची" स्वीकारोक्ति।

थोड़ी सी ईमानदारी किसी व्यक्ति से पहली बार मिलते समय सबसे अच्छी तरह काम

फ्रांसिस्को बोरी, धोखेबाज़ दरबारी

मिलान का फ्रांसिस्को गिसेपीर बोरी, जिसकी मौत 1695 में हुई थी - दरबारी या "अश्वारोही" धोखेबाजी का पूर्वज था... उसकी शोहरत का सच्चा समय एमस्टर्डम में पहुँचने के बाद शुरू हुआ। वहाँ पर उसने मेडिको युनिवर्सल की पदवी ली और बहुत से लोगों को नौकरी पर रखा। वह छह घोड़ों वाली बग्घी में यात्रा करता था... उसके पास घर पर मरीजों का ताँता लगा रहता था। और कुछ तो उसे मिलने के लिए पेरिस से विशेष बग्घियों में बैठकर एमस्टर्डम तक आते थे। बोरी बीमारों के इलाज के बदले में उनसे एक भी पैसा नहीं लेता था। वह गरीबों को बहुत

https://freehindipustakalya.blogspot.com

https://freehindipustakalye.blogspot.com

करती है। हम सब आदतों के गुलाम है और हमारी पहली छवि लंबे समय तक चलती है। अगर कोई संबंध की शुरुआत में ही यह भरोसा करने लगता है कि आप ईमानदार हैं, तो बाद में इस भरोसे को बदलने के लिए बहुत कोशिश करनी पड़ती है। इससे आपको रणनीति बनाने का काफी मौका मिल जाता है।

अक्सर ईमानदारी का एक ही काम पर्याप्त नहीं होता है। ज़रूरत है ईमानदारी की प्रतिष्ठा की। यह प्रतिष्ठा बहुत से कामों से बनती है, जो महत्वहीन भी हो सकते हैं। एक बार यह प्रतिष्ठा बन जाए, तो पहली छवि की तरह ही इसे हिलाना भी आसान नहीं होता है।

प्राचीन चीन में चेंग के ड्यूक वू ने यह फ़ैसला किया कि वह सशक्त बन रहे हू राज्य पर कब्ज़ा कर लेगा। उसने अपनी योजना किसी को भी नहीं बताई और हू के राजा से अपनी बेटी की शादी कर दी। फिर उसने एक सभा बुलाई और अपने मंत्रियों से पूछा, "मैं किसी देश पर आक्रमण करने के बारे में सोच रहा हूँ। हमें किस देश पर हमला करना चाहिए?" जैसी उसे उम्मीद थी, एक मंत्री ने जवाब दिया, "हमें हू राज्य पर हमला करना चाहिए।" ड्यूक ग़ुस्सा दिखाते हुए बोला, "हू अब हमारा मित्र राज्य है। तुम उस पर हमला करने का सुझाव कैसे दे सकते हो?" इस ग़लत बात के लिए उसने मंत्री का सिर क़लम करवा दिया। हू के राजा ने इस बारे में सुना। उसने सोचा कि उसके पास वू की ईमानदारी के बहुत से सबूत

दान देता था और वह किसी तरह से भी पैसा नहीं लेता था। वह इतनी शानोशौकत से रहता था कि लोगों ने यह मान लिया कि उसके पास पारस पत्थर होगा। अचानक यह परोपकारी व्यक्ति एमस्टर्डम से ग़ायब हो गया। तब जाकर यह पता चला कि वह अपने साथ बहुत सा धन और हीरे लेकर भाग गया था, जो लोगों ने उसके पास अमानत के तौर पर रखे थे।

ग्रेट डे फ्रांसिस्को।

द पॉवर ऑफ द कार्लेटन, 1939

https://freehindipustakalya.blogspot.com

भी तो हैं। इसके अलावा वू ने उसके साथ अपनी पुत्री की शादी भी की है। इसलिए उसने वू से खुद को बचाने के लिए कोई सावधानी नहीं बरती। कुछ सप्ताह बाद वू की सेनाएँ हू राज्य में घुस गईं और उन्होंने पूरे देश पर कब्ज़ा कर लिया।

ईमानदारी सावधान लोगों को निरस्त्र करने के सबसे अच्छे तरीक़ों में से एक है, लेकिन यह इकलौता तरीक़ा नहीं है। कोई भी महान या नि:स्वार्थ दिखने वाला काम ऐसा ही कर सकता है। शायद इस तरह का सबसे अच्छा काम उदारता दिखाना है। बहुत कम लोगों को उपहार नापसंद होता है, भले ही वह उनके सबसे पक्के दुश्मन ने दिया हो, इसीलिए यह लोगों को निरस्त्र करने का सबसे अच्छा तरीका होता है। उपहार से हमारे अंदर छिपा बच्चा जाग जाता है और हमारा रक्षाकवच ढीला पड़ जाता है। हालाँकि हम अक्सर दूसरों के कार्यों को आलोचना की दृष्टि से देखते हैं, लेकिन हम तोहफ़े के पीछे छिपी कुटिलता को शायद ही कभी देखते हैं, जिसके पीछे अक्सर बड़े उद्देश्य छिपे होते हैं। तोहफ़ा अपनी चालबाज़ी को छिपाने का सबसे अच्छा तरीक़ा है।

इस रणनीति का प्रयोग सावधानी से करना चाहिए : अगर लोग इसे भाँप लेंगे, तो कृतज्ञता और स्नेह की उनकी कुंठित भावनाएँ नफ़रत और अविश्वास में बदल जाएँगी। जब तक आप सच्चे और दिल से निकलने वाले उपहार का अभिनय न कर सकें, तब तक आग से न खेलें।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

तस्वीर : ट्रोजन हॉर्स। आपका कपट एक बेहतरीन तोहफ़े में छिपा हुआ है, जिसके प्रलोभन से आपका विरोधी बच नहीं सकता। दीवारें खुल जाती हैं। भीतर पहुँचने के बाद क़हर बरपा दें।

विशेषज्ञ की राय : जब चिन के ड्यूक ह्वेन यू पर आक्रमण करने वाले थे, तो उन्होंने उसे घोड़ों की टीम उपहार में दीं। जब अर्ल ची चाऊयू पर आक्रमण करने वाला था, तो उसने उन्हें विशाल रथ तोहफ़े में दिए। इसीलिए यह कहा जाता है : "कुछ लेने से पहले आपको देना चाहिए।" (हान फ़े त्सू, चीनी दार्शनिक, तीसरी सदी ईसा पूर्व।)

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम
13

मदद माँगते समय दया या कृतज्ञता की नहीं, बल्कि स्वार्थ की दुहाई दें

विचार

अगर आपको किसी साथी की मदद चाहिए, तो उसे यह याद न दिलाएँ कि आपने पहले उसकी कितनी मदद की है या उसके लिए कितने अच्छे काम किए हैं। अगर आप ऐसा करेंगे, तो वह आपको नज़रअंदाज़ करने का कोई न कोई तरीक़ा खोज ही लेगा। इसके बजाय अपने आग्रह में किसी ऐसी चीज़ की तरफ़ इशारा कर दें, जिससे उसे लाभ होगा। इस लाभ को बढ़ा-चढ़ाकर ज़ोर-शोर से बताएँ। जब उसे यह लगेगा कि आपकी मदद करने के कारण उसका भला हो सकता है, तो वह पूरे उत्साह से आपकी मदद करेगा।

शक्ति की कुंजी

https://freehindipustakalya.blogspot.com

शक्ति की खोज में आपको बार-बार अपने से ज़्यादा शक्तिशाली लोगों से मदद माँगनी पड़ेगी। मदद माँगना भी एक कला है। यह कला इस बात पर निर्भर करती है कि आपमें सामने वाले को समझने की कितनी क्षमता है और यह भी कि आप अपनी और उसकी ज़रूरतों के फ़र्क़ को समझते हैं।

ज़्यादातर लोग मदद माँगने में सफल नहीं हो पाते हैं, क्योंकि वे अपनी ही इच्छाओं और ज़रूरतों में खोए रहते हैं। वे यह मान बैठते हैं कि वे जिन लोगों से मदद माँग रहे हैं, वे निःस्वार्थ भाव से उनकी मदद करेंगे। वे इस तरह आग्रह करते हैं, जैसे उनकी ज़रूरतें दूसरों के लिए महत्वपूर्ण हों, जबकि शायद उन्हें उनकी क़तई परवाह नहीं होती है। कई बार वे बड़े मुद्दों का हवाला देते हैं : कोई महान लक्ष्य या प्रेम और कृतज्ञता जैसे महान भाव। वे बड़ी तस्वीर दिखाने लग जाते हैं, जबकि रोज़मर्रा की बातों में प्रभावित करने की ज़्यादा शक्ति होती है। उन्हें यह एहसास ही नहीं होता है कि सबसे शक्तिशाली व्यक्ति भी अपनी खुद की ज़रूरतों में उलझा रहता है और अगर आप उसके स्वार्थ का वास्ता नहीं देते हैं, तो वह आपकी मदद करने को अपने समय की बर्बादी मानेगा।

इस प्रक्रिया में प्रमुख क़दम सामने वाले के मनोविज्ञान को समझना है। क्या वह घमंडी है? क्या वह अपनी प्रतिष्ठा या सामाजिक ओहदे के बारे में चिंतित है? क्या उसके ऐसे दुश्मन हैं,

देहाती और सेब का पेड़

एक देहाती के बगीचे में सेब का एक पेड़ था, जिसमें फल नहीं लगते थे। उस पर सिर्फ़ गौरैया और टिड्डे ही बैठते थे। उसने पेड़ काटने का फ़ैसला किया और हाथ में कुल्हाड़ी लेकर इसकी जड़ों पर प्रहार करने लगा। टिड्डों और गौरैया ने उससे आग्रह किया कि वह उस पेड़ को न काटे, क्योंकि वह उन्हें शरण देता है। उन्होंने कहा कि वे गीत गाकर उसकी थकान कम कर देंगे। लेकिन उस देहाती ने उनके आग्रह पर क़तई ध्यान नहीं दिया और पेड़ पर प्रहार करता रहा। जब वह पेड़ के कोटर तक पहुँचा, तो उसे वहां मधुमक्खियों का एक छत्ता दिखा

https://freehindipustakalya.blogspot.com

जिसमें बहुत सा शहद था। शहद चखने के बाद उसने अपनी कुल्हाड़ी दूर फेंक दी और पेड़ की बहुत अच्छी देखभाल की। स्वार्थ से ही बहुतेरे लोग प्रेरित होते हैं।
फ़ेबल्स, ईसप, छठवीं सदी ई.पू.

जिन्हें परास्त करने में आप उसकी मदद कर सकते हैं? क्या वह सिर्फ़ धन और शक्ति से ही प्रेरित होता है?

जब बारहवीं सदी में मंगोलों ने चीन पर आक्रमण किया, तो दो हज़ार साल पुरानी चीनी संस्कृति और सभ्यता ख़तरे में पड़ गई। मंगोलों के सेनापति चंगेज़ खान की नज़र में चीन सिर्फ़ एक ऐसा देश था, जहाँ उसके घोड़ों के लिए पर्याप्त चारा नहीं था। उसने पूरे देश को मटियामेट करने और इसके शहरों को तहस-नहस करने का फ़ैसला किया, क्योंकि उसने सोचा "बेहतर यही रहेगा कि चीन को मिट्टी में मिला दिया जाए, ताकि यहाँ हमारे घोड़ों के लिए घास उग सके।" चीनी सभ्यता को नष्ट होने से जिसने बचाया, वह कोई सैनिक, सेनापति या राजा नहीं, बल्कि येलु त्साई नाम का सामान्य आदमी था। त्साई खुद एक विदेशी था, लेकिन वह चीनी संस्कृति से प्रभावित था। वह चंगेज़ खान का विश्वासपात्र सलाहकार बनने में कामयाब हो गया और उसने उसे यक़ीन दिला दिया कि अगर चीन को नष्ट करने के बजाय वह वहाँ के नागरिकों पर टैक्स लगा देगा, तो इससे उसे ज़्यादा फ़ायदा होगा। चंगेज़ खान को इसमें ज़्यादा समझदारी दिखी और उसने त्साई की सलाह मान ली।

जब चंगेज़ खान ने कैफ़ेंग शहर पर लंबी घेराबंदी के बाद क़ब्ज़ा किया और इसके नागरिकों को मौत के घाट उतारने का फ़ैसला किया (जैसा उसने उन बाक़ी शहरों में किया था, जहाँ उसका

विरोध हुआ था), तो त्साई ने उसे बताया कि कैफ़ेंग में चीन के सबसे अच्छे कारीगर और इंजीनियर रहते हैं और उनके हुनर का लाभ उठाना ज़्यादा अच्छा रहेगा। कैफ़ेंग को बख़्श दिया गया। इससे पहले चंगेज खान ने कभी ऐसी दया नहीं दिखाई थी, लेकिन सच तो यह था कि कैफ़ेंग दया के कारण नहीं बचा था। त्साई चंगेज़ खान को अच्छी तरह से जानता था। चंगेज़ खान एक बर्बर देहाती था, जिसे संस्कृति की क़तई परवाह नहीं थी। सच कहा जाए तो उसे युद्ध और व्यावहारिक परिणामों के अलावा किसी बात की परवाह नहीं थी। त्साई ने उस इकलौते भाव को जाग्रत किया, जो इस तरह के आदमी पर सफल हो सकता था : लोभ।

आत्म-रुचि या स्वार्थ ही वह लीवर है, जो लोगों को घुमाता है। एक बार जब आप उन्हें यह दिखा देते हैं कि आप किस तरह से उनकी आवश्यकताओं को पूरा कर सकते हैं या उनके लक्ष्य तक पहुँचने में उनकी मदद कर सकते हैं, तो आपके आग्रह को पूरा करने की दिशा में सारी बाधाएँ जादू से ग़ायब हो जाएँगी। शक्ति हासिल करने की राह में हर क़दम पर आपको यह सीखना होगा कि आप दूसरे व्यक्ति की तरह सोचें, उसकी ज़रूरतों और रुचियों को भाँपें। आप अपनी भावनाओं के परदे को हटा दें, क्योंकि इससे सच्चाई धुँधली हो जाती है। अगर आप इस कला में पारंगत हो जाते हैं, तो फिर आपकी सफलता की कोई सीमा नहीं रहेगी।

ज़्यादातर लोग खुद में इतने ज़्यादा डूबे रहते हैं कि उन्हें अपने अलावा किसी चीज़ में सच्ची रुचि नहीं होती है। जब भी कोई बात करता है, तो वे हमेशा इस बारे में सोचते हैं कि इस बात से उन्हें किस तरह लाभ हो सकता है। अगर उन्हें अपना कोई फ़ायदा नज़र आता है, तो वे पूरे ध्यान से सुनने लगते हैं, चाहे उस बात से उनके लाभ का बहुत दूर का ही संबंध हो।

आर्थर शोपेनहॉर, 1788-1860

https://freehindipustakalya.blogspot.com

तस्वीर : बाँधने वाली रस्सी।
दया और कृतज्ञता की
रस्सी कमज़ोर होती है
और पहले ही झटके में
टूट जाती है। इस तरह
की लाइफ़लाइन न फेंके।
आपसी स्वार्थ की रस्सी
बहुत मज़बूत होती है
और इसे आसानी से
नहीं तोड़ा जा सकता।
यह बरसों तक आपकी
सेवा करती रहेगी!

विशेषज्ञ की राय : अपनी क़िस्मत चमकाने का सबसे आसान और अच्छा तरीक़ा लोगों को यह स्पष्टता से दिखाना है कि आपकी तरक्की में ही उनकी तरक्की छिपी हुई है। (ज्याँ डे ला ब्रूअर, 1645-1696)

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम

14

मित्र की तरह दिखें, लेकिन काम जासूस की तरह करें

विचार

अपने प्रतिद्वंद्वी के बारे में जानना बहुत महत्त्वपूर्ण है। बहुमूल्य जानकारी इकट्ठी करने के लिए जासूसों का इस्तेमाल करें, ताकि आप एक क़दम आगे रह सकें। इससे भी अच्छा तरीक़ा यह है कि आप खुद जासूस की भूमिका निभाएँ। सौहार्द्रपूर्ण सामाजिक मुलाक़ातों में यह काम करना सीखें। अप्रत्यक्ष सवाल पूछें, ताकि लोग अपनी कमज़ोरियों और इरादों को उजागर कर दें। चतुर जासूसों के लिए इस बात का अवसर हर जगह और हर समय होता है।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

अगर आपको यह शक हो रहा हो कि कोई व्यक्ति आपसे झूठ बोल रहा है, तो इस तरह का नाटक करें, जैसे आपको उसके हर शब्द पर भरोसा है। इससे उसे आगे बोलने का साहस मिलेगा और वह ज़्यादा बढ़ा-चढ़ाकर बताने के चक्कर में अंत में धोखा खाएगा। इसी तरह, अगर आप देखें कि कोई व्यक्ति आपसे कुछ छिपाने की कोशिश कर रहा है, तो इस तरह का नाटक करें, जैसे आपको उसकी बातों पर यक़ीन नहीं है। आपके विरोध से वह उत्तेजित हो जाएगा और आपको भरोसा दिलाने के लिए सच्चाई उगल देगा।

आर्थर शॉपेनहार, 1788-1860

शक्ति की कुंजी

शक्ति के क्षेत्र में आपका लक्ष्य है भविष्य की घटनाओं पर नियंत्रण पाना। इसमें एक बाधा यह है कि लोग आपको अपने सभी विचार, भावनाएँ और योजनाएँ नहीं बताते हैं। अक्सर वे सावधानीपूर्वक बोलते हैं और अपने चरित्र के छिपे हुए सबसे महत्वपूर्ण हिस्सों यानी अपनी कमज़ोरियों, अपने उद्देश्यों तथा स्वार्थों को छिपा लेते हैं। परिणाम यह होता है कि आप उनकी चालों का अनुमान नहीं लगा सकते हैं और हमेशा अँधेरे में रहते हैं। इसकी कुंजी यह है कि आप ऐसा कोई तरीक़ा खोजें, जिससे आप उनकी जाँच कर सकें, उनके रहस्यों और छिपे हुए इरादों का पता लगा सकें, लेकिन ऐसा करते समय उन्हें आपकी योजना मालूम न हो पाए।

यह काम उतना मुश्किल नहीं है, जितना आप सोचते हैं। दोस्ताना व्यवहार से आप मित्रों और शत्रुओं दोनों से ही गोपनीय जानकारी पा सकते हैं। बाक़ी लोगों को जन्मपत्री और टेरो कार्ड देखने दें : आपके पास भविष्य जानने के ज़्यादा ठोस तरीक़े हैं।

जासूसी करने का सबसे आम तरीक़ा दूसरों का इस्तेमाल करना है। यह तरीक़ा आसान और शक्तिशाली तो है, लेकिन इसमें जोखिम भी है। निश्चित रूप से आपको जानकारी तो मिलेगी, लेकिन आप अपने जासूसों पर निर्भर रहेंगे। हो सकता है कि वे अयोग्यतावश आपकी जासूसी को उजागर कर दें या गोपनीय रूप से

आपके ख़िलाफ़ हो जाएँ। इससे ज़्यादा अच्छा तो यह है कि आप खुद जासूस बन जाएँ और दोस्ती का नक़ाब ओढ़कर गोपनीय जानकारी इकट्ठी कर लें।

फ्रांसीसी राजनीतिज्ञ टैलीरेंड इस कला में बहुत निपुण थे। उनमें सामान्य चर्चा में लोगों से रहस्य उगलवाने की अद्‌भुत योग्यता थी। लोगों का कहना था कि टैलीरेंड बातचीत में बहुत निपुण थे - जबकि सच तो यह था कि वे बहुत कम बोलते थे। वे अपने विचारों के बारे में कभी बातें नहीं करते थे, बल्कि सामने वाले के विचार उगलवाने की कोशिश करते थे। वे ऐसी बात कह देते थे, जो गोपनीय लगती थी (जबकि दरअसल वह मनगढ़ंत होती थी), फिर वे अपने श्रोताओं की प्रतिक्रिया को ग़ौर से देखते थे।

सामाजिक समारोहों जैसे मौक़ों पर सतर्क रहें। इस समय लोगों का रक्षातंत्र कमज़ोर होता है, इसलिए लोगों से बातचीत करके आप उनसे बातें उगलवा सकते हैं। यह रणनीति इतनी ज़बर्दस्त है कि वे आपकी रुचि को ग़लती से आपकी दोस्ती मान लेंगे। इस तरह आपको न सिर्फ़ सामने वाले के भेद मालूम चलेंगे, बल्कि आप उसे अपना समर्थक भी बना लेंगे।

बहरहाल, आपको इस रणनीति का प्रयोग सावधानी से करना चाहिए। अगर लोगों को यह शक हो जाए कि आप बातचीत के बहाने उनसे भेद उगलवा रहे हैं, तो वे आपसे कतराने लगेंगे। इसलिए मूल्यवान जानकारी पर नहीं,

जिस तरह से गाय गंध को भाँप लेती है, ब्राह्मण धर्मग्रंथों को और बाकी के लोग अपनी आँखों से दिखने वाली चीज़ों को, उसी तरह शासक जासूसों को भाँप लेते हैं।

कौटिल्य, भारतीय दार्शनिक, तीसरी सदी ई.पू.

https://freehindipustakalya.blogspot.com

https://freehindipustakalya.blogspot.com

बल्कि दोस्ताना बातों पर ज़ोर दें। जानकारी के रत्नों की तलाश को बहुत स्पष्ट न होने दें, वरना आपके सवालों से सामने वाला आपके इरादे भाँप लेगा और आपको आपकी मनचाही जानकारी नहीं मिल पाएगी।

जासूसी के बारे में ला रोशफ़ूको ने इस चाल की सलाह दी है, "सच्चाई बहुत कम लोगों में होती है और यह अक्सर सबसे चतुर छलावा होती है - दूसरे का विश्वास और रहस्य हासिल करने के लिए इंसान सच्चा बन जाता है।" अगर आप किसी के सामने अपने दिल की भावनाएँ उजागर करने का नाटक करते हैं, तो इस बात की संभावना बढ़ जाती है कि वह भी आपके सामने अपने रहस्य उगल देगा। अगर आप उसे कोई झूठा रहस्य बताएँगे, तो बदले में वह आपको सच्चा रहस्य बता देगा। दार्शनिक आर्थर शॉपेनहार ने एक और चाल का सुझाव दिया है। उनका कहना है कि बातचीत में आप लोगों का प्रबल विरोध करके उन्हें इतना चिढ़ा दें और इतना उत्तेजित कर दें कि वे अपने शब्दों पर नियंत्रण न रख पाएँ। उग्र भावनात्मक प्रतिक्रिया में वे अपने बारे में हर तरह के सच को उजागर कर देंगे, जिनका आप बाद में उनके ख़िलाफ़ इस्तेमाल कर सकते हैं।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

तस्वीर : जासूस की तीसरी आँख। दो आँख वालों की इस धरती पर तीसरी आँख आपको ईश्वर की तरह विराट दृष्टि देती है। आप दूसरों से ज़्यादा दूर तक देखते हैं और आप उनके भीतर ज़्यादा गहराई तक देखते हैं। आपकी इस आँख से आपके अलावा और कोई नहीं बच सकता।

विशेषज्ञ की राय : योग्य शासक और बुद्धिमान सेनापति दुश्मन को जब चाहे जीत लेते हैं और उनकी उपलब्धियाँ सामान्य लोगों से बहुत ज़्यादा होती हैं। इसका कारण यह है कि उन्हें दुश्मन की स्थिति का पहले से ही ज्ञान होता है। यह "पूर्वज्ञान" आत्माओं या देवी-देवताओं या अतीत की घटनाओं या ज्योतिष से हासिल नहीं होता है। यह तो जासूसों से हासिल होता है, जो शत्रु की असली स्थिति को जानते हैं। (सुन-त्सू, *द आर्ट ऑफ़ वार*, चौथी सदी ई.पू.)

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम
15

अपने दुश्मन को पूरी तरह से मिटा दें

विचार

मोज़ेस से लेकर आज तक के सभी महान लीडर्स जानते हैं कि जिस शत्रु से भय हो, उसे पूरी तरह से कुचल देना चाहिए। (कई बार उन्होंने यह सबक़ कष्ट उठाकर सीखा था।) अगर एक भी चिंगारी बची रही, तो चाहे यह कितनी ही मद्धिम हो, अंततः आग भड़क उठेगी। शत्रु को पूरी तरह मिटाने के बजाय आधा कुचलने से बहुत नुक़सान होता है। शत्रु फिर से शक्तिशाली बन जाएगा और प्रतिशोध लेगा। उसे पूरी तरह कुचल डालो, शरीर से ही नहीं, बल्कि आत्मा से भी।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

शक्ति की कुंजी

शक्ति के संघर्ष में आपके बहुत से प्रतिद्वंद्वी और दुश्मन बनेंगे। कुछ लोग आपके दुश्मन ज़रूर बनेंगे, भले ही आप कुछ भी कर लें। इस तरह के दुश्मन आपका बुरा चाहेंगे। उनके इरादे आपको ख़त्म करने के होते हैं। अगर उनसे जूझते समय आप दया या समझौते की आशा में या तीन-चौथाई रास्ते पर ही रुक जाते हैं, तो इससे आपको कोई फ़ायदा नहीं होगा। उलटे इसकी बदौलत उनका संकल्प और नफ़रत बढ़ जाएगी और वे किसी न किसी दिन आपसे बदला लेकर ही वह भी रहेंगे। हो सकता है, आपसे पराजित होने के बाद वे कुछ समय तक दोस्ताना व्यवहार का ढोंग करें। लेकिन ऐसा सिर्फ़ इसलिए होगा, क्योंकि उनके पास कोई दूसरा विकल्प नहीं है और वे सही वक़्त का इंतज़ार कर रहे हैं।

समाधान : अपने दुश्मनों पर दया न करें। उनकी नफ़रत को व्यक्तिगत रूप से न लें। अपने दुश्मनों को उसी तरह से पूरा कुचल डालें, जिस तरह मौक़ा मिलने पर वे आपको कुचल डालते। दुश्मनों के मिट जाने के बाद ही आपको शांति और सुरक्षा मिल सकती है।

माओ त्से-तुंग इस नियम के महत्व को जानते थे। 1934 में साम्यवादी नेता माओ त्से-तुंग और उनके लगभग 75,000 सैनिक पश्चिमी चीन के वीरान पहाड़ों में छिप गए। वे च्यांग काई शेक की विशाल सेना से बचने के लिए वहाँ छिपे थे।

दुश्मन के अवशेष भी बीमारी या आग के अवशेषों की तरह सक्रिय बन सकते हैं। इसलिए उन्हें पूरी तरह नष्ट कर देना चाहिए... हमें कभी दुश्मन को सिर्फ़ इसलिए नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए, क्योंकि वह कमज़ोर हो गया है। घास के पूले में छूटी आग की चिंगारी की तरह ही वह भी कुछ समय बाद ख़तरनाक बन सकता है।

कौटिल्य, भारतीय दार्शनिक, तीसरी सदी ई.पू.

पूर्ण विजय पाने के लिए आपको बेरहम बनना होगा।

नेपोलियन बोनापार्ट

1769-1821

च्यांग साम्यवादियों को पूरी तरह से ख़त्म करने पर आमादा था। नतीजा यह हुआ कि कुछ साल बाद माओ के सैनिकों की संख्या 10,000 से भी कम रह गई। 1937 में जब जापान ने चीन पर हमला किया, तो च्यांग ने सोचा कि अब साम्यवादियों की शक्ति क्षीण हो चुकी है, इसलिए उनसे उसे कोई ख़तरा नहीं है। उसने साम्यवादियों का पीछा छोड़ने और जापानियों पर ध्यान केंद्रित करने का विकल्प चुना। लेकिन यह उसकी भूल थी। दस साल बाद साम्यवादी इतने शक्तिशाली बन गए कि उन्होंने च्यांग की सेना को पछाड़ दिया। च्यांग दुश्मन को मिटा देने की बुद्धिमत्ता को भूल गया था, माओ नहीं भूले थे। माओ ने च्यांग का तब तक पीछा किया, जब तक कि वह और उसकी पूरी सेना ताईवान के टापू पर नहीं भाग गई। आज तक मुख्य चीन पर च्यांग के शासन का कोई चिन्ह नहीं है।

आधुनिक युद्धकला का सूत्र है पूर्ण विजय का लक्ष्य। युद्ध के प्रमुख दार्शनिक कार्ल वॉन क्लॉज़ेविट्ज़ ने इसे अच्छी तरह से परिभाषित किया है। नेपोलियन के अभियानों का विश्लेषण करते हुए वॉन क्लॉज़ेविट्ज़ ने लिखा है, "हमारा दावा है कि दुश्मन की सेनाओं का पूरा विनाश ही हमेशा सबसे प्रमुख लक्ष्य होना चाहिए... बड़ी विजय हासिल करने के बाद आराम करने की या सुस्ताने की कोई चर्चा नहीं होना चाहिए... इसके बजाय लगे रहने, दुश्मन का पीछा करने, उसकी संपत्ति पर कब्ज़ा करने,

https://freehindipustakalya.blogspot.com

उसके संसाधनों को नष्ट करने और हर उस चीज़ को ख़त्म करने की ज़रूरत है, जिससे दुश्मन को सहायता और राहत मिल सके।" इसका कारण यह है कि युद्ध के बाद हमेशा समझौता होता है और दोबारा क्षेत्र का बँटवारा होता है। अगर आप सिर्फ़ आधी-अधूरी जीत हासिल करेंगे, तो आप युद्ध में जीती लगभग सभी चीज़ें समझौते में हार जाएँगे।

समाधान आसान है : अपने दुश्मनों के सामने कोई विकल्प न छोड़ें। उन्हें पूरी तरह मिटा दें। इसके बाद उनका इलाक़ा आपका हो जाएगा, जिस पर आप अपनी मनचाही योजनाएँ लागू कर सकते हैं। शक्ति का लक्ष्य दुश्मनों को पूरी तरह से नियंत्रित करना और अपनी इच्छा का पालन करवाना है। आप आधे रास्ते तक पहुँचकर यह हासिल नहीं कर सकते। अगर दुश्मनों के पास कोई विकल्प नहीं होगा, तो उन्हें मजबूरन आपकी बात माननी पड़ेगी। युद्ध के मैदान के अलावा भी इस नियम के कई उपयोग हैं। समझौता वह ख़तरनाक नाग है, जो आपकी विजय को डँस लेगा, इसलिए अपने दुश्मनों को समझौते का, उम्मीद रखने का, रणनीति बनाने का कोई मौक़ा ही न दें। उन्हें मिटा दें और झंझट ख़त्म करें।

यथार्थवादी बनें : अगर आप अपने शत्रुओं के प्रति निर्मम नहीं हैं, तो आप कभी सुरक्षित नहीं रहेंगे। अगर आप उन्हें मिटाने या अपनी नज़रों से दूर रखने की स्थिति में नहीं हैं, तो आप कम से कम इतना तो समझ ही लें कि वे

https://freehindipustakalya.blogspot.com

https://freehindipustakalya.blogspot.com

आपके ख़िलाफ़ साजिश कर रहे हैं। उनकी दोस्ती के नाटक पर ज़रा भी ध्यान न दें। इस तरह की स्थिति में सतर्कता ही आपका इकलौता हथियार है।

तस्वीर : घायल नाग : अगर आप नाग को अपने पैरों से दबाने के बाद ज़िंदा छोड़ देंगे, तो वह दोबारा फ़न तान लेगा और आपको दोगुने ज़हर से काट लेगा। हारा हुआ शत्रु भी अधमरे नाग की तरह होता है, जिसे आप दोबारा शक्तिशाली बनने का मौक़ा देते हैं। समय के साथ-साथ उसका ज़हर बढ़ता जाता है।

विशेषज्ञ की राय : इस बात पर ध्यान दें कि लोगों को या तो पुचकारा जाना चाहिए या पूरी तरह मिटा देना चाहिए। छोटी चोटों के लिए तो वे प्रतिशोध लेंगे, लेकिन बड़े आघातों के लिए वे प्रतिशोध नहीं ले सकते, इसलिए मनुष्य को इस तरह से चोट पहुँचाना चाहिए ताकि हमें उसके प्रतिशोध से डरने की ज़रूरत ही न पड़े। (निकोलो मैकियावली, 1469-1527)

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम

16

सम्मान पाने के लिए दूरी बनाएँ

विचार

कहीं भी बहुत ज़्यादा आने-जाने से क़ीमत घटती है। आप जितना ज़्यादा दिखते और बोलते हैं, आप उतने ही साधारण नज़र आते हैं। अगर आप किसी समूह में स्थापित हो चुके हैं, तो कुछ समय के लिए उससे दूर रहें। आपके अनुपस्थित रहने पर आपके बारे में ज़्यादा बातें होंगी और आपकी ज़्यादा तारीफ़ भी होगी। आपको बस यह सीख लेना चाहिए कि दूर कब रहना है। अभाव से हर चीज़ का मूल्य बढ़ जाता है; इस सिद्धांत का लाभ लें।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

ऊँट और लकड़ियाँ

ऊँट को सबसे पहले जिस आदमी ने देखा, वह भाग खड़ा हुआ। दूसरा आदमी हिम्मत करके ऊँट के पास गया। तीसरे ने उसके गले में रस्सी का फंदा डालने का जोखिम लिया। इस दुनिया में परिचय से सभी चीज़ें पालतू बन जाती हैं, क्योंकि जब हमारी आँखों को भयंकर या अजीब चीज़ों की आदत हो जाती है, तो वे सामान्य लगने लगती हैं। मैं आपको कुछ संतरियों के बारे में बताना चाहता हूं, जो समुद्र तट पर तैनात थे। जब पहली बार उन्होंने किसी चीज़ को समुद्र की लहरों में दूर तैरते देखा, तो वे चिल्लाने लगे "जहाज! जहाज! युद्ध का बेड़ा।" पांच मिनट बाद

शक्ति की कुंजी

इस दुनिया में सब कुछ अनुपस्थिति और उपस्थित पर निर्भर करता है। आप अपनी प्रबल उपस्थित से शक्ति और ध्यान को आमंत्रित करते हैं - आप अपने आस-पास के लोगों से ज़्यादा प्रखरता से चमकते हैं। लेकिन अंततः वह बिंदु आ ही जाता है, जब ज़रूरत से ज़्यादा उपस्थिति का विपरीत प्रभाव पड़ने लगता है : आप जितना ज़्यादा दिखते और बोलते हैं, आपका महत्व उतना ही कम होता जाता है। लोगों को आपकी आदत पड़ जाती है। चाहे आप विविधता या दिलचस्प होने की कितनी ही कोशिश करें, लोग आपका कम सम्मान करने लगते हैं। इससे पहले कि लोग आपको अचेतन रूप से दूर कर दें, आपको सही समय पर दूर हटना सीखना चाहिए। यह लुका-छिपी का खेल है।

इस नियम की सच्चाई को प्रेम-प्रसंगों में सबसे आसानी से देखा जा सकता है। प्रेम-प्रसंगों की शुरुआत में प्रेमिका की अनुपस्थिति से आपकी कल्पना की उड़ान उसे महिमामंडित कर देती है। लेकिन जब आप उसके बहुत करीब रहने लगते हैं, तो यह आभामंडल धुंधला पड़ने लगता है, क्योंकि अब आपकी कल्पना को उड़ने की जगह ही नहीं मिलती। इस स्थिति में प्रेमिका भी सामान्य लगने लगती है, इसलिए आप उसकी उपस्थिति को ज़्यादा महत्व नहीं देते हैं।

इसे रोकने के लिए आपको चाहिए कि आप सामने वाले से दूर हट जाएँ। अगर उन्हें इस बात की आशंका रहेगी कि आप हमेशा के लिए

https://freehindipustakalya.blogspot.com

उनसे दूर जा सकते हैं, तो वे आपका सम्मान करने के लिए मजबूर हो जाएँगे।

नेपोलियन उपस्थिति और अनुपस्थिति के इस नियम को अच्छी तरह पहचानते थे। उन्होंने कहा था, "अगर मैं अक्सर थियेटर में दिखने लगूँगा, तो लोग मेरी तरफ़ ध्यान देना बंद कर देंगे।" आज तस्वीरों की बाढ़ के कारण दुनिया में उपस्थिति बढ़ गई है, इसलिए दूर हटने का यह खेल ज़्यादा प्रभावशाली बन गया है। हम यह नहीं जानते हैं कि कब पीछे हटा जाए और हमारी कोई भी चीज़ निजी नहीं रह पाती है। इसलिए हम उन लोगों का सम्मान करते हैं, जो अपनी मर्ज़ी से ग़ायब होने में माहिर होते हैं। कब ग़ायब होना है, यह जानने के कारण उपन्यासकार जे.डी. सेलिंजर और थॉमस पिंचॉन के बहुत से प्रशंसक हो गए हैं।

इस नियम का एक और रोज़मर्रा का उदाहरण है, जो इसकी सच्चाई को और भी स्पष्टता से बताता है। यह है अर्थशास्त्र में दुर्लभता का नियम। बाज़ार से किसी चीज़ को हटा दीजिए, उसका मूल्य तत्काल बढ़ जाएगा। सत्रहवीं सदी में हॉलैंड का शाही परिवार चाहता था कि ट्यूलिप के फूल का महत्व बढ़े और यह स्टेटस सिंबल बन जाए। उन्होंने उस फूल की इतनी कमी पैदा कर दी, उसे हासिल करना इतना मुश्किल बना दिया कि ट्यूलिप की दीवानगी शुरू हो गई। कुछ ही समय में ट्यूलिप के एक फूल की क़ीमत उसके वज़न के बराबर सोने से ज़्यादा हो गई।

उन्हें एक पैकेट बोट दिखी, फिर एक छोटी नाव और अंत में कुछ छड़ियाँ तैरती दिखीं। मैं ऐसे बहुत से लोगों को जानता हूँ, जिन पर यह कहानी लागू होती है - दूर से जो लोग बहुत आकर्षक दिखते हैं, पास आने पर वे सामान्य लगने लगते हैं।

ला फ्रोन्टेन, 1621-1695

https://freehindipustakalya.blogspot.com

दुर्लभता के नियम को अपनी योग्यताओं पर लागू करें। आप दुनिया को जो दे रहे हैं, उसे दुर्लभ और दुरूह बनाएँ। इससे आपका महत्व तत्काल बढ़ जाएगा।

हमेशा एक न एक ऐसा पल आता है, जब शक्तिशाली लोग ज़रूरत से थोड़ी ज़्यादा देर तक आस-पास रहते हैं। ऐसा होने पर हम उनसे ऊब जाते हैं, उनके प्रति सम्मान खो देते हैं, उन्हें बाक़ी इंसानों की तरह ही मानने लगते हैं। इसका मतलब यह होता है कि हम उन्हें सामान्य से भी थोड़ा कमज़ोर मानते हैं, क्योंकि हम उनके वर्तमान स्टेटस की तुलना उनके पुराने स्टेटस से करते हैं। दूर कब होना है, यह जानना एक कला है। अगर यह काम सही तरीक़े से किया जाए, तो आप अपने खोए हुए सम्मान को दोबारा हासिल कर सकते हैं और अपनी शक्ति को बरकरार रख सकते हैं।

अगर आप ज़्यादा समय तक लोगों के आस-पास रहेंगे, तो आपने अपने चारों तरफ़ शक्ति का जो आभामंडल बनाया है, वह ग़ायब हो जाएगा। खेल को पलट दें : ख़ुद को दुर्लभ बनाएँ। इससे आपकी उपस्थिति का महत्व बढ़ जाएगा।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

तस्वीर : सूर्य। सूर्य का महत्त्व इसकी अनुपस्थिति से ही होता है। बारिश के दिन जितने लंबे होते हैं, सूर्य का उतना ही ज़्यादा इंतज़ार होता है। लेकिन लगातार गर्मी पड़ने पर सूर्य चुभने लगता है। अगर आप ख़ुद को अनुपस्थित रखना सीख लेंगे, तो लोगों में आपकी माँग बढ़ जाएगी।

विशेषज्ञ की राय : सम्मान उत्पन्न करने के लिए दूरी बनाएँ। लगातार आस-पास रहने से शोहरत कम होती है, दूर रहने से यह बढ़ती है। दूर रहने पर जिस व्यक्ति को शेर माना जाता है, सामने होने पर वही सामान्य और मूर्खतापूर्ण लगता है। ज़्यादा परिचित होने पर गुण अपनी चमक खो देते हैं, क्योंकि लोग आंतरिक गुणों के बजाय बाहरी चीज़ों को देखने लगते हैं। उत्कृष्ट जीनियस भी अपनी अनुपस्थिति या रिटायरमेंट का प्रयोग इसलिए करता है, ताकि लोग उसका सम्मान कर सकें और उसकी दुर्लभता से आदर उत्पन्न हो। (बाल्तेसर ग्रेशियन, 1601-1658)

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम 17

दूसरों को दुविधा में रखें : अनिश्चय का माहौल बनाएँ

विचार

इंसान आदतों के हिसाब से चलते हैं। उनके मन में इस बात की गहरी चाहत होती है कि दूसरों के काम उन्हें परिचित लगें। आपके लीक पर चलते रहने से उन्हें यह एहसास होता है कि वे नियंत्रण में हैं। पाँसों को पलट दें : जान-बूझकर अनपेक्षित काम करें। अगर आपके व्यवहार में कोई निरंतरता, तारतम्य या उद्देश्य नहीं दिखेगा, तो उनका संतुलन गड़बड़ा जाएगा और वे आपके क़दमों का मतलब समझने की कोशिश में थककर चूर हो जाएँगे। बहुत आगे तक ले जाने पर यह रणनीति आतंक उत्पन्न कर सकती है।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

शक्ति की कुंजी

अचानक, अकस्मात या अनसोची चीज़ सबसे डरावनी होती है। इसीलिए हम भूकंपों और तूफ़ानों से डरते हैं। हमें यह पता नहीं होता है कि वे कब आएँगे। जब एक भूकंप आ जाता है, तो हम अगले भूकंप का दहशत से इंतज़ार करते हैं। अप्रत्याशित मानवीय व्यवहार का हम पर इसी तरह का प्रभाव पड़ता है।

जानवर निश्चित तरीक़े से व्यवहार करते हैं, इसीलिए हम उनका शिकार करके उन्हें मार पाते हैं। सिर्फ़ इंसान में ही अपने व्यवहार को बदलने, नया काम करने और दिनचर्या तथा आदतों को छोड़ने की क्षमता होती है। बहरहाल, ज़्यादातर लोगों को इसकी शक्ति का एहसास ही नहीं होता है। वे दिनचर्या के आराम को ज़्यादा पसंद करते हैं। इस तरह वे जानवरों की लीक पर चलते हैं और बार-बार वही काम करते हैं। वे ऐसा इसलिए करते हैं, क्योंकि इसमें कोशिश नहीं करनी पड़ती है। और इसलिए भी, क्योंकि वे ग़लती से यह मान लेते हैं कि अगर वे दूसरों को विचलित नहीं करेंगे, तो दूसरे भी उन्हें विचलित नहीं करेंगे। यह बात समझ लें : शक्तिशाली व्यक्ति जान-बूझकर अपने आस-पास के लोगों को विचलित करके भय उत्पन्न करता है और पहल करने की शक्ति अपने पास रखता है। कई बार तो बिना चेतावनी के वार करना पड़ता है, ताकि बिना उम्मीद के हमला होने पर लोग थर्रा जाएँ। इस तरकीब का इस्तेमाल शक्तिशाली लोग सदियों

दरबार का जीवन शतरंज का दुखद खेल होता है, जिसमें मोहरों को जमाना पड़ता है, योजना बनानी पड़ती है, चालें चलनी पड़ती हैं और दुश्मन की योजना को नाकाम करना पड़ता है। बहरहाल कई बार सबसे अच्छा यही होता है कि हम जोखिम लें और सबसे अप्रत्याशित और विचित्र चाल चल दें।

जीन डे ला ब्रूएर, 1645-1696

अगर संभव हो, तो हमेशा दुश्मन को धोखा दें, हैरान करें और ग़लत जानकारी दें। इस तरह की रणनीतियाँ हमेशा कामयाब होती हैं और इस तरह से एक छोटी सेना भी बड़ी सेना को नष्ट कर सकती है।

जनरल स्टोनवॉल जैकसन,

1824-1863

https://freehindipustakalya.blogspot.com

से कर रहे हैं।

पंद्रहवीं सदी में इटली में मिलान के वाईकॉन्ट्री के आख़िरी ड्यूक फ़िलिपो मारिया जान बूझकर लोगों की उम्मीद के विपरीत काम करते थे। उदाहरण के लिए, वे अचानक किसी दरबारी पर ध्यान देने लगते थे और जब वह पदोन्नति की उम्मीद करता था, तो वे उसे दुत्कारने लगते थे। दुविधाग्रस्त होकर वह आदमी दरबार से चला जाता था। लेकिन तभी ड्यूक उसे अचानक वापस बुलवा लेते थे और उससे दोबारा अच्छा व्यवहार करने लगते थे। अब वह दरबारी और भी दुविधा में पड़ जाता था। वह यह सोचने लगता था शायद ड्यूक को यह भनक लग गई होगी कि वह पदोन्नति के बारे में सोच रहा है। दरबारी यह सोचने लगता था कि शायद ड्यूक को यह बात बुरी लगी होगी। इसलिए वह इस तरह से व्यवहार करने लगता था जैसे उसे पदोन्नति की आशा ही न हो। यह देखने पर ड्यूक उसे महत्वाकांक्षा की कमी के लिए फटकारता था और अपने से दूर कर देता था।

ड्यूक फ़िलिपो के साथ तालमेल बैठाने का रहस्य सीधा सा था : यह अनुमान लगाने का जोखिम न लें कि वह क्या चाहता है। यह अनुमान लगाने की कोशिश न करें कि वह किस चीज़ से ख़ुश होता है। अपनी इच्छा बताएँ न सिर्फ़ उसकी इच्छा के सामने समर्पण कर दें। फिर इंतज़ार करें। इस तरह से ड्युक ने दुविधा और अनिश्चितता उत्पन्न करके बिना

किसी चुनौती के और पूरी शांति के साथ राज्य किया था।

लोग हमेशा आपके कार्यों के पीछे छिपे उद्देश्यों को समझने की कोशिश करते हैं, ताकि आपके ख़िलाफ़ रणनीति बनाई जा सके। इसलिए बिलकुल अप्रत्याशित क़दम उठाएँ और उन्हें सुरक्षात्मक होने पर मजबूर कर दें।

कुछ समय तक पाब्लो पिकासो ने अपनी पेंटिंग्स पॉल रोज़ेनबर्ग नाम के एक आर्ट डीलर को बेचीं। फिर एक दिन बिना किसी कारण के पिकासो ने उससे कहा कि अब वे उसे अपनी कोई पेंटिंग नहीं बेचेंगे। पिकासो ने इसके कारण को स्पष्ट करते हुए मन ही मन सोचा, "रोज़ेनबर्ग अगले अड़तालीस घंटों तक यह अनुमान लगाने की कोशिश करेगा कि ऐसा क्यों हुआ। कहीं ऐसा तो नहीं कि मैं अपनी पेंटिंग्स किसी दूसरे आर्ट डीलर को बेचना चाहता हूँ? मैं अपना काम करता रहूँगा और चैन की नींद सोऊँगा, जबकि रोज़ेनबर्ग हर पल चिंता करता रहेगा। दो दिन बाद वह मेरे पास परेशान हालत में आएगा और कहेगा, 'देखो दोस्त, मैं तुम्हें जितने पैसे देता हूँ, अगर मैं तुम्हें उससे ज़्यादा पैसे दूँ (काफ़ी ऊँची रक़म) दूँ, तब तो तुम मुझे मना नहीं करोगे, है ना?"

अप्रत्याशित व्यवहार सिर्फ़ दहशत फैलाने का ही हथियार नहीं है। हर दिन व्यवहार के तरीक़े को बदलने से आपके चारों तरफ़ उथल-पुथल होगी और लोगों की रुचि जाग्रत होगी। लोग आपके बारे में बातें करेंगे, ऐसे

https://freehindipustak.blogspot.com

उद्देश्य और स्पष्टीकरण सोचेंगे, जिनका सच्चाई से कोई लेना-देना ही नहीं है। वे लगातार आपके ही बारे में सोचते रहेंगे। परिणाम यह होगा कि आप जितने ज़्यादा मूडी दिखेंगे, आपको उतना ही ज़्यादा सम्मान हासिल होगा। सिर्फ़ अधीनस्थ लोग ही निश्चित तरीक़े से व्यवहार करते हैं।

तस्वीर : हवा, जिसके बारे में पहले से अनुमान नहीं लगाया जा सकता। बैरोमीटर में अचानक परिवर्तन, दिशा और वेग के अबूझ परिवर्तन। कोई सुरक्षा नहीं है : आँधी-तूफ़ान से दहशत और दुविधा का माहौल बनता है।

विशेषज्ञ की राय : बुद्धिमान शासक इतना रहस्यमय होता है कि ऐसा लगता है वह अबूझ है। वह इतना अस्पष्ट होता है कि कोई उसे जान नहीं पाता है। वह निष्क्रियता से सिंहासन पर बैठा रहता है, जबकि उसके मंत्री नीचे खड़े होकर काँपते रहते हैं। (हान फेई त्सू, चीनी दार्शनिक, तीसरी सदी, ई.पू.)

https://freehindipustakalya.blogspot.com

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम

18

अपनी सुरक्षा के लिए किले न बनाएँ - एकाकीपन ख़तरनाक है

विचार

दुनिया ख़तरनाक है और दुश्मन हर जगह हैं - हर एक को अपनी रक्षा करनी पड़ती है। किला सबसे सुरक्षित नज़र आता है। लेकिन किले में अलग-अलग रहना आपको जितने ख़तरों से बचाता है, उससे ज़्यादा ख़तरों को उत्पन्न करता है - यह आप तक बहुमूल्य जानकारी नहीं पहुँचने देता, यह आपको सबकी नज़रों में लाता है और नतीजा यह होता है कि आप आसान निशाना लक्ष्य बन जाते हैं। बेहतर होगा कि लोगों से मिलें-जुलें, साथी खोजें, सबसे जुड़ें। भीड़ के कारण आप अपने शत्रुओं से सुरक्षित रहेंगे।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

एकाकीपन तर्क की दृष्टि से ख़तरनाक है और इससे कोई भला नहीं होता है... याद रखें कि एकाकी मनुष्य निश्चित रूप से विलासी, शायद अंधविश्वासी और संभवतः पागल भी होता है।

डॉ. सेम्युअल जॉनसन, 1709-1784

शक्ति की कुंजी

मैकियावली का तर्क है कि सैन्य दृष्टि से किला बनाना एक ग़लती है। यह शक्ति के एकाकीपन का प्रतीक होता है और दुश्मनों के लिए आसान निशाना भी। आपकी सुरक्षा के लिए बनाया गया यह किला दरअसल आप तक मदद नहीं पहुँचने देता है और आपकी गतिविधियों को सीमित कर देता है। हो सकता है यह किला अभेद्य हो, लेकिन सब जानते हैं कि आप उसके भीतर हैं और घेराबंदी करने से आपका किला एक तरह की जेल बन जाता है। अंदर कम जगह होने के कारण किलों में अक्सर प्लेग जैसी महामारियाँ भी फैल सकती हैं। किला बनाने से सुरक्षा नहीं मिलती है और इससे जितनी समस्याएँ सुलझती हैं, उससे ज़्यादा समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।

चूँकि इंसान स्वभाव से सामाजिक होता है, इसलिए शक्ति सामाजिक आदान-प्रदान और व्यवहार पर निर्भर होती है। खुद को शक्तिशाली बनाने के लिए आपको चीज़ों के केंद्र में रहना होगा। हर गतिविधि आपके चारों तरफ़ घूमनी चाहिए। आपको सड़क पर होने वाली हर चीज़ की जानकारी होनी चाहिए और हर उस आदमी की भी, जो आपके ख़िलाफ़ साज़िश रच सकता हो। ज़्यादातर लोग तब ख़तरे में पड़ जाते हैं, जब वे जोखिम का सामना करते हैं। ऐसे समय वे पीछे हट जाते हैं और किले में सुरक्षा खोजने की कोशिश करते हैं। बहरहाल, ऐसा करने पर उन्हें सीमित व्यक्तियों से ही जानकारी मिल

https://freehindipustakalya.blogspot.com

पाती है और वे अपने आस-पास की घटनाओं के बारे में सही नज़रिया नहीं रख पाते हैं। वे रणनीतियाँ बनाने की क्षमता गँवा देते हैं और दुश्मनों के लिए आसान निशाना बन जाते हैं। उनका एकाकीपन उन्हें भ्रमित कर देता है। युद्ध और रणनीति के ज़्यादातर खेलों में एकाकीपन का परिणाम पराजय और मौत ही होती है।

अनिश्चितता और ख़तरे के क्षणों में आपको बिल के भीतर घुसने की इस इच्छा से बचना चाहिए। इसके बजाय लोगों से मेल-जोल बढ़ाएँ, पुराने सहयोगी खोजें, नए साथी बनाएँ और अलग-अलग समूहों में जाएँ। शक्तिशाली लोग सदियों से इसी तकनीक पर चल रहे हैं।

रोमन राजनेता सिसरो एक कम कुलीन परिवार में जन्मे थे और उनके शक्तिशाली बनने की संभावना बहुत कम थी। वे शक्तिशाली तभी बन सकते थे, जब वे शहर को नियंत्रित करने वाले सामंतों के बीच में जगह बना लें। इस काम में वे अद्भुत रूप से सफल हुए। उन्होंने सभी प्रभावशाली व्यक्तियों के बारे में जानकारी हासिल की और यह भी पता लगाया कि उनके तार एक-दूसरे से किस तरह जुड़े हैं। वे हर जगह घुलते-मिलते थे, हर एक को जानते थे और उनके संबंधों का जाल इतना बड़ा था कि यहाँ के एक दुश्मन को वहाँ के एक साथी से संतुलित किया जा सकता था।

चूँकि इंसान सामाजिक प्राणी है, इसलिए इसका यह मतलब है कि हमारे व्यवहार को सुखद बनाने वाली सामाजिक कलाएँ लगातार

लुई चौदहवाँ इस बात पर पूरा ध्यान देता था कि उसके दरबार में सभी सामंत मौजूद रहें। उठते-बैठते समय, भोजन के समय, वर्साय के बगीचे में - हर समय वह अपने आस-पास देखता था और हर चीज़ पर ध्यान देता था। अगर जाने-पहचाने सामंत स्थायी रूप से दरबार में नहीं रहते थे, तो वह चिढ़ जाता था। जो लोग वहाँ पर कभी नहीं दिखते थे या शायद ही कभी दिखते थे, उनसे वह बहुत गुस्सा रहता था। अगर उनमें से कोई उससे किसी तरह का एहसान चाहता था, तो सम्राट गर्व से कहता था : "मैं आपको जानता ही नहीं हूँ," और यह निर्णय अकाट्य होता था।

ड्यूक डे सेंट साइमन,
1675-1755

मिलने-जुलने से विकसित की जा सकती है। आप दूसरों के जितने ज़्यादा संपर्क में रहेंगे, आप उतने ही ज़्यादा शालीन और सहज बनेंगे। दूसरी तरफ़ एकाकीपन से आपका व्यवहार अजीब हो जाता है। इसका परिणाम यह होता है कि लोग आपसे कतराने लगते हैं और आप और भी ज़्यादा एकाकी हो जाते हैं।

किले की मानसिकता रखने के बजाय संसार को एक बड़े महल की तरह देखें, जिसका हर कमरा दूसरे कमरे से जुड़ा है। आपको अलग-अलग समूहों में रहने और अलग-अलग तरह के लोगों से मिलने-जुलने की ज़रूरत है। इस तरह के सामाजिक संपर्क से आप साज़िश करने वालों से बच जाएँगे, क्योंकि वे आपसे अपनी योजना छिपाकर नहीं रख पाएँगे। आप अपने दुश्मनों से भी बच जाएँगे, क्योंकि आपके समर्थक आपका साथ देंगे। हमेशा आगे बढ़ते रहें और महल के कमरों में आते-जाते रहें। कभी भी एक ही जगह पर रुके या बैठे न रहें। कोई भी शिकारी तेज़ी से भागते जानवर पर निशाना नहीं साध सकता।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

https://freehindipustakalya.blogspot.com

तस्वीर : किला। पहाड़ी की ऊँचाई पर बना किला हुक़ूमत का प्रतीक और नफ़रत का केंद्र बन जाता है। शहर के नागरिक आक्रमण करने वाले पहले शत्रु से मिलकर आपको धोखा देंगे। अगर संप्रेषण और बुद्धि से आपका नाता ख़त्म हो जाएगा, तो आपका किला आसानी से ढह जाएगा।

विशेषज्ञ की राय : जो अच्छा और समझदार राजा अपने बेटों को दमनकारी नहीं बनने देना चाहता, वह कभी किले नहीं बनाएगा, ताकि उसके बेटे किले की शक्ति पर विश्वास करने के बजाय अपनी प्रजा की सद्‌भावना पर विश्वास कर सकें। (निकोलो मैकियावली, 1469-1527)

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम

19

यह जानें कि आपके सामने कौन है - ग़लत व्यक्ति को नाराज़ न करें

विचार

दुनिया में कई तरह के लोग होते हैं। आपको यह कभी नहीं सोचना चाहिए कि हर व्यक्ति आपकी रणनीतियों पर एक ही तरीक़े से प्रतिक्रिया करेगा। कुछ लोगों के साथ जब धोखा या चालबाज़ी की जाती है, तो वे बदला लेने की तलाश में अपनी बाक़ी की ज़िंदगी बिता देते हैं। वे भेड़ की खाल में भेड़िए होते हैं। अपने शिकारों और विरोधियों को सावधानी से चुनें, लेकिन कभी भी ग़लत व्यक्ति को धोखा न दें या उस पर हमला न करें।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

विरोधी, मूर्ख और शिकार

शक्ति की सीढ़ी पर चढ़ते समय आपका सामना कई तरह के विरोधियों, मूर्खों और शिकारों से होगा। शक्ति हासिल करने की कला का सर्वोच्च रूप यह पहचानना है कि कौन भेड़िया है और कौन भेड़, कौन लोमड़ी है और कौन ख़रगोश, कौन बाज है और कौन गिद्ध। अगर आप इस फ़र्क़ को आसानी से पहचान लेते हैं, तो आप किसी पर ज़्यादा दबाव डाले बिना ही सफल हो जाएँगे। लेकिन अगर आप अपने रास्ते में आने वाले हर व्यक्ति से एक सा व्यवहार करेंगे, तो आपका जीवन दुख भरा रहेगा, बशर्ते आपका जीवन उतना लंबा चले। लोगों की प्रकृति पहचानने और उसके अनुरूप व्यवहार करने की योग्यता बहुत महत्वपूर्ण है। नीचे जंगल के पाँच अलग-अलग प्राणियों के सबसे ख़तरनाक और मुश्किल प्रकार दिए गए हैं।

तलवारबाज़ से मिलने पर अपनी तलवार निकालें। जो कवि न हो, उसे कविता न सुनाएँ।

एक बौद्ध ग्रंथ से, जिसका उद्धरण थंडर इन द स्काई में दिया गया है, थॉमस क्लियरी द्वारा अनूदित, 1993

घमंडी व्यक्ति। हालाँकि वह शुरुआत में इसे छिपा सकता है, लेकिन इस व्यक्ति का घमंड इसे बहुत ख़तरनाक बना देता है। अगर यह किसी भी तरह से अपमानित महसूस करता है, तो यह पूरी उग्रता से बदला लेता है। हो सकता है आप यह सोचें, "लेकिन मैंने तो यह एक पार्टी में कहा था। उस समय तो सब लोग नशे में थे..." बहरहाल, इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता है। उसकी अति-प्रतिक्रिया के पीछे कोई समझदारी नहीं होती, इसलिए उसका अनुमान लगाने में समय बर्बाद न करें। अगर आपको लगता है

कौआ और भेड़

एक परेशान करने वाला कौआ एक भेड़ की पीठ पर बैठ गया। भेड़ मजबूरन उसे काफ़ी समय तक इधर-उधर ढोती रही और फिर बोली, "अगर तुम किसी कुत्ते के साथ इस तरह का व्यवहार करते, तो वह तुम्हें अपने तेज़ दाँतों से मज़ा चखा देता।" इस पर कौए ने जवाब दिया, "मैं कमज़ोर लोगों को सताता हूँ और शक्तिशाली लोगों की चापलूसी करता हूँ। मैं जानता हूँ कि मैं किसे सता सकता हूँ और मुझे किसकी चापलूसी करनी चाहिए। मुझे आशा है कि इस नीति पर चलने से मैं काफ़ी समय तक ज़िंदा रहूँगा और अच्छे बुढ़ापे का आनंद लूँगा।"

फेबल्स, ईसप, छठवीं सदी ई. पू.

https://freehindipustakalya.blogspot.com

कि कोई व्यक्ति अति संवेदनशील और बेहद घमंडी है और आपने उसे चोट पहुँचा दी है, तो तत्काल भाग खड़े हों। आप उससे चाहे जिस चीज़ की आशा कर रहे हों, वह चीज़ इतनी मूल्यवान नहीं है कि आप रुकने का जोख़िम लें।

बहुत असुरक्षित व्यक्ति। यह व्यक्ति घमंडी व्यक्ति से संबंधित है, लेकिन उससे कम हिंसक है। ऐसे व्यक्ति का पता लगाना ज़्यादा मुश्किल होता है। उसका ईगो नाज़ुक होता है, वह बहुत असुरक्षित होता है और अगर उसे लगता है कि उसे धोखा दिया जा रहा है या उस पर हमला किया जा रहा है, तो वह मन ही मन सुगबुगाता रहेगा। वह छुटपुट हमले करता रहेगा, जो इतने बड़े नहीं होंगे कि आपको नज़र आएँ। अगर आपको लगता है कि आपने किसी ऐसे व्यक्ति को धोखा दिया है या नुक़सान पहुँचाया है, तो लंबे समय के लिए ग़ायब हो जाएँ। उसके आस-पास न रहें, वरना वह कुतर-कुतर कर आपको नष्ट कर देगा।

शंकालु व्यक्ति। ऊपर दी गई क़िस्मों का एक रूप भावी जोसेफ़ स्तालिन है। शंकालु व्यक्ति दूसरों में वही देखता है जो वह देखना चाहता है, जो आम तौर पर सबसे बुरा पहलू होता है। वह यह कल्पना करता है कि हर व्यक्ति उसके पीछे पड़ा है। शंकालु व्यक्ति दरअसल इन तीनों में सबसे कम ख़तरनाक है। चूँकि वह सचमुच असंतुलित होता है, इसलिए उसे धोखा देना

https://freehindipustakalya.blogspot.com

आसान होता है, जिस तरह स्तालिन को लगातार धोखा दिया जाता था। दूसरे लोगों के खिलाफ़ उसे उकसाने के लिए उसकी शंकालु प्रकृति का इस्तेमाल करें। लेकिन अगर आप उसके शक का निशाना बन जाएँ, तो सावधान रहें।

लंबी याददाश्त वाला साँप। अगर इसे चोट पहुँचाई गई या धोखा दिया गया, तो यह आदमी ऊपर से तो कोई ग़ुस्सा नहीं दिखाएगा, लेकिन अंदर ही अंदर वह योजना बनाता रहेगा और इंतज़ार करता रहेगा। फिर जब वह हमला करने की स्थिति में होगा, तो वह ठंडे दिमाग़ की चालाकी से बदला लेगा। इस तरह के आदमी को उसकी चालाकी और योजना बनाने की निपुणता से पहचानें, जो वह ज़िंदगी के दूसरे क्षेत्रों में दिखाता है। आम तौर पर वह भावहीन होता है और मिलनसार नहीं होता है। इस साँप के प्रति दोगुना सावधान रहें, और अगर आपने उसे किसी तरह का नुक़सान पहुँचाया है, तो या तो उसे पूरी तरह से नष्ट कर दें या फिर उसे अपनी नज़रों से दूर कर दें।

सामान्य, विनम्र और अक्सर बुद्धिहीन व्यक्ति। आह, इतने अच्छे शिकार के बारे में सुनकर आपके कान खड़े हो गए होंगे। लेकिन इसे धोखा देना उतना आसान नहीं है। अक्सर किसी प्रलोभन का शिकार होने के लिए बुद्धि और कल्पना की ज़रूरत होती है। जिसमें कल्पना या बुद्धि नहीं है, उसे संभावित पुरस्कारों का एहसास ही नहीं होगा। अज्ञानी आदमी चारा

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नहीं निगलेगा, क्योंकि वह इसे पहचानेगा ही नहीं। वह बहुत बुद्धिहीन होता है। इस व्यक्ति के साथ ख़तरा यह नहीं है कि वह आपको नुक़सान पहुँचाएगा या बदला लेगा, बल्कि सिर्फ़ यह है कि उसे धोखा देने की कोशिश में आप अपना समय, ऊर्जा, संसाधन और यहाँ तक कि बुद्धिमत्ता भी बर्बाद करेंगे। इस तरह के आदमी को पहचानने के लिए एक प्रयोग करें - कोई चुटकुला या कहानी तैयार रखें। अगर उसकी प्रतिक्रिया लचर हो, तो आपके सामने इसी तरह का व्यक्ति खड़ा है। अपने जोखिम पर ही आगे बढ़ें।

तस्वीर : शिकारी। वह भेड़िए और लोमड़ी के लिए एक सा जाल नहीं बिछाता है। वह वहाँ पर जाल नहीं बिछाता है, जहाँ शिकार के फँसने की संभावना न हो। वह अपने शिकार को अच्छी तरह से जानता है। वह उसकी आदतें और छिपने के ठिकाने जानता है और वह इन्हीं को ध्यान में रखकर शिकार करता है।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

विशेषज्ञ की राय : यह जान लें कि चाहे व्यक्ति कितना ही महत्वहीन या छोटा हो, वह कभी न कभी आपके काम आ सकता है, लेकिन अगर आपने उसका कभी अपमान किया है, तो वह आपके काम नहीं आएगा। ग़लतियों को अक्सर माफ़ कर दिया जाता है, लेकिन अपमान को कभी माफ़ नहीं किया जाता। हमारा गर्व इसे हमेशा याद रखता है। (लॉर्ड चेस्टरफ़ील्ड, 1694-1773)

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम

20

किसी के पिट्ठू न बनें

विचार

मूर्ख व्यक्ति ही हमेशा पिट्ठू बनने के लिए दौड़ लगाता है। ख़ुद के अलावा किसी भी व्यक्ति के पाले में न जाएँ। अपनी स्वतंत्रता क़ायम रखकर आप दूसरों के स्वामी बन जाते हैं, उनमें मनमुटाव फैलाते हैं और उन्हें अपनी तरफ़ दौड़ाते हैं।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

शक्ति की कुंजी

चूंकि शक्ति काफ़ी हद तक दिखावे पर निर्भर करती है, इसलिए आपको ऐसी तरकीबें सीखना चाहिए, जिनसे आपकी प्रतिष्ठा बढ़े। किसी व्यक्ति या समूह का पिट्ठू न बनना एक ऐसी ही तरकीब है। जब आप पिट्ठू नहीं बनते हैं, तो इससे सामने वाले को गुस्सा नहीं आता है, बल्कि उसके मन में आपके प्रति सम्मान उत्पन्न होता है। आप तत्काल शक्तिशाली बन जाते हैं, क्योंकि आप उस समूह या व्यक्ति के प्रलोभन या बंधन से दूर रहते हैं, जो ज़्यादातर लोग नहीं कर पाते हैं। शक्ति का यह आभामंडल समय के साथ बढ़ता जाता है : जब स्वतंत्र होने की आपकी छवि बढ़ती है, तो ऐसे लोगों की संख्या बढ़ती जाती है, जो आपको अपना पिट्ठू बनाना चाहते हैं और आपसे निष्ठा की उम्मीद रखते हैं। इच्छा वायरस की तरह होती है : अगर हम देखते हैं कि दूसरे लोग किसी को अपने साथ जोड़ना चाहते हैं, तो हम भी उसे अपने साथ जोड़ना चाहेंगे।

जिस पल आप पिट्ठू बन जाते हैं या समर्पित हो जाते हैं, यह जादू ख़त्म हो जाता है। आप भी बाक़ी सबकी तरह बन जाते हैं। लोग आपसे समर्पण करवाने के लिए सभी तरह के उचित-अनुचित उपाय आज़माएँगे। वे आपको तोहफ़े देंगे, आप पर एहसानों की बौछार करेंगे, सिर्फ़ इसलिए ताकि आप उनके एहसानों के बोझ तले दब जाएँ। दूसरे आप पर ध्यान दें, इस बात को प्रोत्साहित करें। उनकी रुचि को

ईर्ष्या की क़ीमत

जब एक गरीब औरत बाजार में पनीर बेचने के लिए खड़ी थी, तो एक बिल्ली आई और पनीर का एक टुकड़ा उठाकर ले गई। यह देखकर एक कुत्ते ने बिल्ली से वह टुकड़ा छीनने की कोशिश की। बिल्ली भी अड़ गई। दोनों में घमासान लड़ाई होने लगी। कुत्ता भौंकने और काटने लगा। बिल्ली थूकने और खरोंचने लगी, लेकिन उनके युद्ध का कोई नतीजा नहीं निकला। आख़िरकार बिल्ली ने सुझाव दिया, "हम लोमड़ी के पास चलते हैं और उससे यह मामला सुलझवाते हैं।" कुत्ते ने कहा, "ठीक है।" वे दोनों लोमड़ी के पास गए। लोमड़ी ने किसी न्यायाधीश की

https://freehindipustakalya.blogspot.com

तरह उनके तर्क सुने। उसने उन्हें फटकारते हुए कहा, "मूर्ख जानवरों! तुम दोनों लड़ते क्यों हो? अगर तुम दोनों चाहो, तो मैं इस पनीर को दो हिस्सों में बाँट देती हूँ। इससे तुम दोनों संतुष्ट हो जाओगे।" बिल्ली और कुत्ते ने इस बात पर कहा, "ठीक है।" लोमड़ी ने अपना चाकू निकाला और पनीर को दो हिस्सों में काट दिया, लेकिन लंबाई की तरफ़ से काटने के बजाय उसने इसे चौड़ाई की तरफ़ से काटा। कुत्ते ने विरोध करते हुए कहा, "मेरा हिस्सा छोटा है!" लोमड़ी ने न्यायपूर्ण ढंग से अपने चश्मे से कुत्ते के हिस्से को देखते हुए कहा, "तुम ठीक कह रहे हो, बिलकुल ठीक कह

प्रेरित करें, लेकिन किसी भी क़ीमत पर उनके पिट्ठू न बनें। अगर आप चाहें तो तोहफ़ों और एहसानों को स्वीकार कर सकते हैं, लेकिन इस बारे में सतर्क रहें कि आप अपने मन में किसी का पक्ष न लें। आप खुद को कृतज्ञ मानने की ग़लती हर्गिज़ न करें।

बहरहाल याद रखें : आपका लक्ष्य लोगों को दूर रखना नहीं है या ऐसा दिखना नहीं है कि आप किसी के हो ही नहीं सकते। महारानी एलिजाबेथ प्रथम की तरह आपको भी लगातार हवा देते रहना चाहिए, रुचि जगाते रहना चाहिए और लोगों को प्रलोभन देते रहना चाहिए, ताकि वे आपको अपना बनाने की कोशिशें करते रहें। फिर आपको उनके ध्यान को कभी-कभार मोड़ना भी चाहिए, लेकिन बहुत ज़्यादा दूर नहीं।

ग्रीक सेनापति एल्सिबायडेस इस खेल को बख़ूबी खेलते थे। एल्सिबायडेस ने एथेन्स की उस विशाल जलसेना का नेतृत्व किया था, जिसने 414 ई.पू. में सिसली पर आक्रमण किया था। जब ईर्ष्यालु एथेन्सवासियों ने युद्ध के बाद उन पर झूठे आरोप लगाकर उनका अपमान करने की कोशिश की, तो वे घर लौटकर झूठे मुकदमे का सामना करने के बजाय दुश्मनों यानी स्पार्टावासियों से जाकर मिल गए। फिर जब एथेन्सवासी सिरेकस में हार गए, तो एल्सिबायडेस स्पार्टा छोड़कर फ़ारस चले गए, हालाँकि स्पार्टा अब शक्तिशाली बन रहा था। बहरहाल, एथेन्स और स्पार्टा दोनों ही एल्सिबायडेस

https://freehindipustakalya.blogspot.com

का प्रलोभन देते रहे, क्योंकि फ़ारस में उनका काफ़ी प्रभाव था। फ़ारस में उन पर सम्मानों की बारिश इसलिए होती थी, क्योंकि एथेन्स और स्पार्टा पर उनका काफ़ी प्रभाव था। उन्होंने हर पक्ष से वादा किया, लेकिन किसी के साथ नहीं जुड़े और अंत तक सारे पत्ते अपने हाथ में ही रखे।

अगर आप शक्तिशाली और प्रभावशाली बनना चाहते हैं, तो एल्सिबायडेस की रणनीति को आज़माकर देखें : खुद को प्रतियोगी शक्तियों के बीच में रखें। किसी एक पक्ष को अपनी मदद के वादे से ललचाएँ। दूसरा पक्ष, जो हमेशा अपने दुश्मन से आगे निकलना चाहता है, अपने आप आपका पीछा करने लगेगा। जब दोनों ही पक्ष आपका ध्यान खींचने के लिए आपस में जूझेंगे, तो आप बहुत प्रभावशाली और योग्य दिखने लगेंगे। किसी एक पक्ष में जल्दी से शामिल हो जाने के बजाय अधबीच की स्थिति में आपके पास ज़्यादा शक्ति होगी।

1830 में फ्रांस की जुलाई क्रांति में तीन दिन के दंगों के बाद वृद्ध राजनेता टैलीरेंड पेरिस में अपनी खिड़की के पास बैठे थे। उन्हें घंटी बजने की आवाज़ सुनाई दी, जो इस बात का संकेत थी कि दंगे ख़त्म हो चुके हैं। उन्होंने एक सहयोगी की तरफ़ मुड़ते हुए कहा, "वाह, घंटियाँ बज रही हैं! हम जीत रहे हैं।" सहयोगी ने पूछा, " 'हम' से आपका क्या मतलब है, महाशय?" उसे चुप रहने का इशारा करते हुए टैलीरेंड ने जवाब दिया, "अब आगे एक शब्द

रहे हो!" इस पर उसने बिल्ली के हिस्से में से एक टुकड़ा खा लिया और कहा, "अब दोनों हिस्से बराबर हो गए!" जब बिल्ली ने लोमड़ी की हरकत देखी, तो वह चिल्लाने लगी, "ज़रा इधर देखो! अब मेरा हिस्सा छोटा हो गया है!" लोमड़ी ने दोबारा अपना चश्मा पहना और न्यायपूर्ण ढंग से बिल्ली के हिस्से को देखते हुए बोली, "तुम ठीक कह रही हो! एक मिनट रुको, मैं इसे ठीक कर देती हूँ।" और उसने कुत्ते के पनीर में से एक कौर खा लिया। यह सिलसिला काफ़ी समय तक चला और लोमड़ी कभी कुत्ते का, तो कभी बिल्ली का हिस्सा खाती रही। अंत में उसने उनकी आँखों के सामने ही उनका

पूरा चीज़ खा लिया।

ए ट्रेज़री ऑफ़ ज्यूइश फ़ोकलोर, नैथन आसुबेल द्वारा संपादित, 1948

भी मत बोलना! मैं तुम्हें कल बताऊँगा कि इस का क्या मतलब है।" वे अच्छी तरह जानते थे कि सिर्फ़ मूर्ख व्यक्ति ही जल्दबाज़ी में किसी स्थिति में उतरते हैं और बहुत जल्दी पिट्ठू बनकर अपनी रणनीतिक कुशलता गँवा देते हैं। इस स्थिति में लोग आपका सम्मान भी कम करते हैं : वे सोचते हैं कि चूँकि आप उनके साथ इतनी आसानी से जुड़ गए हैं, इसलिए आप कल किसी दूसरे के साथ भी इतनी ही आसानी से जुड़ जाएँगे। एक पक्ष के पिट्ठू बनने से आप समय का लाभ नहीं उठा पाते हैं और इंतज़ार की दौलत से वंचित रह जाते हैं। दूसरों को इस या उस समूह के प्रेम में पड़ने दें, आप न तो भागें, न ही अपना दिमाग़ी संतुलन खोएँ।

तस्वीर : ध्यान,
इच्छा और आराधना का केंद्र।
किसी भी पक्ष में शामिल न होना,
बल्कि उन्हें आपस में लड़कर मामला
सुलझाने के लिए प्रोत्साहित करना। महारानी
एलिज़ाबेथ अपने चारों तरफ़ घूमने वाले
दरबारियों को ग्रहों की तरह रखती थीं।
वे उनकी कक्षा में घूमना छोड़ नहीं
सकते थे, लेकिन वे उनके और
क़रीब भी कभी नहीं पहुँच
सकते थे।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

https://freehindipustakalya.blogspot.com

विशेषज्ञ की राय : किसी भी व्यक्ति के पक्ष में रहने का वायदा न करें, क्योंकि यह किसी दूसरे व्यक्ति का ग़ुलाम बनना है। स्वतंत्रता किसी भी तोहफ़े से ज़्यादा मूल्यवान होती है। आपको यह कोशिश नहीं करनी चाहिए कि आप किसी एक व्यक्ति पर ही निर्भर रहें, बल्कि आपको यह कोशिश करनी चाहिए कि कई लोग आप पर निर्भर रहें। सबसे बढ़कर, ख़ुद को सभी वायदों और एहसानों से मुक्त रखें - ये सामने वाले की चालें हैं, ताकि वह आप पर हुक़ूमत कर सके... (बाल्तेशर ग्रेशियन, 1601 -1658)

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम 21

मूर्ख बनाने के लिए मूर्ख बनने का नाटक करें - सामने वाले से ज़्यादा मूर्ख दिखें

विचार

कोई भी यह पसंद नहीं करता कि वह सामने वाले से ज़्यादा मूर्ख दिखाई दें। बहरहाल, इस नीति का लाभ यह है कि इससे आपके शिकार ख़ुद को आपसे ज़्यादा बुद्धिमान मान लेते हैं। जब उन्हें इस बात का विश्वास हो जाएगा, तो वे कभी यह शक नहीं करेंगे कि आप जैसे मूर्ख का कोई छिपा हुआ उद्देश्य भी हो सकता है।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

शक्ति की कुंजी

यह बर्दाश्त करना बहुत मुश्किल होता है कि कोई दूसरा हमसे ज़्यादा बुद्धिमान है। हम आम तौर पर इसे दूसरे तरीक़ों से तर्कसंगत साबित करने की कोशिश करते हैं : "उसके पास सिर्फ़ किताबी ज्ञान है, जबकि मेरे पास असली ज्ञान है।" "उसके माता-पिता ने उसकी अच्छी शिक्षा के लिए इतना ज़्यादा ख़र्च किया है। अगर मेरे माता-पिता के पास इतना पैसा होता, अगर मुझे इतनी अच्छी शिक्षा मिली होती..." "वह उतना स्मार्ट नहीं है, जितना वह सोचता है।"

चूँकि ज़्यादातर लोगों के आडंबर के लिए बुद्धिमत्ता का विचार इतना महत्वपूर्ण है, इसलिए यह बहुत महत्वपूर्ण है कि हम किसी व्यक्ति की मानसिक शक्ति का धोखे से भी कभी अपमान न करें या उस पर संदेह प्रदर्शित न करें। यह एक अक्षम्य अपराध है। लेकिन अगर आप इस कठोर नियम का पूरी तरह पालन कर सकते हैं, तो आप धोखा देने के बहुतेरे रास्ते खोल लेते हैं। चतुराई से लोगों को यह विश्वास दिलाएँ कि वे आपसे ज़्यादा बुद्धिमान हैं या आप उनसे थोड़े मंदबुद्धि हैं। इस तरह से आप उन्हें जंज़ीर से बाँध देते हैं। आपके द्वारा जगाई गई बौद्धिक श्रेष्ठता की भावना उनकी शंका की मांसपेशियों को शिथिल कर देगी।

1865 में प्रशिया के शासक ओट्टो वॉन बिस्मार्क चाहते थे कि ऑस्ट्रिया एक संधि पर हस्ताक्षर कर दे। यह संधि पूरी तरह से प्रशिया के हित में थी और ऑस्ट्रिया के हितों के विरुद्ध

इंसान को अपनी बुद्धि पर जितना गर्व होता है, उतना किसी और चीज पर नहीं होता, क्योंकि इसी की बदौलत उसे प्राणी जगत में सर्वश्रेष्ठ स्थान मिला है। किसी को भी यह एहसास न कराएँ कि आप बुद्धि के मामले में उससे श्रेष्ठ हैं। अपनी बुद्धि का ढिंढ़ोरा पीटना मूर्खता है। हालांकि पद और संपत्ति हमेशा समाज में ऊँचा स्थान पा सकते हैं, लेकिन बौद्धिक क्षमता यह पाने की कभी आशा नहीं कर सकती। बौद्धिक क्षमता को नज़रअंदाज़ करना ही सबसे अच्छा होता है। और लोग इस पर ध्यान सिर्फ़ इसलिए देते हैं क्योंकि वे या तो इसे असभ्यता मानते हैं या फिर ऐसी चीज़ जिस पर इसके मालिक का कोई

https://freehindipustakalya.blogspot.com

उचित अधिकार नहीं है और जिस पर वह खामख्वाह गर्व करने का दुस्साहस करता है। इसका बदला लेने के लिए लोग गोपनीय रूप से उसे किसी दूसरे तरीके से नुकसान पहुँचाने या अपमानित करने की कोशिश करते हैं और किसी उपयुक्त अवसर का इंतज़ार करते हैं। विनम्र व्यवहार करने वाला व्यक्ति भी अगर अपनी बौद्धिक श्रेष्ठता का दावा करता है, तो लोग उसे भी नज़रअंदाज़ नहीं करेंगे। गार्डन ऑफ रोज़ेस में सादी ने कहा है : "आपको यह जान लेना चाहिए कि समझदार लोग मूर्खों के साथ रहने से जितना बचते हैं, मूर्ख लोग समझदारों से मिलना उससे सौ गुना ज़्यादा नापसंद करते हैं। दूसरी

थी। बिस्मार्क जानते थे कि ऑस्ट्रिया वालों से हस्ताक्षर करवाने के लिए उन्हें कोई चाल चलनी पड़ेगी। ऑस्ट्रिया का कूटनीतिज्ञ काउंट ब्लोम ताश के पत्तों का चतुर खिलाड़ी था। उसका विशेष प्रिय खेल क्विंज था और वह अक्सर कहता था कि किसी के भी क्विंज खेलने का तरीक़ा देखकर वह उस व्यक्ति का चरित्र जान सकता है। बिस्मार्क ने ब्लोम के बारे में सुन रखा था।

संधि पर चर्चा के एक रात पहले बिस्मार्क ने ब्लोम के साथ क्विंज खेलने का प्रस्ताव रखा। बिस्मार्क ने बाद में लिखा है, "मैं इतने मूर्खतापूर्ण ढंग से खेला कि हर व्यक्ति हैरान रह गया। मैं कई हज़ार सिक्के हार गया, लेकिन मैं ब्लोम को मूर्ख बनाने में सफल हो गया, क्योंकि उसे विश्वास हो गया था कि मैं बहुत ही दुस्साहसी हूँ।" दुस्साहसी दिखने के अलावा बिस्मार्क ने मूर्ख होने का भी नाटक किया, मूर्खतापूर्ण बातें कहीं और घबराहट का अभिनय करते हुए बेसिरपैर की बातें करते रहे।

इस सबसे ब्लोम को ऐसा लगा कि उसने बहुमूल्य जानकारी इकट्ठी कर ली है। वह जानता था कि बिस्मार्क आक्रामक हैं - प्रशिया में उनकी पहले से ही ऐसी छवि बनी हुई थी और जिस तरीक़े से वह खेले थे, उससे इस बात की पुष्टि हुई थी। और ब्लोम जानता था कि आक्रामक लोग मूर्ख और जल्दबाज़ होते हैं। उसने सोचा कि बिस्मार्क जैसा असावधान मूर्ख ठंडे दिमाग़ से योजना बनाने और धोखा देने में

अच्छा होगा, इसलिए उसने समझौते पर एक उड़ती नज़र डाली और उस पर हस्ताक्षर कर दिए। जैसे ही स्याही सूखी, बिस्मार्क ने खुश होते हुए उससे कहा, "देखिए, मुझे यक़ीन नहीं था कि ऑस्ट्रिया का कोई भी राजनेता इस दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर कर सकता है!"

चीन में एक कहावत लोकप्रिय है, "शेर को मारने के लिए सुअर बनने का नाटक करना पड़ता है।" यह कहावत पुराने जमाने की शिकारी तरकीब से उत्पन्न हुई है, जिसमें शिकारी सुअर की खाल ओढ़ लेता है और उसकी आवाज़ की नक़ल करता है। शक्तिशाली शेर सोचता है कि कोई सुअर उसकी तरफ़ आ रहा है, इसलिए वह उसे क़रीब आने देता है। शेर इस बात पर खुश होता है कि उसका शिकार खुद चलकर उसके पास आ रहा है। लेकिन अंत में शिकारी ही खुश होता है।

सुअर का नाटक करना उन लोगों के साथ व्यवहार में चमत्कारी परिणाम देता है, जो शेर की तरह अति-आत्मविश्वासी और दंभी होते हैं। उन्हें आप जितने आसान शिकार लगेंगे, आप उतनी ही आसानी से बाज़ी पलट सकते हैं।

बुद्धि एक ऐसा गुण है, जिसका कम से कम प्रदर्शन करना चाहिए, लेकिन यहीं पर ही क्यों रुकें? पसंद और अभिरुचियाँ भी दंभ के पैमाने पर बुद्धि के आस-पास ही होती हैं। अगर आप लोगों को यह महसूस कराते हैं कि उनकी रुचियाँ आपसे ज़्यादा अभिजात्य हैं, तो उनका

तरफ़, मूर्ख बनना एक सच्ची अनुशंसा है। क्योंकि जिस तरह ठंड के मौसम में शरीर को गर्मी अच्छी लगती है। उसी तरह मस्तिष्क को अपनी श्रेष्ठता अच्छी लगती है। और हर व्यक्ति ऐसे व्यक्ति का साथ पसंद करेगा, जिससे उसे अधिक बुद्धिमान होने का एहसास हो, ठीक उसी तरह जिस तरह वह जाड़े के मौसम में आग के पास बैठना या धूप में घूमना पसंद करेगा। लेकिन इसका मतलब यह भी है कि श्रेष्ठता दिखाने के कारण उसे नापसंद किया जाएगा। अगर कोई व्यक्ति यह चाहता है कि लोग उसे पसंद करें, तो उसे बुद्धि के मामले में खुद को हीन दिखाना चाहिए।"

आर्थर शोपेनहार, 1788–1860

https://freehindipustakalya.blogspot.com

https://freehindipustakalya.blogspot.com

रक्षाकवच शिथिल हो जाएगा। वे आपको अपने आस-पास रखेंगे, क्योंकि आपके क़रीब रहने पर वे श्रेष्ठ महसूस करते हैं, और आप जितनी ज़्यादा देर तक उनके पास रहेंगे, आपको उन्हें धोखा देने के उतने ही ज़्यादा मौक़े मिलेंगे।

तस्वीर : ओपोसम नामक जानवर। मरने का नाटक करते समय ओपोसम मूर्खता का अभिनय करता है। बहुत से शिकारी जानवर इसे इसीलिए नहीं खाते हैं। कौन विश्वास कर सकता है कि इतना बदसूरत, बुद्धिहीन, डरपोक और छोटा जानवर इतना बड़ा धोखा दे सकता है?

https://freehindipustakalya.blogspot.com

विशेषज्ञ की राय : मूर्खता का इस्तेमाल करना सीखें : समझदार से समझदार व्यक्ति भी कई बार यह पत्ता चलता है। ऐसे मौक़े होते हैं, जब सबसे ज़्यादा समझदारी यह दिखाने में होती है कि आप कुछ नहीं जानते हैं। आपको अज्ञानी नहीं होना चाहिए, लेकिन इसका नाटक करने में निपुण होना चाहिए। मूर्खों के बीच में समझदार बनना उतना ही लाभकारी है, जितना कि पागलों के बीच में बुद्धिमान बनना। जो व्यक्ति मूर्ख बनने का नाटक करता है, वह मूर्ख नहीं होता है। सर्वाधिक लोकप्रिय होने का सर्वश्रेष्ठ तरीक़ा सबसे मूर्ख व्यक्ति की खाल ओढ़ना है। (बाल्तेसर ग्रेशियन, 1601-1658)

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम

22

समर्पण की चाल का प्रयोग करें : कमज़ोरी को शक्ति में बदलें

विचार

जब आप कमज़ोर हों, तो सम्मान के लिए कभी न लड़ें। इसके बजाय समर्पण करने का विकल्प चुनें। समर्पण से आपको दोबारा उठकर खड़े होने का समय मिल जाता है। इससे आपको अपने विजेता शत्रु को सताने और परेशान करने का समय भी मिल जाता है। इससे आपको उसकी शक्ति के घटने का इंतज़ार करने का समय मिल जाता है। उसे युद्ध में जीतने न दें - इससे पहले ही उसके सामने समर्पण कर दें। दूसरा गाल आगे करके आप उसे परेशान और विचलित कर देते हैं। समर्पण का प्रयोग शक्ति के औज़ार के रूप में करें।

https://freehindipustakalaya.blogspot.com

शक्ति की कुंजी

शक्ति के क्षेत्र में हम अक्सर इस कारण मुश्किल में फँस जाते हैं क्योंकि हम अपने दुश्मनों की चालों पर ज़रूरत से ज़्यादा प्रतिक्रिया कर देते हैं। इस अति-प्रतिक्रिया की वजह से ऐसी समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं, जिनसे हम बच सकते थे। इसकी उतनी ही तीव्र प्रतिक्रिया भी होती है, क्योंकि तब हमारा दुश्मन भी अति-प्रतिक्रिया करता है। हमारी पहली इच्छा हमेशा प्रतिक्रिया करने की होती है। जब हम पर आक्रमण होता है, तो हमारे मन में भी पलटकर आक्रमण करने की इच्छा होती है। लेकिन अगली बार जब कोई आपको धकाए और आप प्रतिक्रिया करने लगें, तो इसे आज़माकर देखें : विरोध न करें या पलटकर हमला न करें, बल्कि समर्पण कर दें, दूसरा गाल भी आगे कर दें, झुक जाएँ। आप पाएँगे कि इससे अक्सर आपके शत्रुओं का व्यवहार अनिश्चित हो जाता है। वे उम्मीद कर रहे थे कि आप पलटकर वार करेंगे, शक्ति से प्रतिक्रिया करें, लेकिन आपके विरोध न करने से वे विचलित हो जाएंगे और उनकी आशाओं पर पानी फिर जाएगा। समर्पण करके आप दरअसल स्थिति को नियंत्रित कर रहे हैं, क्योंकि आपका समर्पण एक बड़ी योजना का हिस्सा है। आप उन्हें यह विश्वास दिलाना चाहते हैं कि उन्होंने आपको हरा दिया है।

समर्पण की तरकीब का सार यह है : अंदर से आप दृढ़ रहते हैं, लेकिन बाहर से आप झुक

जब बड़ा जमींदार गुज़रता है, तो समझदार देहाती बहुत नीचे झुक जाता है और चुपचाप हवा निकाल देता है।

ईथोपिया की कहावत

https://freehindipustakalya.blogspot.com

जाते हैं। गुस्सा होने का कारण नहीं मिलने के कारण आपके विरोधी अक्सर बौखला जाते हैं। और इस बात की संभावना नहीं है कि वे इसके बाद आप पर और आक्रमण करेंगे। इस तरह से आपको इतना समय और जगह मिल जाती है, जिसमें आप उन्हें नीचे गिराने की योजना बना सकते हैं। बुद्धिमान व्यक्ति जब क्रूर और आक्रामक व्यक्ति के ख़िलाफ़ लड़ता है, तो समर्पण की तकनीक ही सर्वश्रेष्ठ हथियार है।

कई मामलों में लड़ने के बजाय समर्पण करना बेहतर होता है। अधिक शक्तिशाली विरोधी के सामने जब आपकी हार तय हो, तो अक्सर भागने के बजाय समर्पण करना ज़्यादा अच्छा होता है। भागने से आप कुछ समय के लिए तो बच सकते हैं, लेकिन आपका विरोधी अंततः आपको पकड़ ही लेगा। इसके बजाय अगर आप समर्पण कर देते हैं, तो आपको अपने दुश्मन के आस-पास रहने का मौक़ा मिलेगा और आप मौक़ा मिलते ही उस पर अपने ज़हरीले दाँत गड़ा सकते हैं।

473 ई.पू. में प्राचीन चीन में फूजियो के युद्ध में वू के शासक ने यू के राजा गूजियन को बुरी तरह हरा दिया। गूजियन भागना चाहता था, लेकिन उसके सलाहकार ने उसे यह सलाह दी कि वह समर्पण कर दे और वू के शासक की सेवा करे, ताकि वह सोच-विचार करके बदला लेने की योजना बना सके। उसकी सलाह पर अमल करते हुए गूजियन ने वू के शासक को अपनी सारी संपत्ति दे दी और राजा के

जब लंदन में फ्रांस-विरोधी भावना चरम सीमा पर थी, तब वोल्टेयर वहाँ निर्वासित जीवन गुज़ार रहे थे। एक दिन सड़क पर उन्हें गुस्सैल भीड़ ने घेर लिया। लोग चिल्लाने लगे, "इस फ्रांसीसी को फाँसी पर लटका दो। फाँसी पर लटका दो।" वोल्टेयर ने शांति से भीड़ को संबोधित करते हुए कहा : "इंग्लैंड के वासियों! आप मुझे इसलिए मारना चाहते हैं क्योंकि मैं फ्रांसीसी हूँ। क्या मेरे लिए यही सज़ा काफ़ी नहीं है कि मैं इंग्लैंड के बजाय फ्रांस में पैदा हुआ हूँ?" भीड़ ने उनके शब्दों पर तालियाँ बजाई और उन्हें सुरक्षित उनके घर तक पहुँचाया।

द लिटिल ब्राउन बुक ऑफ एनेक्डोट्स, 1985, संपादक क्लिफटन फ़ैडिमेन

अस्तबल में सेवक का काम करने लगा। तीन साल तक वह वू के शासक के सामने झुकता रहा। आख़िरकार वू के शासक को उसकी वफ़ादारी पर भरोसा हो गया और उसने उसे घर लौटने की इजाज़त दे दी। बहरहाल गूजियन ने इन तीन सालों में बहुत सी जानकारी इकट्ठी कर ली थी और बदले की योजना बना ली थी। जब वू राज्य में भयंकर सूखा पड़ा और आंतरिक उथल-पुथल के कारण राज्य कमज़ोर पड़ गया, तो गूजियन ने सेना इकट्ठी की और वू पर हमला करके उसे आसानी से जीत लिया। समर्पण में शक्ति होती है : इससे आपको ज़बर्दस्त प्रतिशोध की योजना बनाने का समय मिल जाता है। अगर गूजियन भाग गया होता, तो उसे यह मौक़ा कभी नहीं मिलता।

शक्ति हमेशा परिवर्तनशील होती है - चूँकि इस खेल की प्रकृति ही गतिशील और संघर्षमयी है, इसलिए शक्तिशाली लोग अंततः नीचे की तरफ़ आते हैं। अगर आप पाएँ कि आप अस्थायी तौर पर कमज़ोर हो गए हैं, तो दोबारा शक्तिशाली बनने के लिए समर्पण की तकनीक आदर्श है। यह तकनीक आपकी महत्वाकांक्षा को छिपा देती है। यह आपको धैर्य और आत्म-नियंत्रण भी सिखाती है, जो खेल के प्रमुख गुण हैं। इसके अलावा, इसके कारण आप अपने विरोधी के अकस्मात पतन का फ़ायदा उठाने की सर्वश्रेष्ठ स्थिति में रहते हैं। अगर आप भाग जाते हैं या पलटकर लड़ते हैं, तो लंबे समय में आप नहीं जीत सकते हैं।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

https://freehindipustakalya.blogspot.com

अगर आप समर्पण कर देते हैं, तो लगभग हमेशा जीत आप ही की होती है।

तस्वीर : बलूत का पेड़। बलूत का जो पेड़ तेज़ हवाओं से लड़ता है, उसकी शाखाएँ एक-एक करके टूट जाती हैं। जब इसकी रक्षा के लिए कुछ नहीं बचता है, तो इसका तना भी टूट जाता है। दूसरी ओर, बलूत का जो पेड़ झुक जाता है, वह ज़्यादा समय तक ज़िंदा रहता है, उसका तना ज़्यादा चौड़ा होता है, उसकी जड़ें ज़्यादा गहरी होती हैं और वह ज़्यादा शक्तिशाली होता है।

विशेषज्ञ की राय : तुमने यह कहावत सुनी होगी, आँख के बदले आँख, दाँत के बदले दाँत। लेकिन मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम बुराई का प्रतिरोध मत करो, बल्कि जो तुम्हारे दाएँ गाल पर मारे, उसकी तरफ़ बायाँ गाल भी कर दो। और अगर कोई आदमी तुम पर मुकदमा करके तुम्हारा कोट ले ले, तुम उसे अपना दुशाला भी दे दो। और अगर कोई तुम्हें एक मील चलने के लिए मजबूर करे, तो तुम दो मील तक चलो। (ईसा मसीह मैथ्यू 5:38-41)

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम

23

अपनी शक्तियों को केंद्रित करें

विचार

अपनी शक्तियों और ऊर्जा को सबसे मज़बूत बिंदु पर केंद्रित करें। बहुत सी खानों को थोड़ा-थोड़ा खोदने की कोशिश करने के बजाय एक ही समृद्ध खान को गहराई तक खोदने से ज़्यादा फ़ायदा होता है। केंद्रित प्रयासों की जीत होती है और निखरे हुए प्रयासों की हार होती है। अपनी प्रगति के लिए शक्ति के स्रोतों की तलाश करते समय एक मुख्य संरक्षक खोजें - ऐसी मोटी गाय, जो आपको लंबे समय तक दूध देती रहे।

सबसे शक्तिशाली बनना ही सबसे अच्छी रणनीति है। पहले तो सामान्य रूप से शक्तिशाली बनें, फिर निर्णायक बिंदु पर... अपनी शक्तियों को केंद्रित रखने से ज़्यादा अच्छा और आसान रणनीतिक नियम दूसरा नहीं है... संक्षेप में, पहला सिद्धांत है : पूरी एकाग्रता से काम करें।

ऑन वार, कार्ल वॉन क्लॉज़ेविट्ज़

1780-1831

शक्ति की कुंजी

दुनिया विभाजित है। यह विभाजन महामारी की तरह फैला है - देशों में, राजनीतिक समूहों में, परिवारों में, यहाँ तक कि व्यक्तियों में भी। हम सब पूरी तरह से विभाजित अवस्था में हैं और अपने मस्तिष्क को किसी एक दिशा में स्थिर नहीं रख पाते हैं, क्योंकि हमारा ध्यान हज़ारों दिशाओं में भटकता रहता है। आधुनिक दुनिया के संघर्ष का स्तर पहले से बहुत ऊँचा है और हमने इसे अपने जीवन में उतार लिया है।

समाधान है ख़ुद के भीतर वापस लौटना, अतीत में विचार और कार्य के अधिक एकाग्र रूपों की तरफ़ वापस लौटना। नेपोलियन जानता था कि अपनी शक्तियों को दुश्मन के सबसे कमज़ोर हिस्से पर केंद्रित करना कितना महत्वपूर्ण है - यही युद्ध के मैदान में उसकी सफलता का रहस्य था। उसकी इच्छाशक्ति और उसका मस्तिष्क दोनों ही इस अवधारणा के अनुरूप ढले हुए थे : एक उद्देश्य के प्रति पूरी तरह समर्पित मानसिकता, एक ही लक्ष्य पर पूरी एकाग्रता विचलित मनोदशा वाले और कम एकाग्र लोगों के ख़िलाफ़ इन गुणों का प्रयोग उसी तरह का प्रभाव डालता, जिस तरह कोई तीर हर बार अपने निशाने पर पहुँचता है और दुश्मन घबरा जाता है।

कैसेनोवा ने जीवन में अपनी सफलता का राज़ यह बताया था कि उनमें एक लक्ष्य पर केंद्रित रहने की योग्यता थी। वे एकाग्रता से अपने लक्ष्य का तब तक पीछा करते थे, जब

https://freehindipustakalya.blogspot.com

https://freehindipustakalaya.blogspot.com

तक वे उसे हासिल कर लें। जिन महिलाओं को वे पाना चाहते थे, वे पूरी तरह से उनके पीछे पड़ जाते थे। इसी वजह से वे इतने मनमोहक लगते थे और सफल होते थे। जब कोई महिला कुछ हफ़्ते या महीने तक उनके प्रभावक्षेत्र में रहती थी, तो वे किसी दूसरी चीज़ के बारे में सोचते तक नहीं थे। जब उन्हें वेनिस की एक जेल में बंद कर दिया गया, जहाँ से कोई कैदी पहले कभी नहीं भागा था, तो उन्होंने हर दिन अपने मस्तिष्क को वहाँ से भागने के लक्ष्य पर केंद्रित किया। उन्होंने महीनों तक सुरंग खोदी, लेकिन तभी उनकी कालकोठरी बदल दी गई। उनकी सारी मेहनत बेकार चली गई, लेकिन इससे वे हताश नहीं हुए। वे लगन से अपने लक्ष्य की दिशा में मेहनत करते रहे और अंततः भागने में कामयाब हो ही गए। उन्होंने बाद में लिखा है, "मेरा हमेशा यह विश्वास रहा है कि जब कोई इंसान अपने दिमाग में कोई चीज़ ठान लेता है और उसकी योजना पर अमल करने में पूरी तरह से जुट जाता है, तो वह अवश्य सफल होता है, चाहे राह में कितनी ही बाधाएँ क्यों न हों। वह इंसान चाहे तो महामंत्री या पोप भी बन सकता है।"

शक्ति की दुनिया में आपको लगातार अपने से ज़्यादा शक्तिशाली लोगों की मदद की ज़रूरत होगी। मूर्ख आदमी एक से दूसरे व्यक्ति की तरफ़ भटकता रहता है और यह मानता है कि वह ज़्यादा लोगों से संपर्क करके सफल हो जाएगा। बहरहाल अगर आप शक्ति के किसी

अपनी शक्तियों की बर्बादी करने के बारे में सावधान रहें। अपनी शक्तियों को हमेशा एकाग्र करने की कोशिश करें। जिनियस व्यक्ति जब दूसरों को कुछ करते देखता है, तो यह सोचने लगता है कि वह हर काम कर सकता है, लेकिन बहुत से काम करने पर बहुत सी ग़लतियाँ भी होंगी, जिस पर उसे पश्चाताप होना तय है।

जोहानन गेटे,

1749-1832

https://freehindipustakalya.blogspot.com

एक अच्छे स्त्रोत से जुड़ जाएँ, तो एकाग्रता के नियम से बहुत सी ऊर्जा बचती है और ज़्यादा शक्ति भी हासिल होती है। वैज्ञानिक निकोला टेसला इसी कारण बर्बाद हो गए, क्योंकि उन्होंने किसी एक संरक्षक की सेवा न करके अपनी स्वतंत्रता बनाए रखी। जब जे. पी. मॉर्गन ने उनके सामने एक बहुत बढ़िया प्रस्ताव रखा, तो उन्होंने उसे ठुकरा दिया। अंततः टेसला की "स्वतंत्रता" का परिणाम यह हुआ कि वे किसी एक संरक्षक पर निर्भर नहीं रह सकते थे, बल्कि उन्हें हमेशा दर्जन भर संरक्षक खोजने पड़ते थे। अपनी ज़िंदगी के आख़िरी दौर में उन्हें अपनी ग़लती का एहसास हुआ। एक संरक्षक आपकी वफ़ादारी की सराहना करता है और आपकी सेवाओं पर निर्भर हो जाता है। आगे चलकर मालिक सेवक की सेवा करने लगता है।

अंतिम विश्लेषण में, शक्ति हमेशा एकाग्रता में निहित होती है। हर संगठन में एक छोटा समूह ही शक्ति का संचालन करता है। और अक्सर वे ऐसे लोग होते हैं, जिनके पास पदनाम नहीं होते हैं। आपको यह पता लगाना चाहिए कि बागडोर किसके हाथ में है, पर्दे के पीछे असली निर्देशक कौन है। रिचलिऊ सत्रहवीं सदी की शुरुआत में फ्रांस के राजनीतिक परिदृश्य में तरक्की करना चाहते थे। उन्हें यह पता चला कि महत्वपूर्ण निर्णय सम्राट लुई तेरहवें नहीं, बल्कि उनकी माँ लेती थीं। इसलिए वे लुई तेरहवें की माँ के साथ जुड़ गए और दरबारियों की जमात

को भेदते हुए सबसे ऊपर पहुँच गए।

एक जगह की खुदाई में ही पर्याप्त तेल निकल आएगा - इससे आप ज़िंदगी भर दौलतमंद और शक्तिशाली बन जाएंगे।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

तस्वीर : तीर। आप एक तीर से दो निशाने नहीं लगा सकते। अगर आपके विचार भटकते रहेंगे, तो आपका निशाना दुश्मन के हृदय पर नहीं लगेगा। मस्तिष्क और तीर को एक बन जाना चाहिए। मानसिक और शारीरिक शक्ति की एकाग्रता से ही आपका तीर निशाने पर लगेगा और शत्रु के हृदय के पार निकल जाएगा।

विशेषज्ञ की राय : एकाग्रता को बिखराव से ज़्यादा बहुमूल्य मानें। पूर्णता संख्या में नहीं, बल्कि गुणवत्ता में होती है। बहुत से काम करने में लगने वाला व्यक्ति कभी औसत से ज़्यादा ऊपर नहीं उठ पाता है। बहुत ज़्यादा रुचियों वाले लोगों का दुर्भाग्य यह होता है कि वे हर मामले में हाथ तो डालते हैं, लेकिन उनकी पकड़ किसी पर नहीं होती है। एकाग्रता से ऊँचा स्थान मिलता है और इससे इंसान बहुत ऊँचाई पर पहुँच जाता है। (वाल्तेसर ग्रेशियन, 1601-1658)

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम
24

आदर्श दरबारी की भूमिका निभाएँ

विचार

आदर्श दरबारी एक ऐसे संसार में प्रगति करता है, जहाँ हर चीज़ शक्ति और राजनीतिक कौशल के इर्द-गिर्द घूमती है। उसने परोक्षता की कला में महारत हासिल कर ली है। वह चापलूसी करता है, श्रेष्ठ लोगों के सामने झुकता है और बाक़ियों पर अपनी शक्ति का प्रयोग बहुत ही अप्रत्यक्ष और शालीन अंदाज़ में करता है। दरबारी बनने के नियम सीखें और उनका इस्तेमाल करें। इसके बाद आप दरबार में कितनी ऊँचाई तक पहुँचेंगे, इसकी कोई सीमा नहीं है।

दरबार की राजनीति के नियम

प्रदर्शन से बचें। इसमें समझदारी नहीं है कि आप अपने बारे में डींगें हाँकते रहें या अपने कामों का बखान करते रहें। आप अपने कामों के बारे में जितना ज़्यादा बोलते हैं, लोग आपके उद्देश्य के बारे में उतना ही ज़्यादा शक करते हैं। इससे आपके साथी भी आपसे जलने लगते हैं। इस कारण वे पीठ पीछे आपकी आलोचना करते हैं और आपको नीचे गिराने की कोशिश करते हैं।

उदासीनता का अभ्यास करें। कभी भी ज़्यादा मेहनत करते न दिखें। ऐसा लगना चाहिए कि आपकी प्रतिभा सहजता से प्रवाहित हो रही है। ऐसा लगना चाहिए कि आप उस काम को बड़ी आसानी से कर देते हैं। मेहनती व्यक्ति के बजाय प्रतिभाशाली व्यक्ति की छवि बनाएं। लोगों को इस बात पर हैरानी नहीं होनी चाहिए कि इस काम में इतनी मेहनत क्यों करनी पड़ी, बल्कि इस बात पर हैरानी होनी चाहिए कि आपने इतना बड़ा काम कितनी आसानी से कर दिया।

चापलूसी में कंजूसी करें। ऐसा लग सकता है कि आपके ऊपर बैठे लोग चापलूसी के भूखे हैं और उनकी भूख कभी ख़त्म नहीं होती है, लेकिन किसी भी चीज़ के ज़्यादा होने पर उसका मूल्य कम हो जाता है। अप्रत्यक्ष चापलूसी करना सीखें - उदाहरण के लिए, अपने योगदान को कम महत्व दें, ताकि आपके बॉस की छवि ज़्यादा अच्छी दिखे।

दरबार को जानने वाला व्यक्ति अपने हाव - भाव, आँखों और चेहरे का स्वामी होता है। वह गंभीर और अबूझ होता है। यह बुरी स्थितियों में नाटक करता है, अपने दुश्मनों से मुस्कराकर बात करता है, अपनी चिढ़ को नियंत्रित करता है, अपनी भावनाओं को छिपाता है, अपने मन की बात उजागर नहीं करता है और अपनी भावनाओं के विरुद्ध बोलता तथा काम करता है।

ज्याँ डे ला ब्रूअर

1645-1696

https://freehindipustakalya.blogspot.com

विनम्र होने में समझदारी है। इसी तरह असभ्यता मूर्खता है। अनावश्यक असभ्यता से दुश्मन बनाना उतना ही बड़ा पागलपन है, जितना कि अपने घर में आग लगाना। विनम्रता एक झूठा सिक्का है, जिसमें कंजूसी बरतना मूर्खता है। समझदार आदमी इसका प्रयोग उदारता से करता है... मोम प्रकृति से कठोर और भंगुर होता है, लेकिन थोड़ी गर्मी से उसे नरम बनाकर मनचाहा आकार दिया जा सकता है। इसी तरह विनम्र और दोस्ताना बनकर आप लोगों को अपने साँचे में ढाल सकते हैं और उनसे काम निकलवा सकते हैं, भले ही वे स्वभाव से दुष्ट और दुर्भावना रखने

https://freehindipustakalya.blogspot.com

लोगों की नज़रों में रहने की कोशिश करें।

यह एक विरोधाभास है : आप दुस्साहसी तरीके से ऐसा नहीं कर सकते हैं, लेकिन आपको सबकी नज़रों में भी रहना है। अगर शासक दरबारियों के झुंड में आपको नहीं पहचान पाता है, तो आपकी तरक्की की कोई संभावना नहीं है। इस काम में बहुत कला की ज़रूरत होती है। शुरुआत में अक्सर इसका मतलब यह होता है कि आपका शरीर शासक की नज़रों के सामने रहे। अपने शारीरिक हुलिये की तरफ़ ध्यान दें और इसके बाद एक विशिष्ट शैली और छवि बनाने का तरीक़ा खोजें।

सामने वाले के हिसाब से अपनी शैली और भाषा बदलें। समानता में छद्म विश्वास एक भयंकर ग़लती है। यह सोचना ग़लत है कि हर व्यक्ति के साथ एक ही तरह से बात और व्यवहार करना चाहिए, चाहे उसका पद कोई भी हो। यह सोचना तो और भी ग़लत है कि ऐसा करके आप सभ्यता के नियमों का पालन कर रहे हैं। आपके नीचे के लोग यह मानेंगे कि ऐसा करते समय आप अपने स्तर से नीचे उतर रहे हैं और उनका यह सोचना सही है। यही नहीं, आपके ऊपर के लोगों को यह बात बुरी लगेगी, हालाँकि हो सकता है वे ऐसा न मानें। आपको हर व्यक्ति के हिसाब से बोलना सीखना चाहिए और अपनी शैली बदलने का अभ्यास करना चाहिए। यह झूठ बोलना नहीं है, यह तो अभिनय है। और अभिनय ईश्वर द्वारा प्रदत्त गुण नहीं है; यह तो एक ऐसी कला है, जिसे

हम इसी दुनिया में सीखते हैं।

बुरी खबर न सुनाएँ। राजा बुरी ख़बर लाने वाले संदेशवाहक को मरवा देता है। यह कहावत पुरानी है, लेकिन इसमें सच्चाई है। आपको यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि बुरी ख़बर आप नहीं, बल्कि आपका कोई सहकर्मी सुनाए। यह सुनिश्चित करने के लिए आपको संघर्ष करना चाहिए और अगर ज़रूरत पड़े, तो झूठ बोलना या धोखा भी देना चाहिए।

कभी अपने बॉस के साथ दोस्ती और अंतरंगता न दिखाएँ। बॉस अधीनस्थ को मित्र नहीं बनाना चाहता है, वह तो अधीनस्थ को उसकी जगह पर रखना चाहता है। अंतरंग या दोस्ताना तरीक़े से उससे पेश न आएँ। ऐसा न जताएँ कि आप उसके दोस्त बन गए हैं - यह काम उसे करने दें।

अपने से ऊपर बैठे लोगों की प्रत्यक्ष बुराई न करें। यह बात स्पष्ट है, लेकिन कई बार ऐसे मौक़े आते हैं, जब किसी तरह की आलोचना ज़रूरी होती है। उस दौरान चुप रहने या कोई सलाह न देने के दूसरी तरह के जोखिम उत्पन्न होते हैं। बहरहाल आपको अपनी सलाह या आलोचना अप्रत्यक्ष तरीक़े से और यथासंभव विनम्रता से देना चाहिए।

अपने से ऊपर बैठे लोगों से एहसान माँगने में किफ़ायत बरतें। मालिक को सबसे ज़्यादा बुरा इस बात से लगता है कि वह किसी के आग्रह को अस्वीकार कर दे। इससे अपराधबोध

वाले हों। विनम्रता इंसान के स्वभाव पर वही असर डालती है, जो गर्मी मोम पर डालती है।

आर्थर शोपेनहार

1788-1860

https://freehindipustakalya.blogspot.com

https://freehindipustakalya.blogspot.com

और द्वेष उत्पन्न होता है। कम एहसान माँगे, और कब रुकना है, यह जान लें। सबसे महत्वपूर्ण बात : किसी दूसरे व्यक्ति के लिए एहसान न माँगे, कम से कम किसी मित्र के लिए तो हर्गिज़ न माँगे।

कभी भी हुलिये या रुचि के बारे में मज़ाक न करें। चुलबुला वाकचातुर्य और हास्यपूर्ण स्वभाव अच्छे दरबारी के अनिवार्य गुण हैं, और ऐसे समय आते हैं, जब हँसी-मज़ाक, अच्छा तथा मनोरंजक होता है। लेकिन हुलिये या रुचि के बारे में किसी भी तरह के मज़ाक से बचें, क्योंकि ये दोनों क्षेत्र बहुत ही संवेदनशील हैं, ख़ास तौर पर आपसे ऊपर बैठे लोगों के लिए।

दरबार के आलोचक न बनें। दूसरों के अच्छे काम की तारीफ़ करें। अगर आप लगातार अपने समकक्षों या अधीनस्थों की बुराई करते रहेंगे, तो उस आलोचना का कुछ हिस्सा आपसे भी चिपक रह जाएगा और आप जहाँ भी जाएँगे, वह आपके ऊपर एक भूरे बादल की तरह मँडराता रहेगा। लोग आपकी हर नई आलोचनात्मक टिप्पणी पर कसमसाने लगेंगे और चिढ़ जाएंगे। दूसरों की उपलब्धियों की छुटपुट प्रशंसा करके आप विरोधाभासी रूप से अपनी उपलब्धियों की तरफ़ ध्यान आकर्षित करते हैं।

ख़ुद को देखते रहें। दर्पण एक चमत्कारी आविष्कार है। यह न हो, तो आपसे सौंदर्य और सजावट के ख़िलाफ कई बड़े अपराध हो सकते हैं। आपको अपने कामों के लिए भी एक

https://freehindipustakalya.blogspot.com

दर्पण की ज़रूरत होती है। कई बार तो इसका मतलब दूसरों से अपने बारे में राय लेना है, लेकिन यह सबसे विश्वसनीय तरीक़ा नहीं है। आपको अपना दर्पण ख़ुद होना चाहिए और अपने मस्तिष्क को ख़ुद को उसी तरह देखने का प्रशिक्षण देना चाहिए, जिस तरह दूसरे लोग देखते हैं। क्या आप बहुत ज़्यादा चाटुकारिता से काम कर रहे हैं? क्या आप ख़ुद काम करने की बहुत ज़्यादा कोशिश कर रहे हैं? अगर आप ख़ुद को देखते रहेंगे, तो आप ग़लतियों के पहाड़ से बच जाएँगे।

अपनी भावनाओं के स्वामी बनें। किसी महान अभिनेता की तरह आपको मौक़े के हिसाब से सही समय पर रोना और हँसना सीखना चाहिए। आपको अपने ग़ुस्से और कुंठा को छिपाना तो आना ही चाहिए, अपनी संतुष्टि और सहमति को छिपाना भी आना चाहिए। आपको अपने चेहरे के भावों का स्वामी होना चाहिए।

समय के साथ चलें। अतीत की हल्की सी झलक लोगों को आकर्षित कर सकती है, बशर्ते आप कम से कम बीस साल पहले का समय चुनें। दस साल पहले के फ़ैशन के कपड़े पहनना हास्यास्पद हो सकता है, जब तक कि आप दरबार के मसखरे न बनना चाहें। आपकी मनोदशा और चिंतन समय के साथ चलना चाहिए, भले ही समय आपकी संवेदनाओं के अनुरूप न हो। बहरहाल अगर आप बहुत ज़्यादा आगे की सोचेंगे, तो कोई भी आपको नहीं समझ पाएगा।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

आनंद का स्रोत बनें। यह बेहद महत्वपूर्ण है। मानवीय स्वभाव का यह स्पष्ट नियम है कि हम अप्रिय और बुरी चीज़ों से दूर भागते हैं, जबकि आकर्षण और आनंद की तरफ़ उसी तरह खिंचे चले आते हैं, जिस तरह पतंगे दीये की लौ की तरफ़ खिंचे चले आते हैं। इसकी भी अलग-अलग सीमा होती है : हर व्यक्ति प्रिय नहीं बन सकता है, क्योंकि सबको आकर्षण और हाजिरजवाबी का वरदान नहीं मिलता है। लेकिन हम सब अपने अप्रिय गुणों को नियंत्रित कर सकते हैं और ज़रूरत पड़ने पर उन्हें छिपा भी सकते हैं।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम

25

ख़ुद को नए साँचे में ढालें

विचार

समाज द्वारा लादी गई भूमिकाओं को स्वीकार न करें। एक नई पहचान बनाकर ख़ुद को नए साँचे में ढालें। अपनी एक ऐसी पहचान बनाएँ, जिसकी तरफ़ लोगों का ध्यान जाए और वे आपसे कभी न ऊबें। दूसरों की बनाई छवि के हिसाब से जीने से बेहतर यह है कि आप अपनी छवि ख़ुद बनाएँ। अपने सार्वजनिक कार्यों और मुद्राओं में नाटकीय तरीकों का प्रयोग करें - इससे आपकी शक्ति बढ़ेगी और आपका क़द ज़िंदगी से बड़ा नज़र आएगा।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

शक्ति की कुंजी

जिस चरित्र के साथ आप पैदा होते हैं ज़रुरी नहीं है कि वह ज़िंदगी भर बरकरार रहे। जो गुण आपको आनुवंशिक रूप से मिले हैं, उनके अलावा माता-पिता, मित्र और सहकर्मी आपके व्यक्तित्व को आकार देने में मदद करते हैं। शक्तिशाली व्यक्तित्व का सबसे मुश्किल काम इस प्रक्रिया की बागडोर थामना है और इस बात से बचना है कि दूसरे लोग अपने मनचाहे साँचे में ढालें। अपने चरित्र को शक्तिशाली बनाएँ। ख़ुद पर उसी तरह काम करें, जिस तरह कुम्हार गीली मिट्टी पर करता है। यह ज़िंदगी का सबसे महान और आनंददायक काम होना चाहिए। इससे आप दरअसल एक कलाकार बन जाते हैं - एक ऐसा कलाकार, जो ख़ुद का निर्माण करता है।

स्वयं के निर्माण की प्रक्रिया का पहला क़दम है आत्म-चेतना - यह जानना कि आप एक अभिनेता हैं और आपको अपने हुलिये तथा भावनाओं का नियंत्रण अपने हाथ में रखना है। जैसा दिदरो ने कहा है, बुरा अभिनेता वो है, जो हमेशा संजीदा होता है। समाज में जो लोग अपने दिल को आस्तीन पर लेकर चलते हैं, वे ऊब और परेशानी का कारण होते हैं। उनकी सच्चाई भले ही सबके सामने हो, लेकिन उन्हें गंभीरता से लेना मुश्किल होता है। जो लोग जनता में रोते रहते हैं, उन्हें कुछ समय के लिए तो सहानुभूति मिल सकती है, लेकिन जल्दी ही यह सहानुभूति चिढ़ और आलोचना में बदल

जो व्यक्ति विश्व की इस प्राचीन राजधानी रोम में अपनी किस्मत चमकाने का इरादा रखता है, उसे गिरगिट जैसा होना चाहिए। उसे अपने आस-पास के माहौल के हिसाब से रंग बदलना आना चाहिए। उसे हर रूप, हर आकार में ढलना आना चाहिए। उसे फुर्तीला, लचीला चालाक और अबूझ होना चाहिए। उसे अक्सर दोगला होना चाहिए, कई बार संजीदा, तो कई बार विश्वासघाती होना चाहिए। लेकिन उसे हमेशा अपने ज्ञान का एक हिस्सा छिपाना चाहिए, एक ही सुर में बोलना चाहिए, अपने चेहरे का पूरा स्वामी होना चाहिए। जब सामने वाला व्यक्ति आग बबूला

https://freehindipustakalya.blogspot.com

जाती है।

अच्छे अभिनेता खुद को ज़्यादा अच्छी तरह से नियंत्रित करते हैं। वे सच्ची भावनाओं का अभिनय कर सकते हैं, इच्छानुसार आँसू बहाने और सहानुभूतिपूर्ण दिखने का नाटक कर सकते हैं, हालाँकि दिल में कोई भावना ही नहीं होती है। वे अपने भाव इस तरीक़े से प्रकट करते हैं, ताकि दूसरे प्रभावित हों। अभिनय न करना असली दुनिया में घातक होता है। अगर कोई शासक या नेता अपनी सच्ची भावनाएँ बता दे, तो वह ज़्यादा समय तक शासन नहीं कर सकता। इसलिए खुद पर क़ाबू करना सीखें। अभिनेता की तरह लचीले बनें, जो अपने चेहरे पर मनचाहा भाव ला सकता है।

खुद को नए साँचे में ढ़ालने की प्रक्रिया का दूसरा क़दम है एक यादगार चरित्र का निर्माण - एक ऐसा चरित्र जो ध्यान आकर्षित करे, जो मंच पर खड़े बाक़ी अभिनेताओं से अलग और ऊपर दिखे। अब्राहम लिंकन ने यही खेल खेला था। देहात से आए लिंकन जानते थे कि अमेरिका उनकी तरह के राष्ट्रपति को चुनकर खुश होगा। हालाँकि कई गुण उनमें पहले से थे, लेकिन उन्होंने इनका अभिनय करके इन्हें उभारा भी था - हैट, कपड़े और दाढ़ी (उनसे पहले किसी राष्ट्रपति की दाढ़ी नहीं थी।)

बहरहाल अच्छे नाटक में रोचक दिखने या एक पल के अभिनय से ज़्यादा की ज़रूरत होती है। यह नाटक लंबे समय तक चलता है, यह एक सतत चलने वाली प्रक्रिया है। लय और

हो जाए, तब भी उसे बर्फ़ की तरह ठंडा होना चाहिए, और अगर वह दिल से धार्मिक न भी हो (ऊपर दिए गए गुणों वाले व्यक्ति का धार्मिक होना ज़रूरी नहीं है), तब भी उसके चेहरे पर, उसके होंठों पर और उसके हाव-भाव में धर्म का प्रदर्शन होना चाहिए। उसे चुपचाप कष्ट उठाना चाहिए। उसे अच्छी तरह मालूम होता है कि दरअसल वह पाखंडी है। जिस व्यक्ति की आत्मा इस तरह की ज़िंदगी से नफ़रत करती है, उसे रोम छोड़कर चला जाना चाहिए और किसी दूसरी जगह पर अपनी किस्मत चमकाने की कोशिश करनी चाहिए। मैं यह नहीं जानता हूँ कि मैं अपनी तारीफ़ कर रहा हूँ

को बहाना बना रहा है, लेकिन ऊपर दिए गए सारे गुणों में मुझमें सिर्फ़ एक गुण है और वह है लचीलापन।

कैसेनोवा मेमोयर्स, गियाकोमो कैसेनोवा, 1725-1798

टाइमिंग अत्यंत महत्वपूर्ण है। नाटक की लय का एक बहुत महत्वपूर्ण तत्व है सस्पेंस। दर्शकों को अपनी सीट के कोने पर रखने की कुंजी यह है कि घटनाओं को धीमे-धीमे होने दें और फिर सही समय पर उनकी गति बढ़ा दें। आप अपनी इच्छा के अनुसार गति घटा-बढ़ा सकते हैं, क्योंकि नियंत्रण आपके हाथ में होता है। नेपोलियन से लेकर माओ त्से-तुंग तक सभी दिग्गज शासकों ने नाटक की टाइमिंग का प्रयोग करके जनता को हैरान किया है और उसका ध्यान भटकाया है।

याद रखें, ओवरएक्टिंग का उलटा असर होता है - इससे ध्यान तो आकर्षित होता है, लेकिन महत्व नहीं मिलता है। अभिनेता रिचर्ड बर्टन ने अपने कैरियर में जल्दी ही यह जान लिया कि जब वे मंच पर पूरी तरह स्थिर खड़े रहते थे, तो वे बाक़ी अभिनेताओं से हटकर दिखते थे और दर्शकों का ध्यान आकर्षित करते थे। आप क्या करते हैं यह उतना महत्वपूर्ण नहीं है, महत्वपूर्ण तो यह है कि आप उसे कैसे करते हैं। आपकी शालीनता और सामाजिक मंच पर आपकी प्रभावशाली स्थिरता ज़्यादा महत्वपूर्ण है, जबकि ज़रूरत से ज़्यादा डायलॉग बोलना या घूमना-फिरना कम महत्वपूर्ण है।

अंत में : समय की माँग के अनुसार भूमिका निभाना सीखें। अपने नक़ाब को स्थिति के अनुसार ढालें - जो चेहरा आप ओढ़ें, उसे हर पल बदलने का अभ्यास करें। बिस्मार्क ने इस खेल को आदर्श तरीक़े से खेला था :

https://freehindipustakalya.blogspot.com

उदारवादियों के साथ वे उदारवादी बन जाते थे और धोखेबाज़ों के साथ धोखेबाज़। वे पकड़ में नहीं आते थे, और जिसे पकड़ा नहीं जा सकता, उसे चबाया भी नहीं जा सकता।

https://freehindipustakalaya.blogspot.com

तस्वीर : ग्रीक समुद्री देवता प्रोटियस। उसकी शक्ति यह थी कि वह अपनी इच्छानुसार अपना आकार बदल सकता था। वह स्थिति के अनुसार आकार बदल लेता था। जब एगामेमनॉन के भाई मेनीलॉस ने उसे पकड़ने की कोशिश की, तो प्रोटियस ने पहले शेर, फिर सांप, फिर चीते, फिर जंगली सुअर, फिर बहते पानी और अंततः पत्तेदार वृक्ष का रूप धारण कर लिया।

विशेषज्ञ की राय : यह जानें कि सब लोगों के सामने विभिन्न साँचों में कैसे ढला जाता है। समझदार प्रोटियस बनें - विद्वानों के बीच में विद्वान बनें, संतों के बीच में संत। यह सबका दिल जीतने की कला है। समान लोग समान लोगों को आकर्षित करते हैं। स्वभावों पर ध्यान दें और जिससे भी मिलें, उसके अनुरूप ढल जाएँ - गंभीर या मज़ाकिया व्यक्तियों की बातों का उन्हीं के अंदाज़ में जवाब दें - अपने मूड को समझदारी से बदल लें। (वाल्तेसर ग्रेशियन, 1601-1658)

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम

26

अपने हाथ साफ़ रखें

विचार

आपको कार्यकुशलता और शिष्टता की मूर्ति दिखना चाहिए। आपके हाथ कभी ग़लतियों और बुरे कामों से सने नहीं दिखने चाहिए। अपने हाथ साफ़ रखने के लिए दूसरों का प्यादों की तरह इस्तेमाल करें और ख़ुद को बेदाग़ रखें।

शक्ति की कुंजी

कभी-भार ग़लतियाँ होना अपरिहार्य है - दुनिया के बारे में सटीक भविष्यवाणी नहीं की जा सकती। बहरहाल शक्ति के खिलाड़ी अपनी ग़लतियों की वजह से बर्बाद नहीं होते हैं, बल्कि उन ग़लतियों का ग़लत तरीके से सामना करने की वजह से बर्बाद होते हैं। ऑपरेशन करने वाले डॉक्टरों की तरह उन्हें भी ट्यूमर को तेज़ी से और पूरी तरह से बाहर निकाल देना चाहिए। इस नाज़ुक ऑपरेशन के लिए बहाने और माफ़ी बहुत भोंचरे औज़ार हैं, इसलिए शक्तिशाली लोग उनसे बचते हैं। माफ़ी माँगने से लोग आपकी योग्यता या इरादों के बारे में शक करने लगते हैं और यह सोचने लगते हैं कि आपमें और भी कमियाँ होंगी, जिनका आपने ज़िक्र नहीं किया है। बहाने से कोई संतुष्ट नहीं होता है और माफ़ी माँगने से हर व्यक्ति असहज हो जाता है। माफ़ी से ग़लती ख़त्म नहीं होती है; यह तो गहरी होती है और फैलती है। ग़लती होने पर तत्काल ख़ुद पर से ध्यान हटा दें। उसका दोष किसी सुविधाजनक बलि के बकरे पर डाल दें। यह इतनी जल्दी होना चाहिए कि लोगों को आपकी ज़िम्मेदारी या अयोग्यता के बारे में सोचने का मौक़ा ही न मिले।

समझदारी इसी में है कि बलि के बकरे के लिए आप यथासंभव सबसे बेकसूर शिकार को चुनें। इस तरह के लोग इतने शक्तिशाली नहीं होंगे कि आपसे संघर्ष करें। उनके मासूम स्पष्टीकरणों को देखकर लोगों को लगेगा कि वे

सुखद काम ख़ुद करें, दुखद काम दूसरे लोगों से करवाएँ। पहला क़दम उठाने के कारण लोग आपका एहसान मानेंगे। दूसरा क़दम उठाने के कारण आप दुर्भावना से बचेंगे। महत्वपूर्ण मामलों में अक्सर पुरस्कारों और दंडों की ज़रूरत होती है। ख़ुद सिर्फ पुरस्कार दें और सज़ा दूसरों के हाथ से दिलवाएँ।

वाल्तेसर ग्रेशियन,

1601-1658

https://freehindipustakalaya.blogspot.com

https://freehindipustakalya.blogspot.com

कुछ ज़्यादा ही स्पष्टीकरण दे रहे हैं। इस तरह से उनके स्पष्टीकरण उनके अपराधबोध की निशानी बन जाते हैं। बहरहाल सावधान रहें और किसी को शहीद का दर्जा न दिलवाएँ। यह महत्वपूर्ण है कि आपको परेशान नज़र आना चाहिए। आप उस कुशल लीडर की तरह दिखें, जो अपने आस - पास के लोगों की अयोग्यता का शिकार हुआ है। अगर बलि का बकरा बहुत कमज़ोर नज़र आता है और आपका दंड बहुत ज़्यादा क्रूर दिखता है, तो आपका दाँव उल्टा पड़ सकता है। इसलिए कई बार आपको थोड़ा शक्तिशाली बलि का बकरा खोजना चाहिए, ताकि उसे आगे चलकर कम सहानुभूति मिले। इतिहास में बहुत से उदाहरण हैं कि क़रीबी सहयोगी को बलि का बकरा बनाना कितना महत्वपूर्ण होता है। इसे "प्रिय व्यक्ति के पतन" के रूप में जाना जाता है।

लीडर के रूप में आपको कभी अपने हाथ भद्दे कामों या ख़ून से गंदे नहीं करना चाहिए। आपको बुरी रोशनी में नहीं दिखना चाहिए। ऐसा नहीं लगना चाहिए कि आप अपने उच्च पद को कलंकित कर रहे हैं। लेकिन अपनी शक्ति को बनाए रखने के लिए आपको दुश्मनों को कुचलना पड़ेगा और कई गंदे काम करने पड़ेंगे। आपको ऐसे मोहरों की ज़रूरत है, जो आपके लिए वे गंदे और ख़तरनाक काम कर दें। बलि के बकरों की तरह मोहरे भी आपकी छवि को बेदाग़ बनाए रखने में मदद करेंगे।

मोहरा आम तौर पर ऐसा व्यक्ति होना

चाहिए, जो आपके क़रीबी समूह के बाहर का हो। उसे यह समझ में ही नहीं आना चाहिए कि उसका इस्तेमाल हो रहा है। आपको ऐसे भोले लोग हर जगह मिल जाएँगे, जो आपका काम ख़ुशी-ख़ुशी करेंगे, ख़ास तौर पर तब जब आप उन्हें बदले में इनाम दें। उन्हें लगता है कि वे मासूम और उचित काम कर रहे हैं, जबकि दरअसल वे आपके लिए मैदान साफ़ कर रहे हैं, आपकी दी गई जानकारी को फैला रहे हैं और आपके प्रतिद्वंद्वियों को नुक़सान पहुँचा रहे हैं। इस तरह वे अनजाने में ही आपके उद्देश्य की पूर्ति में अपने हाथ गंदे कर रहे हैं, जबकि आपके हाथ बिलकुल साफ़ हैं।

मोहरे का इस्तेमाल करने का सबसे आसान और प्रभावकारी तरीक़ा यह है कि उसे ऐसी जानकारी दे दी जाए, जिसे वह आपके चुने हुए आदमी के सामने फैलाए। झूठी या ग़लत जानकारी एक सशक्त औज़ार है, ख़ासकर तब जब कोई ऐसा आदमी इसे फैलाता है, जिस पर कोई शक नहीं करता है। इसकी वजह से आपके लिए मासूमियत का ढोंग करना बहुत आसान हो जाता है और कोई भी यह शक नहीं करता है कि वह जानकारी आपने ही वहाँ तक पहुँचाई है।

जल्लाद की भूमिका निभाने या बुरी ख़बर सुनाने के लिए हमेशा किसी दूसरे का इस्तेमाल करना चाहिए, जबकि आपको सिर्फ़ ख़ुशी और आनंद की ख़बरें ही सुनानी चाहिए।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

https://freehindipustakalya.blogspot.com

तस्वीर : बेगुनाह बकरी। प्रायश्चित के दिन प्रमुख पुजारी बकरी को मंदिर में लाता है और उसके सिर पर हाथ रखकर लोगों के पाप स्वीकार करता है। फिर वह उन लोगों के गुनाहों को उस बेगुनाह जानवर पर लाद देता है और उसे ले जाकर जंगल में छोड़ देता है। लोगों के पाप और दोष उस बकरी के साथ ही चले जाते हैं।

विशेषज्ञ की राय : मूर्खता करने में मूर्खता नहीं है, बल्कि उसे न छिपा पाने में है। ग़लतियाँ सब करते हैं, लेकिन समझदार लोग अपनी ग़लतियों को छिपा लेते हैं। प्रतिष्ठा इस बात पर इतनी निर्भर नहीं करती कि क्या दिखता है, जितनी कि इस बात पर निर्भर करती है कि क्या छिपाया गया है। अगर आपसे गलती हो गई हो, तो सावधान रहे। (वाल्तेसर ग्रेशियन, 1601-1658)

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम

27

अनुयायी बनाने के लिए लोगों के विश्वास का लाभ उठाएँ

विचार

लोगों की प्रबल इच्छा होती है कि किसी चीज़ में विश्वास करें। उन्हें अनुसरण करने के लिए कोई नया उद्‌देश्य या नई आस्था देकर इस इच्छा का लाभ उठाएँ। अपने शब्दों को अस्पष्ट लेकिन सुनहरी संभावनाओं से भरपूर रखें। तर्क और स्पष्ट चिंतन के बजाय उत्साह पर ज़ोर दें। अपने नए अनुयायियों को कर्मकांड की कुछ परंपराएँ दें। उन्हें अपने लिए त्याग करने को कहें। संगठित धर्म और महान उद्‌देश्यों के अभाव में आपका नया आस्था तंत्र आपको असीमित शक्ति प्रदान करेगा।

> किसी नए धर्म का संस्थापक बनने के लिए इंसान को अपने लोगों के मनोवैज्ञानिक का उच्च ज्ञान होना चाहिए, जो अब तक इस बात को नहीं पहचान पाए हैं, कि वे एक साथ चूक सकते हैं।
>
> फ्रेडरिक नीत्शे,
>
> 1844-1900

पाँच आसान क़दमों से पंथ की शुरुआत करें

न्यूनतम कोशिश से सर्वाधिक शक्ति हासिल करने के तरीकों की खोज करते समय आप पाएँगे कि पथ बनाना ऐसा करने का बहुत ही अच्छा तरीका है। बहुत ज़्यादा समर्थक होने पर धोखा देने की संभावनाएँ बहुत बढ़ जाती हैं। आपके समर्थक न सिर्फ़ आपकी पूजा करेंगे, बल्कि वे आपके दुश्मनों से आपकी रक्षा भी करेंगे और दूसरों को आपके समूह में शामिल होने के लिए प्रलोभन भी देंगे। इस तरह की शक्ति आपको एक अलग ही ऊँचाई तक उठा देती है। अब आपको अपनी इच्छा पूरी करवाने के लिए संघर्ष करने या छल-कपट करने की ज़रूरत नहीं होती है। आपकी पूजा होती है और आप कोई ग़लत काम नहीं कर सकते हैं।

आपको ऐसा लग सकता है कि इस तरह का समर्थन हासिल करना बहुत बड़ा या मुश्किल काम है, लेकिन दरअसल यह बहुत आसान है। लोग हमेशा किसी न किसी पर भरोसा करने की हड़बड़ी में रहते हैं, इसलिए वे अनावश्यक रूप से संत और पंथ का निर्माण करते हैं। इस विश्वास करने की आदत का लाभ उठाएँ : ख़ुद को पूजनीय बना लें। इन पाँच आसान क़दमों द्वारा अपना पंथ बनाएँ।

पहला क़दम : इसे अस्पष्ट लेकिन आसान रखें। पंथ बनाने के लिए सबसे पहले आपको लोगों का ध्यान खींचना होगा। आपको यह

https://freehindipustakalaya.blogspot.com

अपने कामों के माध्यम से नहीं करना चाहिए, जो बहुत स्पष्ट होते हैं और आसानी से समझे जा सकते हैं। आपको तो यह काम शब्दों के माध्यम से करना चाहिए, जो अस्पष्ट और धोखेबाज़ होते हैं। आपके शुरुआती भाषण, बातचीत और साक्षात्कारों में दो तत्व शामिल होने चाहिए : एक तरफ़ तो किसी महान व कायापलट करने वाली चीज़ का वादा और दूसरी तरफ़ थोड़ी सी अस्पष्टता। दोनों के संयोग से आपके श्रोताओं के मन में हर तरह के धुंधले सपने तैर जाएँगे। वे आपकी बातों को मनचाहे ढंग से समझेंगे और अपनी मनचाही चीज़ देखेंगे।

अपने पंथ के विषय को नया बनाने की कोशिश करें, ताकि बहुत कम लोग इसे समझ पाएँ। सही तरह से करने पर अस्पष्ट वादों, धुंधली लेकिन आकर्षक अवधारणाओं और प्रबल उत्साह का संयोग बहुत शक्तिशाली होता है। सही तरह से इसका इस्तेमाल करने पर आप लोगों के दिलों की जीत लेंगे और आपके चारों तरफ़ एक पंथ खड़ा हो जाएगा।

दूसरा क़दम : दिखने वाली चीज़ों को बौद्धिक बातों से ज़्यादा महत्व दें। जब लोग आपके आस-पास एकत्रित होने लगें, तो दो ख़तरे सामने आएँगे : बोरियत और संदेह। बोरियत की वजह से लोग दूसरी जगह चले जाएँगे। संदेह की वजह से वे इस बारे में तार्किक ढंग से सोचने लगेंगे कि आप क्या दे रहे हैं। आपने जिस धुंध को कलाकारी से बनाया है, वे उसे

मनुष्य इतने भोले होते हैं और अपनी तात्कालिक जरूरतों में इतने डूबे रहते है कि धोखेबाज व्यक्ति को हमेशा ऐसे बहुत से लोग मिल जाएंगे, जो धोखा खाने के लिए तैयार होते हैं।

निकोलो मैकियावली, 1469–1527

https://freehindipustakalya.blogspot.com

https://freehindipustakalya.blogspot.com

कपटी व्यक्ति के लिए यह फ़ायदेमंद है कि भोले लोगों की संख्या इतनी ज़्यादा है। इसी कारण उसके समर्थकों का समूह विशाल बनता है, जो उसकी सफलता की गारंटी है।

द पॉवर ऑफ़ द कार्लेटन, ग्रेट डे फ़्रांसेस्को, 1939

हटाने की कोशिश करेंगे और आपके विचारों के माध्यम से आपकी असलियत को जान लेंगे। आपको इस बात की ज़रूरत है कि आप बोर हो चुके लोगों को रोचक अनुभव प्रदान करें और शक करने वालों को दूर रखें।

ऐसा करने का सबसे अच्छा तरीक़ा नाटकीय प्रभाव डालना है। खुद को विलासिता से घेरे रखें। चकाचौंध से अपने समर्थकों को चौंधिया दें। उनकी आँखों के सामने भव्यता की तस्वीर पेश करें। इससे वे आपके विचारों की मूर्खता पर ध्यान नहीं देंगे और आपके विश्वास-तंत्र के छिद्रों को नहीं देख पाएँगे। इसके अलावा, ऐसा करने से आपकी तरफ़ ज़्यादा लोगों का ध्यान आकर्षित होगा और आपके ज़्यादा अनुयायी बनेंगे।

तीसरा क़दम : समूह को बनाने के लिए धर्म जैसा तंत्र बनाएँ। आपके अनुयायियों की संख्या बढ़ रही है। अब उन्हें संगठित करने का समय आ गया है। ऐसा तरीक़ा खोजें, जो आपको ऊपर भी उठाए और तसल्ली भी दे। धर्मों ने युगों-युगों से लोगों को अनुयायी बनाया है और आज के धर्मनिरपेक्ष युग में भी वे ऐसा कर रहे हैं। अपने अनुयायियों के लिए कुछ नियम बनाएँ, उन्हें तंत्र के रूप में संगठित करें, उन्हें धार्मिक झलक वाले पदनाम दें, उन्हें ऐसे त्याग करने को कहें, जिनसे आपकी तिजोरी भरे और आपकी शक्ति बढ़े।

चौथा क़दम : अपनी आय के स्रोत को छिपाएँ। आपका समूह बढ़ गया है और आपने

इसे चर्च जैसा रूप दे दिया है। अब आपके अनुयायियों के धन से आपकी तिजोरी भरने लगी है। लेकिन ऐसा कभी नहीं लगना चाहिए कि आप धन या इससे मिलने वाली शक्ति के भूखे हैं। इस समय आपको अपनी आय के स्रोत को छिपाना चाहिए।

आपके अनुयायियों को यह विश्वास होना चाहिए कि अगर वे आपका अनुसरण करेंगे, तो उन्हें हर तरह की अच्छी चीज़ें मिल जाएँगी। विलासिता से ख़ुद को घेरकर आप अपने विश्वास तंत्र के पुख़्ता होने का जीता-जागता सबूत बन जाते हैं। यह कभी उजागर न करें कि आपकी दौलत दरअसल आपके अनुयायियों की जेब से आती है। इसके बजाय ऐसा जताएँ, जैसे आपके विश्वास तंत्र की शक्ति के कारण आप दौतलमंद बन रहे हैं।

पाँचवाँ क़दम : हम-बनाम-वे का तंत्र स्थापित करें। समूह अब बढ़ गया है और समृद्ध हो रहा है। यह किसी चुंबक की तरह लोगों को आकर्षित कर रहा है। लेकिन अगर आप सावधान नहीं रहेंगे, तो अकर्मण्यता हावी हो जाएगी और समय तथा बोरियत आपके समूह की चुंबकीयता को ख़त्म कर देगी। अपने अनुयायियों को एकजुट रखने के लिए आपको अब वह करना चाहिए, जो सभी धर्मों ने किया है : हम-बनाम-वे का तंत्र स्थापित करें।

सबसे पहले तो यह सुनिश्चित कर लें कि आपके अनुयायियों को यह विश्वास हो कि वे साझे लक्ष्यों के एक सूत्र में बँधे हैं और एक

https://freehindipustakalya.blogspot.com

https://freehindipustakalya.blogspot.com

विशिष्ट समूह का हिस्सा हैं। फिर इस बंधन को मज़बूत बनाने के लिए एक चालाक दुश्मन की ओर इशारा करें, जो आपको बर्बाद करना चाहता है। अगर आपका कोई दुश्मन न हो, तो दुश्मन ईजाद कर लें।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम
28

बहादुरी के साथ काम करने उतरें

विचार

अगर आपको किसी काम में सफलता मिलने का यक़ीन नहीं है, तो उसे करने की कोशिश न करें। आपकी शंका और हिचक इसकी सफलता में बाधा डालेंगी। संकोच ख़तरनाक है। बेहतर यह है कि बहादुरी से मैदान में उतरा जाए। साहसिक ग़लतियों को ज़्यादा साहस दिखाकर सुधारा जा सकता है। हर व्यक्ति बहादुर व्यक्ति की प्रशंसा करता है। कोई भी कायर का सम्मान नहीं करता है।

शक्ति की कुंजी

हममें से ज्यादातर लोग भीरु होते हैं। हम तनाव और संघर्ष से बचना चाहते हैं। हम चाहते हैं कि सब लोग हमें पसंद करें। साहसिक कामों के बारे में हम सोच तो सकते हैं, लेकिन हम शायद ही कभी उन्हें करते हैं। हम परिणामों से आतंकित हो जाते हैं और दहशत में आ जाते हैं कि दूसरे लोग हमारे बारे में जाने क्या सोचेंगे। हम यह सोचकर रुक जाते हैं कि अगर हम अपने स्वाभाविक स्थान से दूर जाने का दुस्साहस करेंगे, तो हमें जाने कितनी शत्रुता झेलनी पड़ेगी।

हालाँकि हम अपनी भीरुता को यह कहकर छिपा सकते हैं कि हम दूसरों की परवाह करते हैं, हम दूसरों को चोट नहीं पहुँचाना चाहते या उन्हें दुखी नहीं करना चाहते, लेकिन सच्चाई इसके विपरीत होती है। हम अपने ही बारे में चिंतित रहते हैं और इस बारे में लगातार सोचते रहते हैं कि दूसरे हमें जाने कैसा समझेंगे। दूसरी तरफ बहादुरी बहिर्मुखी होती है और अक्सर इससे लोग ज़्यादा सहज महसूस करते हैं, क्योंकि यह ख़ुद के बारे में ज़्यादा विचार नहीं करती है और इसमें दमन का तत्व कम होता है। बहादुरी के कारण कोई भी शर्म या परेशानी महसूस नहीं करता है। इसीलिए हम बहादुरों की प्रशंसा करते हैं और उन्हें अपने आस-पास रखना पसंद करते हैं, ताकि उनका आत्म-विश्वास हममें भी आ जाए और हम अपने आत्म-केंद्रित चिंतन के जाल से बाहर

प्रेम में विजय कैसे पाएँ

लेकिन मैंने देखा है कि तुम्हारा दिल जिन पर आ जाता है, उनके प्रति तुम संकोच करते हो। यह गुण अभिजात्य महिला को तो प्रभावित कर सकता है, लेकिन दुनियादार महिला के दिल पर तुम्हें दूसरे हथियारों से हमला करना चाहिए... मैं तुम्हें महिलाओं की ओर से एक बात बता दूँ: हममें से कोई भी ऐसी नहीं है, जो बहुत परवाह के बजाय थोड़ी-बहुत अक्खड़ता को ज़्यादा पसंद न करें। इंसान अपनी ग़लती से जितने प्रेम-प्रसंगों में असफल होता है, उनमें सद्‌गुण उसे बचा नहीं पाते हैं। प्रेमी हमारे प्रति जितना ज़्यादा संकोच दिखाता है, हमारा गर्व उसे उसी दिशा में ज़्यादा

https://freehindipustakalya.blogspot.com

निकल सकें।

बहुत कम लोग साहसी पैदा होते हैं। यहाँ कि नेपोलियन को भी युद्ध के मैदान में यह आदत डालनी पड़ी, क्योंकि वह जानता था कि यह ज़िंदगी और मौत का मामला है। सामाजिक माहौल में वह अंतर्मुखी और भीरु था, लेकिन उसने इस आदत को दूर किया और ज़िंदगी के हर क्षेत्र में साहसिकता का अभ्यास किया। उसने साहसिकता की ज़बर्दस्त शक्ति को पहचान लिया था और यह समझ लिया था कि यह व्यक्ति को बड़ा बना सकती है (चाहे वह नेपोलियन की तरह नाटा ही क्यों न हो)।

आपको अपनी साहसिकता का अभ्यास और विकास करना चाहिए। आपको इसके बहुत से मौक़े मिलेंगे। शुरू करने की सबसे अच्छी जगह अक्सर समझौते की चर्चाओं का नाज़ुक संसार है, ख़ासकर ऐसी चर्चाएँ जिनमें आपसे अपनी ख़ुद की कीमत तय करने को कहा जाता है। अक्सर हम अपनी बहुत कम क़ीमत लगाते हैं। जब क्रिस्टोफ़र कोलंबस ने प्रस्ताव रखा कि स्पेन का दरबार अमेरिका खोजने की यात्रा के लिए धन दे, तो उन्होंने यह बहुत बड़ी साहसिक माँग रखी कि उन्हें "समुद्र के ग्रांड एडमिरल" का ख़िताब दिया जाए। दरबार सहमत हो गया। जो क़ीमत कोलंबस ने तय की थी, वह उसे मिल गई - उसने माँग की कि उसका सम्मान किया जाए और उसका सम्मान हुआ। हेनरी किसंजर भी जानते थे कि समझौते में साहसिक माँगें छुटपुट माँगों से बेहतर होती हैं

प्रेरित करता है और वह हमारे प्रतिरोध का जितना सम्मान दिखाता है, हम उससे उतना ही ज़्यादा सम्मान माँगती चली जाती हैं। हम तुम पुरुषों से यही कहना चाहती हैं : "आह हमें इतनी पाक़साफ़, इतनी नैतिक मत समझो। तुम्ही हमें ऐसा दिखने के लिए मजबूर कर रहे हो..." हम लगातार यह सच्चाई छिपाने के लिए संघर्ष करती हैं कि हमने तुम्हें प्रेम करने की अनुमति दे दी है। किसी औरत को ऐसी स्थिति में रखो, ताकि वह यह कह सके कि वह सिर्फ़ हिंसा या हैरानी के कारण समर्पित हुई है, उसे यह विश्वास दिला दो कि तुम उसे कम महत्वपूर्ण नहीं मानते हो और मैं कहती हूँ कि तुम उसका दिल

https://freehindipustakalya.blogspot.com

और दूसरे व्यक्ति से भाव-ताव करने से ज़्यादा अच्छे परिणाम देती हैं। अपनी क़ीमत ज़्यादा तय करें और फिर उसे और ज़्यादा बढ़ाएं।

दूसरों की कमज़ोरियों को भाँपने के बारे में लोगों में छठी इंद्रिय होती है। अगर पहली मुलाक़ात में ही आप समझौता करने, पीछे हटने और भागने की इच्छा दिखाते हैं, तो आप उन लोगों के अंदर छिपे शेर को भी बाहर निकाल देते हैं, जो ख़ून के प्यासे नहीं होते हैं। सब कुछ अनुभूति पर निर्भर करता है। अगर एक बार आपकी ऐसी छवि बन गई कि आप तत्काल रक्षात्मक हो जाते हैं और समझौते में हर शर्त मान लेते हैं, तो आपको बेरहमी से चारों तरफ़ से धकाया जाएगा। इसलिए यह हमेशा सबसे अच्छा होता है कि आप बहादुरी की छवि बना लें।

साहसिक क़दम से आप वास्तविकता से ज़्यादा बड़े और शक्तिशाली दिखते हैं। अगर आप साँप की तरह चोरी और तेज़ी से हमला कर देते हैं, तो इससे और ज़्यादा डर पैदा होता है। साहसिक काम करके आप एक परंपरा डाल देते हैं : बाद की मुलाक़ातों में लोग आपके अगले वार की दहशत में रक्षात्मक रहेंगे।

जीत लोगे... तुम्हारी थोड़ी बहादुरी से तुम दोनों ही खुश हो जाओगे। क्या आप जानते हैं कि एम. डे ला रोशफुको ने क्या कहा था : "एक तार्किक व्यक्ति प्रेम में पागल जैसे काम कर सकता है, लेकिन वह मूर्ख जैसे काम नहीं कर सकता और उसे करना भी नहीं चाहिए।"

लाइफ़, लेटर्स, एंड एपिक्यूरियन फ़िलॉसफ़ी ऑफ़ निनोन डे ला एनक्लोस, निनोन डे ला एन्क्लोस, 1623-1706

https://freehindipustakalya.blogspot.com

https://freehindipustakalya.blogspot.com

तस्वीर : शेर अपने काम में कोई चूक नहीं करता है - उसकी हरकतें बहुत तेज़ होती हैं, उसका जबड़ा बहुत शक्तिशाली होता है। कायर खरगोश ख़तरे से बचने के लिए चाहे कुछ भी कर ले, लेकिन भागने की जल्दी में यह उसके जाल में फँस जाता है और अपने शत्रु के जबड़े में पहुँच जाता है।

विशेषज्ञ की राय : मैं निश्चित रुप से सोचता हूँ कि सावधान होने के बजाय साहसी होना बेहतर है, क्योंकि तक़दीर एक महिला है और अगर उसके स्वामी बनना चाहते हैं, तो यह ज़रूरी है कि आप उसे शक्ति द्वारा जीतें। साफ दिखता है कि तक़दीर बहादुर लोगों के अधीन रहती है, जबकि कायर लोगों के पास भी नहीं फटकती है। इसलिए महिला की तरह तक़दीर भी हमेशा युवाओं की प्रेयसी होती है, क्योंकि वे कम सावधान और ज़्यादा उत्साही होते हैं तथा वे ज़्यादा ताकत दिखाकर उसके स्वामी बन जाते हैं। (निकोलो मैकियावली 1469-1527)

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम

29

अंत तक पूरी योजना बनाएँ

विचार

अंत ही सब कुछ है। अंत तक पहुँचने की पूरी योजना बनाएँ। उन सभी संभावित परिणामों, बाधाओं और क़िस्मत के उतार-चढ़ावों पर विचार करें, जो आपकी कड़ी मेहनत पर पानी फेर सकते हैं और उसका श्रेय दूसरों को दे सकते हैं। अंत तक की योजना बनाने से आप परिस्थितियों के शिकार नहीं होंगे और यह जान जाएँगे कि कब रुकना है। क़िस्मत को धीरे से राह दिखाएँ और बहुत आगे तक विचार करके अपने भविष्य को तय करें।

https://freehindipustakalaya.blogspot.com

शक्ति की कुंजी

प्राचीन यूनानियों की मान्यता के अनुसार, देवताओं को भविष्य का पूरा ज्ञान होता था। वे हर आने वाली चीज़ को पूरे विस्तार से देख सकते थे। दूसरी तरफ, इंसानों को किस्मत का शिकार माना जाता था, क्योंकि वे वर्तमान में ही उलझे रहते थे और और भविष्य के खतरों को देखने में असमर्थ होते थे। ओडीशियस जैसे हीरो वर्तमान से आगे तक देख सकते थे और कई कदम आगे की योजना बना सकते थे। उस जैसे लोगों को देवता जैसा माना जाता था, जिसमें भविष्य तय करने की योग्यता थी। यह तुलना आज भी तर्क-संगत है, जो लोग आगे तक सोचते हैं, और अपनी योजनाओं को धैर्यपूर्वक काम करके लक्ष्य तक पहुंचते हैं, वे दैवी शक्ति से संपन्न नज़र आते हैं। चूंकि ज्यादातर लोग वर्तमान में कैद रहते हैं, इसलिए वे इस तरह की दूरदर्शिता पूर्ण योजना नहीं बना पाते। इसी करण जब कोई तत्कालिक खतरों और आनंदों को नज़र अंदाज करता है, तो वह शक्तिशाली बन जाता है। घटनाएँ होने पर प्रतिक्रिया करना स्वभाविक मानवीय गुण है। घटनाओं को पहले से भाँपकर योजना बनाना शक्ति की निशानी है। वर्तमान से आगे तक पहुंचकर बड़ी चीज़ों का अनुमान लगाना या कल्पना करना मानवीय नहीं दैवीय काम लगता है।

415 ई.पू. में एथेन्स ने सिसली पर हमला कर दिया, एथेन्स वासियों का विश्वास था कि

जो व्यक्ति ज्योतिषियों से भविष्य पूछता है, वह अनजाने में ही भावि घटनाओं के आंतरिक आभास को खो देता है, जो ज्योतिषियों की भविष्यवाणी कथन से हज़ार गुना ज़्यादा सटीक होता है।

वाल्टर बेंजामिन, 1892-1940

https://freehindipustakalaya.blogspot.com

इससे उन्हें दौलत, शक्ति और सोलह साल के पेलोपोनेसियन युद्ध को जीतने की ख्याति मिलेगी। उन्होंने घर से इतनी दूर आक्रमण करने के ख़तरों के बारे में नहीं सोचा। उन्होंने यह नहीं भाँपा कि सिसली के लोग ज़्यादा अच्छी तरह लड़ेंगे, क्योंकि युद्ध उनके मैदान पर होगा या एथेन्स के सभी दुश्मन उसके ख़िलाफ़ इकट्ठे हो जाएँगे या युद्ध के कई मोर्चे खुल जाएँगे और उनकी शक्तियाँ बँट जाएँगी। सिसली पर आक्रमण पूरी तरह असफल रहा और उससे दुनिया की एक महान सभ्यता के नष्ट होने के बीज पड़े। एथेन्सवासियों का यह दुर्भाग्य दिमाग़ के कारण नहीं, बल्कि दिल के कारण आया था। उन्होंने सिर्फ़ ख्याति का मौक़ा देखा, दूर मंडराने वाले ख़तरों के बारे में नहीं देखा।

कार्डिनल डे रेट्ज़ के अनुसार, "लोगों की ग़लतियों का सबसे आम कारण यह होता है कि वे वर्तमान के ख़तरों से बहुत ज़्यादा डरते हैं और दूर के ख़तरों से ज़रा भी नहीं डरते हैं।" जो ख़तरे दूर होते हैं या दूर दिखते हैं - अगर हम उन्हें पहले से ही भाँप लें, तो हम बहुत सारी ग़लतियों से बच सकते हैं। अगर हमें यह एहसास हो जाए कि हम एक छोटे ख़तरे से बचकर एक बड़े ख़तरे की तरफ़ जा रहे हैं, तो हम अपनी योजनाओं को तत्काल बदल सकते हैं। शक्ति की अवधारणा में सिर्फ़ यही शामिल नहीं है कि आप क्या करते हैं, बल्कि यह भी शामिल है कि आप क्या नहीं करते हैं। जल्दबाज़ी और मूर्खतापूर्ण कामों से

https://freehindipustakalye.blogspot.com

बचना बहुत महत्वपूर्ण होता है, जिनके कारण आप मुश्किल में फँस सकते हैं। काम करने से पहले विस्तार से योजना बना लें - अस्पष्ट योजनाओं के कारण मुश्किल में न फँसें। क्या उनके ऐसे परिणाम होंगे, जो आप नहीं चाहते हैं? क्या मैं नए दुश्मन बना लूँगा? क्या कोई दूसरा मेरी मेहनत का लाभ ले लेगा? आम तौर पर अंत सुखद कम, दुखद अधिक होता है - अपने मस्तिष्क में सुखद अंत की छवि के कारण राह न भटकें।

जब आप कई क़दम आगे तक देखेंगे और अंत तक की योजना बना लेंगे, तो आप भावनाओं के प्रलोभन में नहीं फँसेंगे और तत्काल प्रतिक्रिया करने की इच्छा से भी बचेंगे। आपकी स्पष्टता से आपको तनाव नहीं होगा और आप उलझन में भी नहीं रहेंगे, जिस कारण इतने सारे लोग अपने कामों में असफल रहते हैं। आप अंत देखते हैं और आप राह में किसी तरह का परिवर्तन बर्दाश्त नहीं करते हैं।

तस्वीर : माउंट ऑलंपस के देवी-देवता। बादलों के पार से इंसान के कामों को देखते हुए वे पहले से ही उन बड़े सपनों का अंत देख लेते हैं, जो विनाश और त्रासदी की तरफ ले जाते हैं। और वे इस बात पर हँसते हैं कि हम वर्तमान से आगे नहीं देख पाते और हम ख़ुद को किस तरह धोखा देते हैं।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

विशेषज्ञ की राय : खुद को मुसीबत से बाहर निकालने के बजाय यह ज़्यादा आसान है कि मुसीबत के अंदर जाया ही न जाए! हमें सरकंडे के विपरीत व्यवहार करना चाहिए। सरकंडे का तना पहले तो सीधा और लंबा होता है, लेकिन बाद में इसमें गांठें पड़ जाती हैं। ऐसा लगता है जैसे यह थक गया हो और अब इसमें पुराना उत्साह या उमंग नहीं बची हो। हमें काम ठंडेपन से धीरे-धीरे शुरू करना चाहिए, संघर्ष के लिए अपनी साँस बचाकर रखना चाहिए और अपने सबसे उत्साहपूर्ण प्रहारों को अंत के लिए बचाकर रखना चाहिए। जब हम कोई काम शुरू करते हैं, तो प्रायः शुरुआत में हम उन्हें दिशा देते हैं और वे हमारे वश में होते हैं, लेकिन एक बार शुरू होने के बाद वे हमें दिशा देने लगते हैं और हमें अपने वश कर लेते हैं। (मॉन्टेन, 1533-1592)

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम

30

अपनी उपलब्धियों को आसान दिखाएँ

विचार

आपके काम सहज नज़र आने चाहिए, जैसे आपने उन्हें आसानी से कर दिया हो। आपके काम में जितनी मेहनत, कोशिश और चतुर चालें लगी हैं, उन्हें छिपाया जाना चाहिए। जब ऐसा लगता है कि आपने बिना ख़ास कोशिश के काम कर दिया है, तो यह छवि बनती है कि आप अगर कोशिश करें, तो बहुत ज़्यादा काम कर सकते हैं। आप कितनी कड़ी मेहनत करते हैं, यह बताने के प्रलोभन से बचें, क्योंकि इससे सिर्फ़ सवाल उठते हैं। किसी को भी अपनी चालें न सिखाएँ, वरना उनका प्रयोग आप ही के ख़िलाफ़ किया जाएगा।

> कविता की एक पंक्ति लिखने में हमें भले ही घंटों लग जाएँ, लेकिन अगर यह एक पल का विचार नहीं लिखती है, तो हमारे बुने और उधेड़े हुए ताने - बाने की सारी मेहनत बेकार है।
>
> एडम्स कर्स, विलियम बटलर गेट्स,
>
> 1865-1939

https://freehindipustakalya.blogspot.com

शक्ति की कुंजी

शक्ति की पहली अवधारणा प्रकृति के साथ आदिकालीन मुठभेड़ों से उत्पन्न हुई थी - आसमान में बिजली चमकना, बाढ़, जंगली जानवर आदि। इन शक्तियों के लिए किसी चिंतन या योजना की ज़रूरत नहीं थी - वे अचानक सामने आकर डरा देती थीं, ज़िंदगी और मौत पर उनका अधिकार था। और इसी तरह की शक्ति हम हमेशा पाना चाहते हैं। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के माध्यम से हमने प्रकृति की गति और शक्ति को नियंत्रित कर लिया है, लेकिन कोई चीज़ अब भी बाकी है : हमारी मशीनें आवाज़ करती हैं और झटके से चलती हैं ; उनकी कोशिश दिखती है। प्रौद्योगिकी के सबसे अच्छे आविष्कारों के बावजूद हम उन चीज़ों की प्रशंसा करते हैं, जो आसानी से और बिना कोशिश के चलती हैं। बच्चों में हमसे अपनी बात मनवाने की शक्ति होती है। ऐसा उस प्रबल आकर्षण के कारण होता है, जो हर उस प्राणी में होता है, जो हमसे कम चिंतनशील ज़्यादा सुकुमार होता है। हम दोबारा बच्चे तो नहीं बन सकते हैं, लेकिन अगर हम बिना कोशिश किए सफलता पाने का प्रदर्शन कर सकें, तो हम दूसरों में वही श्रद्धा जगा सकते हैं, जो प्रकृति ने हमेशा इंसानों में जगाई है।

इस सिद्धांत का विश्लेषण करने वाले पहले यूरोपीय लेखकों में से एक पुनर्जागरण काल के दरबारी थे। 1528 में प्रकाशित पुस्तक द बुक ऑफ़ द कोर्टियर में बाल्डासेर कास्टिग्लियोन ने

https://freehindipustakalya.blogspot.com

आदर्श दरबारी के बहुत जटिल और वर्गीकृत व्यवहार का वर्णन किया है। उनका कहना है कि दरबारी को ये काम इस तरह से करने चाहिए, ताकि मुश्किल काम भी आसान लगे। उन्होंने दरबारी को प्रेरित किया कि वह "अपनी कला को छिपाने के लिए सभी काम थोड़े उदासीन ढंग से करे, और शब्दों या कामों को अनियोजित व प्रयासरहित लगने दे।" हम सब असाधारण काम की प्रशंसा करते हैं, लेकिन अगर उसे सहजता और सुंदरता से किया गया हो, तो हम दस गुना ज़्यादा प्रशंसा करते हैं।

मुश्किल काम आसानी से करने का विचार शक्ति के सभी रूपों के लिए उचित है, क्योंकि शक्ति दिखावे और आपके द्वारा पैदा किए गए भ्रम पर निर्भर करती है। आपके सार्वजनिक कार्य कलाकृतियों की तरह होते हैं : उन्हें देखने में आनंद आना चाहिए। जब आप अपनी रचना की प्रक्रिया को उजागर करते हैं, तो आप दूसरों की तरह बन जाते हैं। जो समझा जा सकता है, उससे श्रद्धा नहीं उपजती है – हम यह सोच लेते हैं कि अगर हमारे पास धन और समय होता, तो हम भी वह कर सकते थे। अपनी चतुराई दिखाने के प्रलोभन से बचें – ज़्यादा चतुरतापूर्ण यह है कि आप अपनी चतुराई के स्रोतों को छिपा लें।

अपने शॉर्टकट और चालों को छिपाने का एक और कारण है : जब आप अपनी जानकारी उजागर कर देते हैं, तो दूसरों को ऐसे विचार मिल जाते हैं, जिनका इस्तेमाल वे आपके ख़िलाफ़

अपनी योग्यताओं की सीमा को छिपाकर रखें। समझदार व्यक्ति अगर सबका सम्मान पाना चाहता है, तो वह उन्हें अपने ज्ञान और क्षमताओं की तलहटी तक नहीं पहुँचने देता है। आप उसे जान तो सकते हैं, लेकिन समझ नहीं सकते। किसी को भी उसकी योग्यताओं की सीमा पता नहीं लगना चाहिए, वरना वह निराश हो जाएगा। किसी को भी उसका पूरी तरह आकलन करने का अवसर नहीं मिलना चाहिए, क्योंकि उसकी योग्यताओं के बारे में अनुमान और शंकाएँ सटीक ज्ञान के बजाय ज़्यादा सम्मान जगाते हैं, भले ही सटीक ज्ञान कितना ही सही हो।

बाल्तेसर ग्रेशियन,
1601–1658

https://freehindipustakalya.blogspot.com

कर सकते हैं। आप ख़ामोशी के लाभ गिनवा देते हैं। हम सबमें आत्म-प्रदर्शन की प्रवृत्ति होती है। हम सभी दुनिया को बताना चाहते हैं कि हमने क्या किया है। हम सब अपनी मेहनत और चतुराई की तारीफ़ सुनकर अपने गर्व को संतुष्ट करना चाहते हैं। हम उस मेहनत के लिए भी सहानुभूति पाना चाहते हैं, जो हमें अपनी कला के चरम बिंदु तक पहुँचने में लगी। अपने रहस्य उजागर करने की इस आदत पर क़ाबू रखें, क्योंकि इसका प्रभाव अक्सर आपकी आशा के विपरीत होता है। याद रखें : आपके काम जितने रहस्यमय होंगे, लोग उतनी ही ज़्यादा श्रद्धा करेंगे। ऐसा नज़र आएगा जैसे आप ही वह काम कर सकते थे - और अनूठी प्रतिभा का धनी दिखना बहुत शक्तिशाली होता है। अंत में, चूंकि आपने सहजता और आसानी से उपलब्धि हासिल की है, इसलिए लोगों को यह विश्वास होता है कि अगर आप ज़्यादा मेहनत करते, तो आप ज़्यादा सफलता हासिल कर सकते थे। इससे न सिर्फ़ प्रशंसा मिलती है, बल्कि एक तरह का डर भी उत्पन्न होता है। आपकी शक्तियों का पूरी तरह दोहन नहीं हुआ है, इसलिए किसी को भी उनकी सीमाओं का पूरी तरह अंदाज़ा नहीं होता है।

तस्वीर : रेसहॉर्स। अगर हम क़रीब खड़े हों तो हम घोड़े को नियंत्रित करने का तनाव और प्रयास देख सकते हैं, उसकी उखड़ी हुई साँसें और दर्द भरी कराहें सुन सकते हैं। लेकिन दूर से देखने पर हमें सब कुछ बहुत सुंदर नज़र आता है और ऐसा लगता है, जैसे घोड़े हवा में उड़ रहे हों। अगर आप दूसरों को दूरी पर रखेंगे, तो वे सिर्फ़ यही देख पाएँगे कि आप कितनी आसानी से आगे बढ़ते हैं।

विशेषज्ञ की राय : उदासीनता से किया गया काम चाहे जितना छोटा हो, उससे न सिर्फ़ इसे करने वाले की योग्यता दिखती है, बल्कि अक्सर उदासीनता की वजह से वह काम वास्तविकता से ज़्यादा बड़ा नज़र आता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि देखने वाले यह मानते हैं कि जो व्यक्ति इतनी आसानी से इतना अच्छा काम कर सकता है, उसमें उनसे ज़्यादा योग्यता होगी। (बाल्डेसर कास्टिग्लियोन, 1478-1529)

https://freehindipustakalya.blogspot.com

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम

31

विकल्पों पर नियंत्रण करें : दूसरों को ताश के उन पत्तों से खिलाएँ, जो आपने बाँटे हैं

विचार

सर्वश्रेष्ठ धोखा वह होता है, जिसमें आप सामने वाले को विकल्प देते हैं। इससे आपके शिकार को यह लगता है कि नियंत्रण उसके हाथ में है, जबकि वह दरअसल आपके हाथों की कठपुतली होता है। लोगों को ऐसे विकल्प दें, ताकि उनके द्वारा कोई सा भी विकल्प चुनने पर आपको लाभ हो। उन्हें दो बुराइयों में से कम बुरी बात को चुनने के लिए विवश करें, जबकि दोनों ही बातें आपके उद्देश्य को पूरा करें। उन्हें दुविधा के सींगों पर बैठा दें : जिधर मुड़ें, उन्हें घायल होना ही है।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

शक्ति की कुंजी

"स्वतंत्रता," "विकल्प" और "चुनाव" जैसे शब्दों से संभावनाओं की ऐसी ज़बर्दस्त शक्ति उत्पन्न होती है, जो उनसे प्राप्त लाभों की वास्तविकता से आगे तक जाती है। ग़ौर से देखें, हमारे पास बाज़ार में, चुनाव में, नौकरी में जो विकल्प होते हैं, उनकी निश्चित सीमाएँ होती हैं। अक्सर हमें ए और बी में से किसी एक को चुनना होता है, बाक़ी सभी अक्षर तस्वीर से बाहर होते हैं। लेकिन जब तक विकल्प चुनने की हल्की सी भी मृगमरीचिका रहती है, तब तक हम छूटे हुए विकल्पों पर शायद ही कभी ध्यान केंद्रित करते हैं।

इस वजह से चतुर और चालाक आदमी धोखा देने के बहुत से अवसर बना लेता है। जो लोग विकल्प चुन रहे हैं, उन्हें यह विश्वास ही नहीं होगा कि उन्हें धोखा दिया जा रहा है या उनका शोषण हो रहा है। वे यह नहीं देख पाते हैं कि आप उन्हें थोड़ी सी स्वतंत्रता सिर्फ़ इसलिए दे रहे हैं, ताकि बदले में वे आपकी इच्छा पूरी करने के लिए काम करें। इसलिए किसी को धोखा देते समय आपको इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि आप उसे बहुत ही सीमित विकल्प दें।

नीचे "विकल्पों पर नियंत्रण" के कुछ आम रूप दिए गए हैं :

विकल्पों में रंग भरें। यह हेनरी किसिंजर की प्रिय तकनीक थी। राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन के

जे.पी. मॉर्गन सीनियर ने एक बार अपने एक परिचित जौहरी से कहा कि वे मोती की स्कार्फ़ पिन ख़रीदना चाहते हैं। कुछ सप्ताह बाद जौहरी को एक शानदार मोती मिल गया। उसने इसे जड़वाकर मॉर्गन के पास भेज दिया। साथ में उसने 5,000 डॉलर का बिल भी भेज दिया। अगले दिन उसका पैकेट वापस लौट आया। मॉर्गन ने उसके साथ एक चिट्ठी भी भेजी थी, जिसमें यह लिखा था : "मुझे पिन पसंद है, लेकिन मुझे इसकी क़ीमत पसंद नहीं है। अगर आप इस चिट्ठी के साथ लगे 4,000 डॉलर के चेक को स्वीकार कर लें, तो कृपया बॉक्स की सील खोले बिना उसे वापस भेज दें।"

जौहरी तैश में आ गया। उसने चेक लेने से इंकार कर दिया और गुस्से से संदेशवाहक को वहाँ से भगा दिया। उसने बक्से को खोला, ताकि उसमें से पिन निकाल ले, लेकिन उसने देखा कि पिन वहाँ नहीं है और उसकी जगह पर 5000 डॉलर का चेक रखा हुआ है।

उद्धरण द लिटिल ब्राउन बुक ऑफ़ एनेक्डोट्स, 1985, संपादक क्लिफ़्टन फैडिमेन

राज्य मंत्री के रूप में किसिंजर ख़ुद को अपने बॉस से ज़्यादा जानकार मानते थे। लेकिन वे जानते थे कि अगर उन्होंने नीति तय करने की कोशिश की, तो इससे निक्सन को गुस्सा आ जाएगा, जो बहुत ही असुरक्षित व्यक्ति के रूप में मशहूर थे। इसलिए किसिंजर हर स्थिति के लिए तीन-चार विकल्प कार्य सुझाते थे और उन्हें इस तरह से प्रस्तुत करते थे, ताकि वही विकल्प सबसे अच्छा नज़र आए, जो वे सुझाना चाहते थे। हर बार निक्सन किसिंजर के जाल में फँस जाते थे, लेकिन उन्हें कभी यह शक भी नहीं हुआ कि वे उसी दिशा में जा रहे हैं, जिस दिशा में किसिंजर उन्हें ले जा रहे हैं।

हमेशा विरोध करने वाले को अपनी इच्छा पर चलने के लिए मजबूर कर दें। यह एक बहुत अच्छी तकनीक है, जिसका इस्तेमाल बच्चों और दुसरे जिद्दी लोगों पर किया जा सकता है, जो हमेशा आपकी कही बातों के विपरीत चलने में आनंद का अनुभव करते हैं। आप उनसे जो करवाना चाहते हैं, उसकी विपरीत बात कहें। अपनी आदत के मुताबिक़ वे उल्टा काम करेंगे और इस तरह वे वही काम करेंगे, उनसे जो आप करवाना चाहते हैं।

खेल के मैदान को बदल दें। 1860 के दशक में जॉन डी. रॉकफेलर ने कच्चे तेल पर एकाधिकार करने का लक्ष्य बनाया अगर वे छोटी तेल कंपनियों को खरीदने की कोशिश करते, तो वे उनके इरादे भाँप लेतीं और संघर्ष करतीं। इसके

https://freehindipustakalaye.blogspot.com

https://freehindipustakalya.blogspot.com

बजाय उन्होंने चुपचाप वे रेलवे कंपनियाँ ख़रीद लीं, जो तेल का परिवहन करती थीं। रॉकफ़ेलर ने खेल के मैदान को बदल दिया, जिससे छोटे तेल-उत्पादकों के पास सिर्फ़ वही विकल्प रहे, जो रॉकफ़ेलर ने उन्हें दिए थे।

सिमटते विकल्प। हर बार जब ख़रीदार झिझके और एक दिन बीत जाए, तो अपनी क़ीमत बढ़ा दें। अनिर्णय के शिकार व्यक्ति पर आज़माने के लिए यह बहुत अच्छी नीति है, जो यह सोचकर तत्काल निर्णय ले लेगा कि आने वाले कल के बजाय आज उसे ज़्यादा अच्छा सौदा मिल रहा है।

खाई की कगार पर खड़ा कमज़ोर आदमी। यह तकनीक "विकल्पों में रंग भरने" जैसी ही है, लेकिन कमज़ोर और अनिर्णय के शिकार लोगों के साथ आपको ज़्यादा आक्रामक होना पड़ेगा। उनकी भावनाओं को उत्तेजित करें - उनसे काम करवाने के लिए डर और दहशत का प्रयोग करें। अगर आप तर्क का हवाला देंगे, तो वे हमेशा टालमटोल करने का तरीक़ा खोज लेंगे।

उनके सामने हर तरह के ख़तरों का वर्णन करें। आप ख़तरों को ज़्यादा से ज़्यादा बढ़ा-चढ़ाकर बताएँ। इसका परिणाम यह होगा कि हर दिशा में खाई दिखने लगेगी, सिवाय उस दिशा के, जहाँ आप उन्हें ले जाना चाहते हैं।

दुविधा के सींग। यह मुकदमा लड़ने वाले वकीलों की आदर्श तकनीक है : वकील गवाह

जर्मन शासक बिस्मार्क जर्मनी के उदार राजनेता और वैज्ञानिक रुडोल्फ़ विरचाऊ की निरंतर आलोचना से भड़क गए। उन्होंने वैज्ञानिक के पास संदेशवाहक भेजकर उसे द्वंद्वयुद्ध के लिए ललकारा। "चूँकि इसकी चुनौती आप दे रहे हैं, इसलिए मुझे हथियार चुनने की स्वतंत्रता है," विरचाऊ ने कहा। "और मैं इन्हें चुनता हूँ।" उसने दो बड़े और एक जैसे दिख रहे सैंडविच ऊपर उठा लिए। उसने आगे कहा, "इनमें से एक सैंडविच में घातक विषाणु हैं, इसलिए इसे खाने वाला मर जाएगा। जबकि दूसरा सैंडविच बिलकुल ठीक है। महामहिम स्वयं फ़ैसला करें कि वे इनमें से कौन सा सैंडविच खाना चाहते

हैं जो सैंडविच बचेगा उसे मैं खा लूँगा।" तत्काल संदेश आया कि सम्राट ने द्वंद्वयुद्ध न करने का फ़ैसला किया है।

उद्धरण द लिटिल ब्राउन बुक ऑफ़ एनेक्डोट्स, 1985, संपादक क्लिफ़्टन फैडिमेन

को किसी घटना के दो संभावित स्पष्टीकरणों में से किसी एक को चुनने को कहता है, जब दोनों में ही कोई न कोई पेंच होता है। उन्हें वकील के सवालों का जवाब देना होता है, लेकिन चाहे वे कुछ भी जवाब दें, नुकसान उन्हीं को होता है। इस क़दम की सफलता की कुंजी तत्काल वार करना है : अपने शिकार को बचाव के बारे में सोचने का समय न दें। जब वे दुविधा के सींगों के बीच में छटपटाते हैं, तो वे अपनी खुद की क़ब्र खोद लेते हैं।

तस्वीर : बैल के सींग। बैल अपने सींगों से आपको कोने में धकेल देता है। एक अकेले सींग से नहीं, जिससे आप बच सकते हैं, बल्कि दो सींगों से, जो आपको फंसा लेते हैं। आप दाएँ दौड़ें या बाएँ, दोनों ही तरफ आप उन सींगों में फँस जाएँगे और घायल हो जाएँगे।

विशेषज्ञ की राय : अंततः दूसरों द्वारा दिए गए घाव और बुरी बातों से ज़्यादा दर्दनाक वे घाव और बुरी बातें होती हैं, जिन्हें इंसान ख़ुद विकल्प चुनकर मोल लेता है। (निकोलो मैकियावली, 1469-1527)

https://freehindipustakalya.blogspot.com

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम
32

लोगों की फ़ंतासियों के साथ खेलें

विचार

सच्चाई से लोग अक्सर बचते हैं क्योंकि यह बदसूरत और अप्रिय होती है। सच्चाई और यथार्थ का आग्रह कभी न करें, जब तक कि आप उस क्रोध के लिए तैयार न हों, जो विरक्ति से उत्पन्न होता है। ज़िंदगी इतनी कठोर और दुखद है कि जो लोग रोमांस निर्मित सकते हैं या फ़ंतासी (Fantasy) की उड़ान भर सकते हैं, वे रेगिस्तान में नख़लिस्तान की तरह हैं - हर व्यक्ति उनकी तरफ भागेगा। लोगों की फ़ंतासियों का दोहन करने में प्रबल शक्ति होती है।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

शक्ति की कुंजी

फ़ंतासी कभी अकेले काम नहीं कर सकती। इसके लिए नीरसता के नेपथ्य की ज़रूरत होती है। सच्चाई के दमन की वजह से ही फ़ंतासी जड़ें जमाती है और फलती-फूलती है।

जो व्यक्ति दमनकारी सच्चाई के बीच फ़ंतासी चुन सकता है, उसके पास बहुत शक्ति होती है। जब आप जनता को बाँधने वाली फ़ंतासी की खोज करते हैं, तो आप उन सांसारिक सच्चाइयों पर निगाह रखें, जो सब पर भारी पड़ती हैं। लोग अपने या अपने जीवन के बारे में जो कपोल-कल्पित भव्य तस्वीरें बताते हैं, उससे अपना ध्यान न भटकने दें। इसके बजाय उस चीज़ को खोजें, जिसने उन्हें सचमुच क़ैद कर रखा है। जब आपको वह चीज़ मिल जाएगी, तो आपके पास एक ऐसी जादुई कुंजी होगी, जो आपको बहुत शक्तिशाली बना देगी।

हालाँकि लोग और समय बदलते रहते हैं, लेकिन हम कुछ स्थायी दमनकारी सच्चाइयों की जाँच करते हैं। हम यह भी देखेंगे कि वे शक्ति हासिल करने के अवसर कैसे प्रदान करती हैं :

वास्तविकता : परिवर्तन धीमा और क्रमिक होता है। इसके लिए कड़ी मेहनत, थोड़ी सी किस्मत, बहुत ज़्यादा त्याग और बहुत से धैर्य की ज़रूरत होती है।

फ़ंतासी : अचानक कायापलट हो जाएगी, जिससे इंसान की क़िस्मत पूरी तरह से बदल जाएगी। फ़ंतासी को सच करने के लिए मेहनत, किस्मत,

त्याग और समय की ज़रूरत नहीं होगी।

ज़ाहिर है यह धोखेबाज़ों की ज़बरदस्त फ़ंतासी है। एक महान और पूर्ण परिवर्तन का वादा करें - गरीब से लेकर अमीर तक, बिमार से लेकर स्वस्थ तक, दुख से परम सुख तक। इस वादे में लोग आपके जाल में फँस जाएँगे और आपके अनुयायी बन जाएँगे।

वास्तविकता : समाज के कुछ दृढ़ सिद्धांत और सीमाएँ हैं। हम इन सीमाओं को समझते हैं और जानते हैं कि हमें हर दिन इन्हीं के बीच घूमना है।

फ़ंतासी : हम अलग सिद्धांतों और रोमांच के वादों के साथ एक बिल्कुल नई दुनिया में प्रवेश कर सकते हैं।

अठारहवीं सदी की शुरुआत में पूरा लंदन एक रहस्यमय युवक के बारे में बातें कर रहा था, जिसका नाम जॉर्ज सालमैनेजार था। वह ऐसी जगह से आया था, जो ज़्यादातर अंग्रेजों की नज़र में बहुत रोमांचक थी। वह फोरमोसा (अब ताईवान) के टापू से आया था, जो चीन के समुद्र तट के समीप था। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी ने सालमैनेजार को उस टापू की भाषा सिखाने के लिए अपने यहाँ रखा। कुछ साल बाद उसने एक पुस्तक लिखी, जो तत्काल बेस्टसेलर बन गई। यह पुस्तक फोरमोसा के इतिहास और भूगोल के बारे में थी। अंग्रेज सामंतों ने उस युवक को दावतों में आमंत्रित किया और जहाँ भी वह गया, उसने अपने

अगर आप ऐसे झूठ बोलना चाहते हैं, जिन पर यक़ीन कर लिया जाए, तो ऐसे सच कभी न बोलें जिन पर यक़ीन न किया जा सके।

जापान के सम्राट

तोकुगावा आइयेसु.

सत्रहवीं सदी

https://freehindipustakalya.blogspot.com

https://freehindipustakalya.blogspot.com

मेज़बानों को अपने टापू के बारे में दिलचस्प कहानियाँ सुनाईं।

बहरहाल सालमैनेजार की मौत के बाद उसकी वसीयत में यह रहस्य खुला कि वह तो दरअसल एक फ्रांसीसी था, जिसके पास प्रबल कल्पनाशक्ति थी। उसने फ़ोरमोसा के बारे में जो कुछ भी कहा था, वह सब मनगढ़ंत था। उसने एक विस्तृत कहानी गढ़ी थी, जिससे अँग्रेज जनता की रहस्यमय और रोमांचक सामग्री की भूख संतुष्ट हुई। ब्रिटिश संस्कृति के लोगों के ख़तरनाक सपनों पर कठोर नियंत्रण से उसे उनकी फंतासी का दोहन करने का आदर्श अवसर मिला।

वास्तविकता : मौत। मुर्दा लोगों को ज़िंदा नहीं किया जा सकता, अतीत को बदला नहीं जा सकता।

फ़ंतासी : इस असहनीय तथ्य को अचानक उलट देना।

वर्मियर की कला की सुंदरता और महत्व के बार में सब जानने हैं, लेकिन उनकी पेंटिंग्स की संख्या बहुत कम है और उन्हें दुर्लभ माना जाता है। बहरहाल, 1930 के दशक में वर्मियर की कई पेंटिंग्स कला बाज़ार में नज़र आने लगीं। उनकी सच्चाई की जाँच करने के लिए विशेषज्ञों को बुलाया गया, जिन्होंने उन्हें असली घोषित कर दिया। यह लैज़ारस को दोबारा ज़िंदा करने की तरह था। एक अजीब तरीके से वर्मियर को दोबारा ज़िंदा कर दिया गया। अतीत

बदल गया था।

बाद में यह सच्चाई सामने आई कि वर्मियर की नई पेंटिंग्स दरअसल एक अधेड़ डच जालसाज ने बनाई थी, जिसका नाम हैंस वान मीगेरन था। और उसने अपनी धोखाधड़ी के लिए वर्मियर को इसलिए चुना क्योंकि वह फ़ंतासी को समझता था। पेंटिंग्स इसलिए असली दिखेंगी, क्योंकी जनता और विशेषज्ञ दिल से उन्हें मानना चाहते थे।

याद रखें : फ़ंतासी की कुंजी दूरी है। दूर की चीज़ें आकर्षित करती हैं और लुभाती हैं। वे आसान और समस्यारहित दिखती हैं। आप जो देने का प्रस्ताव रख रहे हैं, वह पकड़ में नहीं आना चाहिए। उसे कभी चिर-परीचित न बनने दें। वह तो दूर की मृगमरीचिका होना चाहिए, जो पास पहुँचते ही और दूर हो जाए। फ़ंतासियों के जालसाज के रूप में आप अपने शिकार को इतना क़रीब आने दें कि वह देख सके और उसका मन ललचाए, लेकिन उसे इतना दूर रखें, ताकि वह उसके सपने देखता रहे और उसकी इच्छा करता रहे।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

https://freehindipustakalya.blogspot.com

तस्वीर : चाँद। उसे हासिल नहीं किया जा सकता। वह हमेशा आकार बदलता है। कभी दिखता है, कभी छिप जाता है। हम उसकी तरफ़ देखते हैं, कल्पना करते हैं, सोचते हैं और उसकी इच्छा रखते हैं। वह हमेशा नया लगता है, लगातार सपने जगाता है। कभी स्पष्ट चीज़ का प्रस्ताव न रखें। चाँद का वायदा करें।

विशेषज्ञ की राय : झूठ एक आकर्षण है, एक जालसाज़ी है, जिसे फ़ंतासी में सजाया जा सकता है। इसे रहस्यमयी अवधारणा के पर्दे में रखा जा सकता है। सत्य भावहीन और गंभीर होता है, जिसे झेलना आरामदेह नहीं होता। झूठ ज़्यादा स्वादिष्ट होता है। दुनिया में सबसे तिरस्कृत व्यक्ति वह है, जो हमेशा सच बोलता है और जिसके पास कल्पनाशीलता नहीं होती है... मैंने पाया है कि कल्पना की उड़ान सच से बहुत ज़्यादा रोचक और लाभदायक होती है। (जोसेफ़ वील, द यलो किड, 1877-1976)

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम

33

हर व्यक्ति की कमज़ोर नस पहचानें

विचार

हर व्यक्ति की एक न एक कमज़ोरी होती है, हर महल की दीवार में एक न एक छेद होता है। यह कमज़ोरी आम तौर पर कोई असुरक्षा कोई अनियंत्रित भाव या आवश्यकता होती है। यह कोई छोटा रहस्यमय सुख भी हो सकता है। चाहे यह जो भी हो, एक बार मिल जाने पर आप इस कमज़ोर नस का इस्तेमाल अपने लाभ के लिए कर सकते हैं।

कमज़ोर नस खोजना : रणनीति की कार्ययोजना

हम सबमें प्रतिरोध होता है। हम अपने चारों तरफ़ एक रक्षाकवच बना लेते हैं, जो परिवर्तन के ख़िलाफ़ सुरक्षा प्रदान करता है। यह रक्षाकवच हमारे मित्रों व दुश्मनों की घुसपैठ को रोकता है। बहरहाल यह जान लेना बहुत महत्वपूर्ण होता है कि हर इंसान के मनोवैज्ञानिक रक्षाकवच का कोई न कोई हिस्सा कमज़ोर होता है, जो घुसपैठ का प्रतिरोध नहीं करता। अगर आप इस कमज़ोर हिस्से को खोज लेते हैं और इसका इस्तेमाल करते हैं, तो आप उस व्यक्ति को अपनी इच्छा के अनुसार ढाल लेंगे। कुछ लोग अपनी कमज़ोरियों का खुलेआम इज़हार करते हैं, जबकि बाक़ी उन्हें छिपाते हैं। जब कोई रक्षाकवच को भेद लेता है, तो अपनी कमज़ोरियाँ छिपाने वाले लोग ही ज़्यादा गच्चा खाते हैं।

अपने आक्रमण की योजना बनाते समय इन सिद्धांतों का ध्यान रखें :

मुद्राओं और अचेतन संकेतों पर ध्यान दें। जैसा सिगमंड फ्रॉयड ने कहा था, "कोई भी इंसान अपने रहस्य नहीं छिपा सकता है। अगर उसके होंठ नहीं बोलेंगे, तो उसकी उँगलियाँ बोलेंगी। उसका रोम-रोम चिल्ला-चिल्लाकर रहस्य बता देगा।" किसी व्यक्ति की कमज़ोरी खोजते समय इस महत्वपूर्ण सिद्धांत को हमेशा याद रखें - कमज़ोरी महत्वहीन दिखने वाली मुद्राओं और शब्दों से प्रकट होती है।

शेर, साँभर और लोमड़ी

एक घाटी में एक शेर साँभर का पीछा कर रहा था। वह उसे पकड़ने ही वाला था और हसरत भरी आँखों से निश्चित व संतुष्टिदायक भोजन का सुख ले रहा था। ऐसा लग रहा था, जैसे शिकार के लिए बचकर निकलना असंभव है, क्योंकि एक गहरा दर्रा शिकार और शिकारी के सामने था। लेकिन तेज़ी से भाग रहे साँभर ने अपनी पूरी ताक़त बटोरी और कमान से निकले तीर की तरह दर्रे के पार कूद गया तथा दूसरी तरफ़ की चट्टान पर खड़ा हो गया। शेर उसी जगह पर रुक गया। लेकिन उसी समय उसकी मित्र लोमड़ी उसके पास

https://freehindipustakalya.blogspot.com

कमज़ोरी खोजते समय सफलता की कुंजी सिर्फ़ यह नहीं है कि आप किसकी तलाश करते हैं, बल्कि यह भी है कि आप कहाँ और कैसे तलाश करते हैं। हर दिन की बातचीत में कमज़ोरियों का सबसे समृद्ध भंडार मिलता है, इसलिए सुनने की कला सीखें।

अगर आपको शक है कि किसी की कोई ख़ास नाज़ुक जगह है, तो इसकी जाँच अप्रत्यक्ष तरीक़े से करें। अपनी आँख को विस्तृत जानकारी पाने के लिए प्रशिक्षित करें - वह व्यक्ति वेटर को कैसे टिप देता है, उसे किस चीज़ से ख़ुशी मिलती है, उसके कपड़ों में कौन सा संदेश छिपा है। लोगों के आदर्श व्यक्तियों के बारे में पता लगाएँ। वे किन चीज़ों को प्रबलता से चाहते हैं और उन्हें पाने के लिए वे कुछ भी कर सकते हैं - शायद आप उनकी फ़ंतासियों को पूरा कर सकते हों। याद रखें : चूँकि हम सब अपनी कमज़ोरियों को छिपाने की कोशिश करते हैं, इसलिए हमारे सचेतन व्यवहार से बहुत कम बातें पता चल सकती हैं। हमारे सचेतन नियंत्रण के बाहर की छोटी चीज़ों से ही असली बातें पता चलती हैं और आपको उन्हीं का पता लगाना है।

असहाय बच्चे को खोजें। अधिकांश कमज़ोरियाँ बचपन में शुरू होती हैं, क्योंकि व्यक्ति अपना रक्षाकवच बचपन के बाद ही बनाना शुरू करता है। शायद बच्चे को किसी ख़ास क्षेत्र में विशेष दुलार दिया गया हो या उसकी कोई विशेष भावनात्मक ज़रूरत पूरी नहीं हुई हो। बड़े होने

आई। लोमड़ी बोली, "आप इतने ताक़तवर और तेज़ होते हुए कमज़ोर साँभर से हार जाएँगे? आपमें सिर्फ़ इच्छाशक्ति की कमी है, वरना आप चमत्कार कर सकते हैं। हालाँकि दर्रा गहरा है, लेकिन अगर आप सचमुच गंभीर हैं, तो मैं यक़ीन के साथ कह सकती हूँ कि आप इसे पार कर जाएँगे। आप मेरी निस्वार्थ दोस्ती पर भरोसा कर सकते हैं। अगर मुझे आपकी शक्ति और तीव्रता पर विश्वास नहीं होता, तो मैं आपकी ज़िंदगी को ख़तरे में कभी नहीं डालती।" शेर का ख़ून गर्म होकर शिराओं में उबलने लगा। उसने अपनी पूरी ताक़त से छलाँग लगाई. लेकिन वह दर्रे को पार नहीं कर पाया। वह सिर के बल

https://freehindipustakalya.blogspot.com

पर वह दुलार या कमी दफ़न तो हो सकती है, लेकिन कभी ख़त्म नहीं होती है। बचपन की ज़रूरत का पता लगाने से आपको हर व्यक्ति की कमज़ोरी के बारे में एक सशक्त कुंजी मिल जाती है।

इस कमज़ोर नस की एक निशानी यह है कि जब आप इसे छूते हैं, तो वह व्यक्ति अक्सर किसी बच्चे की तरह व्यवहार करने लगता है। इसलिए किसी ऐसे व्यवहार की तलाश करें, जिसे बचपन में ही छोड़ देना चाहिए था।

विरोधाभास को खोजते रहें। प्रकट गुण के पीछे अक्सर इसका विपरीत गुण छिपा होता है। जो लोग अपना सीना ठोंकते रहते हैं, वे प्रायः डरपोक होते हैं। जो लोग परंपरावादी होने का नाटक करते हैं, वे अक्सर रोमांच के भूखे होते हैं। उनके दिखावे पर न जाएँ, असलियत खोजने पर आप अक्सर पाएँगे कि लोगों में उनके प्रकट गुणों के विपरीत कमज़ोरियाँ होती हैं।

खाली जगह भरें। दो मुख्य भावनात्मक ख़ालीपन होते हैं : असुरक्षा और दुख। असुरक्षित लोग किसी भी तरह की सामाजिक मान्यता पाने के लिए लालायित रहते हैं। जो लोग दुखी हैं, उनके दुख की जड़ें खोजें। असुरक्षित और दुखी लोग अपनी कमज़ोरियों को सबसे कम छिपा पाते हैं। उनके भावनात्मक ख़ालीपन को भरने की क्षमता शक्ति का बहुत बड़ा स्रोत होती है और लंबे समय तक लाभ देती है।

नीचे गिर गया और मर गया। फिर उसकी प्रिय मित्र लोमड़ी ने क्या किया? वह सावधानी से दर्रे के नीचे गई। वहाँ पर खुले आसमान के नीचे खुली हवा में पहुँचकर उसने देखा कि अब शेर की चापलूसी करने की कोई ज़रूरत नहीं है। वह तत्काल अपने मित्र का क्रियाकर्म करने लगी और एक महीने में ही उसने उसकी हड्डियाँ तक साफ कर दीं।

फेबल्स ऑफ रशिया, इवान क्रिलोफ,

1768-1844

https://freehindipustakalya.blogspot.com

https://freehindipustakalya.blogspot.com

अनियंत्रित भावनाओं की जाँच करें। अनियंत्रित भावना किसी मनोवैज्ञानिक डर का संकेत होती है - एक ऐसा डर जो स्थिति के अनुपात में न हो - या वासना, लोभ, दंभ या नफ़रत जैसा घटिया उद्देश्य। इन भावनाओं की जकड़ में रहने वाले लोग अक्सर खुद पर क़ाबू नहीं रख पाते हैं और आप उन्हें अपने नियंत्रण में ले सकते हैं।

तस्वीर : कमज़ोर नस। आपके शत्रु के कुछ रहस्य होते हैं, जिनकी वह रक्षा करता है। वह अपने विचारों को उजागर नहीं करता है, लेकिन वे उसकी जानकारी के बिना ही कई तरीक़ों से प्रकट हो जाते हैं, जैसे उसके सिर, दिल या पेट के खाँचे से। एक बार जब आपको कमज़ोर नस मिल जाए, तो आप उस पर अपना अँगूठा रख दें और उसे अपनी मर्ज़ी से नचाएँ।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

विशेषज्ञ की राय : हर व्यक्ति की कमज़ोर नस का पता लगाएँ। इससे आप उससे इच्छानुसार काम करवा सकते हैं। इसमें संकल्प की कम, योग्यता की ज़्यादा आवश्यकता होती है। आपको यह पता होना चाहिए कि किस जगह पर हाथ रखना है। हर इच्छा का एक ख़ास उद्देश्य होता है, जो रुचि के अनुसार बदलता रहता है। सभी लोग किसी न किसी चीज़ के लिए लालायित रहते हैं - कुछ शोहरत के लिए तो, कुछ स्वार्थ-सिद्धि के लिए, और ज़्यादातर आनंद के लिए। योग्यता यह जानने में निहित है कि सामने वाला किस चीज़ के लिए लालायित है, ताकि उससे लाभ उठाया जाए। किसी व्यक्ति की मुख्य प्रेरणा को जान लेने से आपको उसकी इच्छा की कुंजी मिल जाती है। (बाल्तेसर ग्रेशियन, 1601-1658)

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम 34

शहंशाहों की तरह रहें : सम्राट जैसा सम्मान पाने के लिए सम्राट की तरह काम करें

विचार

आप जिस तरह से खुद को पेश करते हैं, उसी से अक्सर यह तय होता है कि लोग आपके साथ कैसा व्यवहार करेंगे। घटिया या साधारण दिखने पर लोग आपका सम्मान हर्गिज़ नहीं करेंगे। चूँकि सम्राट खुद अपना सम्मान करता है, इसलिए दूसरों को भी उसका सम्मान करने की प्रेरणा मिलती है। शहंशाहों की तरह व्यवहार करके और अपनी शक्तियों में विश्वास दिखाकर आप स्वयं को मुकुट पहनने की दिशा में ले जाते हैं।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

शक्ति की कुंजी

सभी महान धोखेबाजों में एक उल्लेखनीय बात होती है जिससे उन्हें शक्ति मिलती है। धोखा देते समय उन्हें खुद पर पूरा विश्वास होता है। इसी कारण उनके आस-पास के लोग उन पर प्रबलता से विश्वास कर लेते हैं।

फ्रेडरिक नीत्शे, 1844-1900

बच्चों के रूप में हम अपनी ज़िंदगी बहुत उत्साह से शुरू करते हैं। हम दुनिया से हर चीज़ की आशा करते और माँगते हैं। आम तौर यह समाज में अपनी पहली घुसपैठ करते समय यानी अपना कैरियर शुरू करते समय भी होता है। लेकिन बड़े होने पर हमें अपमान और असफलताएँ मिलने लगती हैं। ये ऐसी सीमाएँ बना देती हैं, जो समय के साथ दृढ़ होती जाती हैं। हम दुनिया से कम आशाएँ करने लगते हैं और अपनी ही बनाई सीमाओं को मानने लगते हैं। हम झुकना और कंजूसी करना शुरू कर देते हैं। हम छोटे-छोटे आग्रहों के लिए माफ़ी माँगना शुरू कर देते हैं। अगर हमारे क्षितिज सिकुड़ गए हैं, तो इसका समाधान यह है कि हम जान-बूझकर खुद को बदल लें - असफलताओं को ज़्यादा महत्व न दें, सीमाओं को नज़रअंदाज़ कर दें और बच्चों की ही तरह माँग व आशा करें। ऐसा करने के लिए हमें एक विशेष रणनीति अपनानी होगी, जिसे मुकुट रणनीति कहा जा सकता है।

मुकुट रणनीति कारण और परिणाम की आसान श्रृंखला पर आधारित है। अगर हम विश्वास करते हैं कि हम महान काम करेंगे, तो हमारा विश्वास उसी तरह झलकेगा, जिस तरह मुकुट राजा के चारों तरफ़ एक आभामंडल पैदा करता है। यह बाहरी चमक हमारे आस-पास के लोगों को प्रभावित करेगी, जो यह सोचेंगे कि हमारे इस विश्वास के पीछे पर्याप्त कारण होंगे।

इतिहास में ऐसे उदाहरण हैं कि सामान्य

https://freehindipustakalya.blogspot.com

परिस्थिति में जन्मे लोगों ने - बाइज़ैंशियम के थियोडोरस, कोलंबस, बीथोवन और डिज़राइली जैसे लोगों ने - मुकुट रणनीति का प्रयोग करके सफलता पाई है। इन लोगों को अपनी महानता में इतना दृढ़ विश्वास था कि वे सचमुच महान बन गए। इसकी शर्त सिर्फ़ इतनी है : आपमें आत्म-विश्वास कूट-कूट कर भरा होना चाहिए। हालाँकि आप जानते हैं कि आप खुद को धोखा दे रहे हैं, लेकिन सम्राट की तरह व्यवहार करें। इस बात की संभावना है कि लोग भी आपके साथ सम्राट की तरह व्यवहार करेंगे।

मुकुट आपको बाक़ी लोगों से अलग कर सकता है, लेकिन यह आप पर है कि आप उस अलगाव को वास्तविक बना दें : आपको अलग तरह से काम करना है और अपने आस-पास के लोगों से दूरी बनाकर रखना है। अपने अलगाव को रेखांकित करने का एक तरीक़ा यह है कि हमेशा गरिमापूर्ण व्यवहार करें, चाहे परिस्थितियाँ कैसी भी हों।

शाही व्यवहार का मतलब यह नहीं है कि आप दंभी या घमंडी बन जाएँ। दंभ सम्राट का गुण लग सकता है, लेकिन दरअसल यह असुरक्षा का सूचक होता है। यह शाही व्यवहार के ठीक विपरीत होता है।

गरिमा दरअसल मुश्किल परिस्थितियों में पहनने के लिए आदर्श नक़ाब है। इस तरह से व्यवहार करें, जैसे कोई चीज़ आपको प्रभावित नहीं कर सकती है और आपके पास प्रतिक्रिया करने के लिए काफ़ी समय है। यह बहुत सशक्त

कभी अपना आत्म-सम्मान न गँवाएँ। अकेलेपन में भी खुद का अपमान न करें। अपनी ईमानदारी को अपने सही होने का पैमाना बनाएँ और बाहरी मानदंडों के बजाय आत्म-चिंतन के प्रति कठोर रहें। बुरे दिखने वाले व्यवहार से दूर रहें, बाहरी सत्ता के आदेशों के कारण नहीं, बल्कि अपने गुणों के प्रति सम्मान के कारण। अगर आप अपना सम्मान करेंगे, तो आपको सेनेका के काल्पनिक शिक्षक की कोई ज़रूरत नहीं होगी।

बाल्तेसर ग्रेशियन, 1601-1658

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नाटक है।

अंत में, शाही व्यवहार दिखाने में आंतरिक मनोवैज्ञानिक चालों के साथ-साथ बाहरी रणनीतियाँ भी मदद करती हैं। सबसे पहली रणनीति है कोलंबस रणनीति : हमेशा एक दुस्साहसिक माँग रखें। अपनी क़ीमत ऊँची रखें और उसे कम न करें। दूसरी, आस-पास के सबसे ऊँचे व्यक्ति पर गरिमापूर्ण ढंग से आक्रमण करें। इससे आप तत्काल उसी धरातल पर पहुँच जाते हैं, जहाँ वह व्यक्ति है जिस पर आप हमला कर रहे हैं। यह डेविड और गोलियाथ रणनीति है : बड़े विरोधी को चुनकर आप अपनी महानता का प्रदर्शन करते हैं।

तीसरी बात, अपने से ऊपर बैठे लोगों को किसी न किसी तरह का तोहफ़ा दें। यह उन लोगों की रणनीति है, जिनका कोई संरक्षक होता है। अपने संरक्षक को उपहार देकर आप दरअसल यह कह रहे हैं कि आप दोनों समान हैं।

याद रखें : अपनी क़ीमत तय करना आप पर है। कम माँगेंगे, तो आपको कम मिलेगा। इसलिए ज़्यादा माँगें और यह संकेत दें कि आप शाही खज़ाने के क़ाबिल हैं। जो लोग आपकी माँग को स्वीकार नहीं करेंगे, वे भी आपके आत्मविश्वास के लिए आपका सम्मान करेंगे और अंततः यह सम्मान आपको ऐसे तरीक़ों से लाभ देगा, जिनकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते हैं।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

तस्वीर मुकुट। इसे सिर पर रखते ही आप एक अलग मुद्रा में आ जाते हैं - शांत लेकिन विश्वास से भरपूर। शंका न करें, मुकुट पहनते समय अपनी गरिमा न खोएँ, वरना यह आपके सिर पर फ़िट नहीं होगा। उस स्थिति में यह आपसे ज़्यादा योग्य व्यक्ति के नाप का होगा। इस बात का इंतज़ार न करें कि कोई दूसरा आपको मुकुट पहनाए; महान सम्राटों ने अपने मुकुट खुद पहने हैं।

विशेषज्ञ की राय : हर व्यक्ति को सम्राट की तरह व्यवहार करना चाहिए। अपने सभी कामों को सम्राट जैसा बनाएँ। महान काम करें, ऊँचे विचार रखें और अपने सभी कामों के माध्यम से यह प्रदर्शित करें कि भले ही आप सचमुच सम्राट नहीं हैं, लेकिन आप सम्राट बनने के क़ाबिल हैं। (बाल्तेसर ग्रेशियन, 1601-1658)

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम
35

टाइमिंग की कला में माहिर बनें

विचार

कभी जल्दबाज़ी में न देखें। जल्दबाज़ी से ऐसा लगता है, जैसे आपका खुद पर और समय पर नियंत्रण नहीं है। हमेशा धैर्यवान नज़र आएँ, जैसे आपको यह विश्वास हो कि आख़िरकार आप सफल होंगे। सही पल को खोजें। समय की आत्मा को परखें। उन प्रवृत्तियों को समझ लें, जो आपको शक्तिशाली बनाएँगी। अगर समय अभी अनुकूल नहीं है, तो मैं पीछे रहूँगा, लेकिन अनुकूल समय आने पर मैं कसकर वार करूँगा।

https://freehindipustakalaya.blogspot.com

शक्ति की कुंजी

समय एक कृत्रिम अवधारणा है, जिसे हमने ख़ुद बनाया है। हमने ब्रह्मांड के असीम स्वरूप को ज़्यादा सहनीय और मानवीय बनाने के लिए समय को ईजाद किया है। चूँकि हमने समय की अवधारणा को बनाया है, इसलिए हम इसे कुछ हद तक मोड़ सकते हैं और इसके साथ खिलवाड़ कर सकते हैं। बच्चे का समय लंबा और धीमा होता है, जबकि वयस्क व्यक्ति का समय बहुत तेज़ी से गुज़र जाता है। समय अनुभूति पर निर्भर करता है, जो इच्छानुसार बदली जा सकती है। यह वह पहली बात है, जो हमें टाइमिंग की कला में महारत हासिल करने के लिए समझ लेना चाहिए।

हमारे पास तीन तरह के समय होते हैं, जिनसे हमें जूझना पड़ता है। हर एक में समस्याएँ होती हैं, जिन्हें कुशलता और अभ्यास से सुलझाया जा सकता है। सबसे पहले तो लंबा समय है : बरसों लंबा समय, जिसका प्रबंधन धैर्य और मार्गदर्शन द्वारा किया जाना चाहिए। फिर तात्कालिक समय है : अल्पकालीन समय, जिसका इस्तेमाल आक्रामक हथियार के रूप में अपने विरोधियों की टाइमिंग गड़बड़ाने के लिए करना चाहिए। अंत में, समापन समय है, जब हमें योजना को तेज़ी और शक्ति के साथ पूरा करना होता है। हमने सही समय का इंतज़ार किया है और इसके आने के बाद अब हमें हिचकना नहीं चाहिए।

पर्शिया के सुल्तान ने दो लोगों को मौत की सज़ा सुनाई। उनमें से एक यह जानता था कि सुल्तान अपने घोड़े से बहुत प्रेम करता था। उसने सुल्तान से कहा कि अगर वह उसकी जान बख़्श देगा, तो वह एक साल में उसके घोड़े को उड़ना सिखा देगा। सुल्तान यह सुनकर ख़ुश हो गया कि वह दुनिया के इकलौते उड़ने वाले घोड़े पर सवारी कर सकता है। वह इस बात के लिए तैयार हो गया। दूसरे कैदी ने अपने मित्र की तरफ़ अविश्वास से देखा और बोला, "तुम जानते हो कि कोई भी घोड़ा नहीं उड़ सकता है। तुमने इस तरह की पागलपन की बात सोची भी कैसे? तुम तो सिर्फ अपनी मौत को एक साल

https://freehindipustakalya.blogspot.com

लंबा समय। जब आप डर और अधीरता से शक्ति पाना चाहते हैं, तो आप बहुत सी समस्याएँ पैदा कर लेते हैं, जिन्हें सुलझाने की ज़रूरत होती है। इन्हें सुलझाने में बहुत ज़्यादा समय लग जाता है, जो उस स्थिति में नहीं लगता, अगर आपने समय लिया होता। जल्दबाज़ी कभी-कभार जल्दी तो पहुँचा देती है, लेकिन इससे नए ख़तरे खड़े हो जाते हैं। जल्दबाज़ी करने वाले लोग निरंतर संकट की स्थिति में रहते हैं और उन समस्याओं को सुलझाने में ही लगे रहते हैं, जिन्हें उन्होंने खुद पैदा किया है। कई बार ख़तरे की स्थिति में कुछ न करना ही सर्वश्रेष्ठ क़दम होता है – आप इंतज़ार करते हैं और जान-बूझकर अपनी गति धीमी कर देते हैं। जब सही समय आएगा, तो अंततः यह आपको ऐसे अवसर देगा, जिनकी आपने कल्पना भी नहीं की थी।

आप जान-बूझकर समय को धीमा इसलिए नहीं करते हैं क्योंकि आप ज़्यादा लंबा जीना चाहते हैं या उस पल का ज़्यादा आनंद लेना चाहते हैं। आप ऐसा इसलिए करते हैं, क्योंकि आप शक्ति के खेल को बेहतर तरीक़े से खेलना चाहते हैं। जब आपका मस्तिष्क तात्कालिक आपातकालीन स्थितियों के बोझ से मुक्त होगा, तभी आप भविष्य में आगे तक देख पाएँगे। तभी आप लोगों द्वारा दिए जा रहे प्रलोभनों का प्रतिरोध भी कर पाएँगे। इस तरह आप अधीर मूर्ख बनने से बच जाते हैं। शक्ति की नींव बनाने में आपको बरसों का समय लग सकता

के लिए टाल रहे हो।" पहला क़ैदी बोला, "ऐसी बात नहीं है। मैंने दरअसल खुद को स्वतंत्रता के चार मौक़े दिए हैं। पहली बात, सुलतान एक साल के भीतर मर सकता है। दूसरी बात, मैं मर सकता हूँ। तीसरी बात, घोड़ा मर सकता है। और चौथी बात... हो सकता है, मैं घोड़े को उड़ना सिखा ही दूँ!"

आर.जी.एच. सिऊ, द क्राफ्ट ऑफ़ पॉवर, 1979

https://freehindipustakalya.blogspot.com

है, बहरहाल यह सुनिश्चित करें कि वह नींव सुरक्षित हो। कुछ समय चमकने वाले न बनें - जो सफलता धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रूप से बनती है, सिर्फ़ वही अंत तक क़ायम रहती है।

तात्कालिक समय। समय को विवश करने का राज़ यह है कि आप दूसरों की टाइमिंग गड़बड़ा दें। उन्हें जल्दबाज़ी से काम करने, इंतज़ार करने, स्वाभाविक गति से भटकाने और उनके समय के एहसास को विकृत होने के लिए विवश कर दें। जब आप धैर्यवान रहकर सही समय का इंतज़ार करते हैं और अपने विरोधी की टाइमिंग गड़बड़ा देते हैं, तो आप आधी लड़ाई जीत लेते हैं।

लोगों से इंतज़ार करवाना समय को विवश करने का एक सशक्त तरीक़ा है। वे नहीं जानते हैं कि आप क्या करने वाले हैं, क्योंकि घड़ी को आप नियंत्रित करते हैं। वे आपका इंतज़ार करते हैं और जल्दी ही आपको ऐसे अवसर देते हैं, जिनका आप लाभ उठा सकते हैं। इसका विपरीत प्रभाव भी इतना ही शक्तिशाली है : आप अपने विरोधियों से जल्दबाज़ी में काम करवाते हैं। उनके साथ शुरुआत तो धीमी करें, लेकिन फिर अचानक उन पर दबाव बढ़ा दें। उन्हें यह लगने दें कि हर चीज़ तत्काल हो रही है। जिन लोगों के पास सोचने का समय कम होता है, उनसे ग़लतियाँ ज़्यादा होती हैं, इसलिए उनके लिए डेडलाइन तय करें।

समापन समय। हो सकता है आप खेल को

हम खोया हुआ स्थान तो वापस पा सकते हैं, लेकिन कभी समय को वापस नहीं पा सकते।

नेपोलियन, 1769-1821

https://freehindipustakalya.blogspot.com

कुशलता से खेल सकते हों, हो सकता है आप काम करने के सही पल का धैर्य से इंतज़ार कर सकते हों, हो सकता है आप अपने प्रतियोगियों की टाइमिंग गड़बड़ाकर उनकी कुशलता को प्रभावित कर सकते हों, लेकिन आपको तब तक कोई फ़ायदा नहीं होगा, जब तक आप यह न जानते हों कि काम को पूरा कैसे करना है। धैर्य का तब तक कोई मतलब नहीं है, जब तक कि इसके साथ यह इच्छा न हो कि सही समय पर आप अपने विरोधी पर निर्ममता से हमला कर देंगे। आप समापन समय का जितना चाहे इंतज़ार करें, लेकिन जब यह सामने आए, तो काम तत्काल पूरा कर दें। अपने विरोधी को पंगु बनाने के लिए गति का इस्तेमाल करें।

तस्वीर : बाज़। वह धैर्य और शांति से आसमान का चक्कर लगाता है। वह अपनी शक्तिशाली आँखों से सब कुछ देख लेता है। नीचे के लोगों को यह पता ही नहीं होता कि वह उन्हें देख रहा है। जब सही पल आता है, तो बाज़ इतनी तेज़ी से नीचे झपट्टा मारता है कि उससे बचा नहीं जा सकता। इससे पहले कि शिकार यह जान पाए कि क्या हो रहा है, बाज़ के नुकीले पंजों में दबकर वह आसमान में पहुंच जाता है।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

विशेषज्ञ की राय : इंसान की परिस्थितियों में भी एक ज्वार आता है, जिस पर सवार होकर तक़दीर की मंज़िल तक पहुँचा जा सकता है, लेकिन अगर इसका लाभ न उठाया जाए, तो ज़िंदगी का सफ़र उथले पानी और दुखों में ही ख़त्म होता है। (जूलियस सीज़र, विलियम शेक्सपियर, 1564-1616)

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम

36

जो चीज़ें आप पा न सकें, उनका तिरस्कार करें : उन्हें नज़रअंदाज़ करना ही सर्वश्रेष्ठ प्रतिशोध है

विचार

किसी छोटी समस्या को स्वीकार करके आप उसे शक्ति प्रदान करते हैं। आप किसी दुश्मन पर जितना ज़्यादा ध्यान देते हैं, आप उसे उतना ही ज़्यादा शक्तिशाली बना देते हैं। और जब आप किसी ग़लती को ठीक करने की कोशिश करते हैं, तो छोटी सी ग़लती भी अक्सर ज़्यादा बुरी और स्पष्ट दिखती है। कई बार चीज़ों को उनके हाल पर छोड़ देना ही सबसे अच्छा होता है। अगर आप कोई चीज़ चाहते तो हैं, लेकिन उसे पा नहीं सकते, तो उसका तिरस्कार करें। आप जितनी कम रुचि दिखाएंगे, आप उतने ही ज़्यादा श्रेष्ठ देखेंगे।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

शक्ति की कुंजी

इच्छा के अक्सर विरोधाभासी परिणाम होते हैं। आप कीसी चीज़ को जितना ज़्यादा चाहते हैं, आप उसका जितना ज़्यादा पीछा करते हैं, वह आपसे उतनी ही दूर भागती है आप जितनी ज़्यादा रुचि दिखाते हैं, आपकी इच्छित वस्तु उतनी ही दूर रहती है। इसका कारण यह है कि आपकी रुचि बहुत प्रबल है - इससे लोग अजीब महसूस करते हैं और कई बार तो डर भी जाते हैं। अनियंत्रित इच्छा से आप कमज़ोर, अयोग्य और दयनीय नज़र आते हैं।

आप जिस चीज़ को चाहते हो, उसमें रुचि न दिखाएँ। इसके बजाय उसके प्रति तिरस्कार और नफ़रत दिखाएँ। इससे इतनी सशक्त प्रतिक्रिया उत्पन्न होगी कि आपके शिकार पगला जाएँगे। वे आपको प्रभावित करने - शायद आपको हासिल करने, शायद आपको नुक़सान पहुँचाने - की इच्छा से प्रतिक्रिया करेंगे। अगर वे आपको हासिल करना चाहते हैं, तो आपने प्रलोभन देने का पहला क़दम सफलतापूर्वक उठा लिया है। अगर वे आपको नुक़सान पहुँचाना चाहते हैं, तो आपने उन्हें विचलित कर दिया है और अपने नियमों के हिसाब से खेलने पर मजबूर कर दिया है।

तिरस्कार राजा का विशेषाधिकार है। उसकी निगाह जिधर जाती है, वह जिस चीज़ की तरफ़ देखने का निर्णय लेता है, वही जीवित है। वह जिस चीज़ को नज़रअंदाज़ करता है, वह जिसकी तरफ़ पीठ फेर लेता है, वह मुर्दा

एक बार जार्ज बर्नार्ड शॉ ने जी. के. केस्टरटन के आर्थिक विचारों की अख़बार में धज्जियाँ उड़ा दी। इस पर केस्टरटन के मित्र उनके जवाब का इंतजार करने लगे। इतिहासकार हिलेयर बेलोक ने उन्हें ऐसा न करने के लिए कोसा। इस पर केस्टरटन ने जवाब दिया, "प्रिय बेलोक, मैंने उसे जवाब दे दिया है। शॉ जैसे वाचाल आदमी के लिए ख़ामोशी ही सबसे असहनीय जवाब है!"

द लिटिल ब्राउन बुक ऑफ़ एनेकडोट्स, 1985, संपादक क्लिफ़्टन फ़ैडिमेन

है। यह सम्राट लुई चौदहवें का हथियार था - अगर वह किसी को पसंद नहीं करता था, तो वह ऐसा अभिनय करता था, जैसे वह व्यक्ति वहाँ हो ही नहीं। वह संवादहीनता के माध्यम से अपनी श्रेष्ठता बनाए रखता था। जब आप तिरस्कार के तुरुप का इस्तेमाल करते हैं, तो आप समय-समय पर लोगों को दिखा देते हैं कि उनके बिना भी आपका काम चल सकता है। इससे आपको शक्ति मिलती है।

अगर नज़रअंदाज़ करने से आपकी शक्ति बढ़ती है, तो इसकी विपरीत नीति यानी निष्ठा और समर्पण से आप अक्सर कमज़ोर होते हैं। अगर आप किसी पिद्दी दुश्मन की तरफ़ ज़्यादा ध्यान देंगे, तो आप भी पिद्दी दिखने लगेंगे। इस तरह के दुश्मन को कुचलने में आपको जितना ज़्यादा समय लगेगा, दुश्मन उतना ही बड़ा लगने लगेगा।

दूसरा ख़तरा : अगर आप चिढ़ाने वाले को कुचल देते हैं या घायल कर देते हैं, तो इससे लोगों के मन में कमज़ोर पक्ष के लिए सहानुभूति उत्पन्न हो जाती है।

अपनी ग़लतियों को सुधारने की कोशिश बहुत ही लुभावना विचार लगता है, लेकिन हम जितनी ज़्यादा कोशिश करेंगे, स्थिति उतनी ही बिगड़ जाएगी। कई बार ग़लतियों को जैसे का तैसा छोड़ देना ही ज़्यादा कूटनीतिक तरीक़ा होता है। समस्या पर ध्यान केंद्रित करने की ग़लती न करें, क्योंकि इससे यह प्रचारित होता है कि समस्या के कारण आप चिंता और तनाव

ज़्यादातर लोगों के साथ व्यवहार करते समय अगर आप कभी-कभार थोड़े तिरस्कार का प्रयोग करेंगे, तो कोई नुक़सान नहीं होगा। उसके कारण वे आपकी मित्रता को ज़्यादा महत्व दंगे। जैसी इटली की एक कहावत है, असम्मान करना सम्मान पाने का तरीका है। लेकिन अगर हम किसी व्यक्ति के बारे में सचमुच बहुत ऊँचा सोचते हैं, तो हमें उससे यह बात उसी तरह छिपाना चाहिए, जैसे यह कोई अपराध हो। ऐसा करना बहुत अच्छी बात तो नहीं है, लेकिन यह सही तकनीक है। इंसान की बात तो छोड़ ही दें, कोई कुत्ता भी बहुत ज़्यादा दयालुतापूर्ण व्यवहार बर्दाश्त नहीं कर सकता।

आर्थर शोपेनहार, 1788-1860

https://freehindipustakalya.blogspot.com

https://freehindipustakalya.blogspot.com

में हैं। इस तरह के पैंतरे से स्थिति और बिगड़ जाती है। इसके बजाय समझदारी इसी में है कि तिरस्कार करने वाले सामंत की भूमिका निभाएं और समस्या के अस्तित्व को ही स्वीकार न करें। इस रणनीति पर अमल करने के कई तरीके हैं।

पहली नीति तो खट्टे अंगूर वाली नीति है। मान लीजिए आप किसी चीज़ को चाहते हैं, लेकिन आप जानते हैं कि वह आपको नहीं मिल सकती। ऐसे में आप सबसे बुरा काम यह कर सकते हैं कि आप इसकी शिकायत करके अपनी निराशा की तरफ़ लोगों का ध्यान आकर्षित करें। बहरहाल इससे बहुत ज़्यादा शक्तिशाली रणनीति यह है कि आप इस तरह काम करें, जैसे आपकी दरअसल उस चीज़ में ज़रा भी रुचि न थी, न है और न रहेगी।

दूसरी बात, जब कोई हीन व्यक्ति आप पर हमला करे, तो लोगों का ध्यान दूसरी तरफ़ मोड़ दें। इस तरह यह स्पष्ट कर दें कि आपको उस हमले का एहसास ही नहीं हुआ है। दूसरी तरफ़ देखें या मीठे अंदाज़ में जवाब दें और यह दिखाएँ कि हमले का आप पर असर ही नहीं हुआ है। इसी तरह जब आप कोई बड़ी ग़लती कर दें, तो सबसे अच्छी प्रतिक्रिया यह होती है कि आप ग़लती को हल्के अंदाज़ में लेकर उसकी गंभीरता को कम कर दें।

याद रखें : छोटी-छोटी दिक्क़तों और समस्याओं पर सशक्त प्रतिक्रिया यही है कि आप तिरस्कार और अवहेलना का इस्तेमाल

https://freehindipustakalya.blogspot.com

करें। कभी यह न दिखाएँ कि आप पर किसी चीज़ का असर हुआ है या आपने बुरा माना है – इससे तो सिर्फ़ यह नज़र आता है कि आपने समस्या को स्वीकार कर लिया है। तिरस्कार एक ऐसा आहार है, जो सबसे अच्छा तभी लगता है, जब उसमें कृत्रिमता न दिखे और वह ठंडा हो।

तस्वीर :

छोटा घाव।

यह घाव छोटा होता है, लेकिन यह कष्टकारी और परेशान करने वाला होता है। आप हर तरह की दवाई आज़माते हैं, शिकायत करते हैं, खुजाते हैं। डॉक्टर इसे और बिगाड़ देते हैं। वे एक छोटे से घाव को गंभीर समस्या में बदल देते हैं। अगर आपने घाव पर ध्यान ही नहीं दिया होता, तो समय इसे भर देता और आपको चिंता भी नहीं होती।

विशेषज्ञ की राय : यह सीखें कि तिरस्कार के तुरुप से कैसे खेला जाता है। यह प्रतिशोध की सबसे बड़ी कूटनीतिक चाल है। बहुत से लोग गुमनाम ही रह जाते, अगर उनके प्रतिष्ठित विरोधियों ने उनकी तरफ़ ध्यान नहीं दिया होता। गुमनामी जैसा कोई प्रतिशोध नहीं है, क्योंकि यह अयोग्य लोगों की क़ब्र है, जो अपनी बनाई शून्यता की मिट्टी में मिल जाते हैं। (बाल्तेसर ग्रेशियन, 1601-1658)

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम
37

चकाचौंध का आभामंडल बनाएँ

विचार

प्रबल छवि और प्रतीकात्मक मुद्राएँ शक्ति का आभामंडल बनाती हैं - सब उन पर प्रतिक्रिया करते हैं। अपने आस-पास के लोगों के सामने नाटक करें। इस नाटक में रोचक तस्वीरें और चमकते प्रतीक भी होने चाहिए, जो आपकी उपस्थिति को बढ़ा-चढ़ाकर बताते हों। दिखावे की चकाचौंध में कोई भी इस तरफ़ ध्यान नहीं देगा कि आप दरअसल क्या कर रहे हैं।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

मैंने महान लीडर का प्रतिनिधित्व करने के लिए सूर्य को इसलिए चुना, क्योंकि इसकी रोशनी से बाक़ी ग्रह चमकाते हैं, जो दरबारियों की तरह इसके आस-पास घूमते हैं। मैंने सूर्य को इसलिए चुना, क्योंकि यह सभी पर समान रूप से और न्यायपूर्ण ढंग से किरणें डालता है। मैंने सूर्य को इसलिए चुना, क्योंकि यह सबका भला करता है और सबको जीवन, ख़ुशी और गतिविधि प्रदान करता है। मैंने सूर्य को इसलिए चुना, क्योंकि यह अटल है और कभी बदलता नहीं है।

लुई चौदहवाँ, द सन किंग, 1638–1715

शक्ति की कुंजी

अपनी पैरवी करने के लिए शब्दों का इस्तेमाल करने में जोखिम होता है। शब्द ख़तरनाक तीर हैं और अक्सर लक्ष्य से दूर जाकर गिरते हैं। लोग हमें मनाने के लिए जिन शब्दों का इस्तेमाल करते हैं, वे दरअसल हमें अपने शब्दों पर सोचने के लिए आमंत्रित करते हैं। हम उनके कहे शब्दों पर विचार करते हैं और अंत में उनके अर्थ की विपरीत बात पर विश्वास करते हैं (यह हमारे दुष्ट स्वभाव का हिस्सा है)। कई बार हमें किसी व्यक्ति के शब्दों से हमें चोट पहुँचती है, जबकि उसका ऐसा कोई इरादा नहीं था।

दूसरी तरफ़ दृश्य शब्दों के जाल में शॉर्ट-सर्किट कर देता है। इससे भावनात्मक शक्ति और तात्कालिकता उत्पन्न होती है, जिसमें सोचने और शक करने के लिए जगह ही नहीं होती है। संगीत की तरह ही यह भी तार्किक विचारों के ऊपर छलाँग लगाता है।

समझ लें : शब्दों के कारण आप रक्षात्मक स्थिति में पहुँचते हैं। अगर आपको स्पष्टीकरण देना पड़े, तो इसका मतलब यह है कि आपकी शक्ति पर प्रश्नचिन्ह लग चुके हैं। दूसरी तरफ़ छवि ख़ुदबख़ुद जवाब होती है। यह सवालों को हताश करती है, सशक्त साहचर्य उत्पन्न करती है, अनचाही व्याख्या का विरोध करती है, तत्काल संप्रेषण करती है और ऐसे बंधन बाँधती है, जो सामाजिक भिन्नताओं से ऊपर होते हैं। शब्दों से तर्क और मतभेद उत्पन्न होते हैं;

https://freehindipustakalya.blogspot.com

छवियाँ लोगों को एक सूत्र में जोड़ती हैं। छवियाँ शक्ति का मूल साधन हैं।

प्रतीक में भी यही शक्ति होती है, चाहे यह दृश्यात्मक हो या किसी दृश्यात्मक चीज़ का शाब्दिक वर्णन हो, जैसे "सूर्य राजा।" प्रतीकात्मक वस्तु किसी मूर्त या अमूर्त वस्तु की ओर इशारा करती है। भाववाचक अवधारणा - पवित्रता, देशभक्ति, साहस, प्रेम - भावनात्मक और सशक्त साहचर्यों से भरी होती है।

रोमन शासक कॉन्स्टेन्टाइन अपने ज़्यादातर जीवन में सूर्य की पूजा करते रहे। लेकिन एक दिन सूर्य की तरफ़ देखते समय उन्हें उस पर क्रॉस की छवि दिखाई दी। इसे देखने के बाद उन्हें एक नए धर्म के उदय का सबूत मिल गया और कुछ समय बाद वे ईसाई बन गए। यही नहीं, उन्होंने पूरे रोमन साम्राज्य का ईसाई धर्म में धर्मांतरण करवा दिया। दुनिया भर के भाषण और धार्मिक प्रवचन भी उन पर इतना सशक्त प्रभाव नहीं डाल सकते थे। ऐसी छवियों और प्रतीकों को खोजें तथा उनसे जुड़ें, जो इस तरह तत्काल प्रभावित करें। ऐसा करने पर आप बहुत ज़्यादा शक्तिशाली बन जाएँगे।

छवियों और प्रतीकों का ऐसा नया संयोग सबसे ज़्यादा असरदार होता है, जिसे इससे पहले एक साथ कभी न देखा गया हो, लेकिन उनके साथ मिलने से आपका नया विचार, संदेश, धर्म स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होता हो। पुरानी छवियों और प्रतीकों के माध्यम से नई छवियों व प्रतीकों की रचना का एक काव्यात्मक

क्योटो में साकामोटोया हेचिग्वान नाम का एक आदमी था... जब सम्राट हिदेयोशी ने 1588 के दसवें महीने में अपनी बैठक (चाय पार्टी) बुलाई, तो हेचिग्वान ने सात फुट ऊँची रस्सी पर नौ फुट की बड़ी लाल छतरी तान दी। उसने हैंडल की परिधि में दो फुट तक सरकंडों की कतार इस तरह बाँध दी, ताकि सूर्य की किरणें इससे परावर्तित हो जाएँ और छाते के रंगों को चारों तरफ़ छितरा दें। यह देखकर हिदेयोशी इतना ख़ुश हुआ कि उसने पुरस्कार में हेचिग्वान के सभी टैक्स माफ़ कर दिए।

ए. एल. सैडलर, चा-नो-यू : द जापानीज़ टी सेरेमनी, 1933

https://freehindipustakalya.blogspot.com

प्रभाव पड़ता है। देखने वाले उनका ज़्यादा ही अर्थ लगा लेते हैं और उन्हें सहभागिता का एहसास होता है।

अपने दल या समूह को प्रेरित करने, उत्साह बढ़ाने और एकता बढ़ाने के लिए प्रतीकों की शक्ति का प्रयोग करें। 1648 में फ्रांसीसी सम्राट के ख़िलाफ़ विद्रोह के दौरान विद्रोहियों ने सम्राट के वफ़ादारों की तुलना गुलेल से की, जिससे छोटे बच्चे बड़े बच्चों को डराते थे। कार्डिनल रेट्ज़ ने इस अपमानजनक बात को विद्रोहियों का प्रतीक बनाने का फ़ैसला किया। जल्दी ही विद्रोह का नाम इसी बात पर पड़ गया। वे गुलेल के प्रतीक को अपने हैट पर लगाने लगे और यह शब्द उनका नारा बन गया। इसके बिना विद्रोह टायँ-टायँ फिस्स हो गया होता। हमेशा अपने उद्देश्य का प्रतिनिधित्व करने के लिए एक प्रतीक खोजें - भावनात्मक साहचर्य जितने ज़्यादा होंगे, उतना ही अच्छा होगा।

छवियों और प्रतीकों का प्रयोग करने का सबसे अच्छा तरीक़ा उन्हें भव्य तस्वीर का रूप देना है, ताकि लोगों में आश्चर्यमिश्रित भय उत्पन्न हो और वे अप्रिय वास्तविकताओं को भूल जाएँ। यह करना आसान है : लोग भव्य और जीवन से बड़ी चीज़ों से प्रेम करते हैं। अगर आप उनकी भावनाओं को उकसाएँगे, तो वे झुंड बनाकर आपके भव्य दृश्य तक आ जाएँगे। उनके दिलों तक पहुँचने का सबसे आसान तरीक़ा उन्हें भव्य तस्वीर दिखाना है।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

तस्वीर : क्रॉस और सूर्य। सलीब और पूर्ण चमक। दोनों को साथ रख दिया जाए, तो एक नई सच्चाई पैदा हो जाती है और एक नई शक्ति का उदय होता है। प्रतीक - किसी स्पष्टीकरण की आवश्यकता नहीं है।

विशेषज्ञ की राय : लोग हमेशा चीज़ों के सतही रूप से प्रभावित होते हैं... राजा को हमेशा समय-समय पर लोगों को उत्सवों और तमाशों में व्यस्त रखना चाहिए। (निकोलो मैकियावली, 1469-1527)

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम
38

जैसा चाहे सोचें, व्यवहार सबके जैसा करें

विचार

अगर आप समय के ख़िलाफ़ चलते नज़र आएँगे, अगर आप अपारंपरिक विचारों और अप्रचलित तौर-तरीक़ों को प्रदर्शित करेंगे, तो लोग सोचेंगे कि आप सिर्फ़ उनका ध्यान खींचना चाहते हैं, इसलिए वे आपको हिक़ारत से देखेंगे। चूँकि आपने उन्हें हीन महसूस कराया है, इसलिए वे आपको दंड देने का रास्ता खोज लेंगे यह ज़्यादा सुरक्षित है कि आप सबके साथ घुल-मिल जाएँ और सामान्य दिखने का अभ्यास करें। अपने मौलिक विचार सिर्फ़ सहिष्णु मित्रों या उन्हीं को बताएँ, जिन पर आप भरोसा हो कि वे आपके अनूठेपन की कद्र करेंगे।

शक्ति की कुंजी

https://freehindipustakalaya.blogspot.com

हम सब झूठ बोलते हैं और अपनी सच्ची भावनाएँ छिपाते हैं, क्योंकि पूर्णतः सच्ची अभिव्यक्ति सामाजिक रूप से असंभव है। बचपन से ही हम अपने विचार छिपाना सीख लेते हैं और कष्टकारी तथा असुरक्षित लोगों को वह बताते हैं, जो वे सुनना चाहते हैं। हम बहुत सावधानी से बोलते हैं, ताकि उन्हें हमारी बात बुरी न लग जाए। हममें से ज़्यादातर लोगों के लिए यह स्वाभाविक है। कई ऐसे विचार और सिद्धांत हैं, जिन्हें अधिकांश लोग स्वीकार करते हैं और इस बारे में बहस करना बेकार है हम उसी चीज़ पर भरोसा करते हैं, जिस पर हम भरोसा करना चाहते हैं, लेकिन हम नक़ाब पहन लेते हैं।

बहरहाल ऐसे लोग भी होते हैं, जो अपनी स्वतंत्रता पर लगे इस तरह के बंधनों को असहनीय मानते हैं। वे अपने सिद्धांतों और विश्वासों की श्रेष्ठता साबित करना चाहते हैं। हालाँकि उनके तर्क सिर्फ़ कुछ लोगों को ही सही लगते हैं, जबकि ज़्यादातर लोग उनसे चिढ़ जाते हैं। तर्क काम नहीं करते हैं, इसकी वजह यह है कि ज़्यादातर लोग बिना सोचे-समझे अपने विचारों और सिद्धांतों को मानते चले जाते हैं। उनकी मान्यताओं में प्रबल भावनात्मक बल होता है : वे अपने सोचने की आदतों को दोबारा नहीं ढालना चाहते हैं और जब आप उन्हें चुनौती देते हैं (चाहे आप अपने तर्कों द्वारा प्रत्यक्ष रूप से दें या अपने व्यवहार द्वारा

नागरिक और यात्री

नागरिक ने कहा, "यात्री, अपने चारों तरफ़ देखो। यह दुनिया का सबसे बड़ा बाज़ार है।" यात्री ने कहा, "बिल्कुल नहीं।" नागरिक ने कहा, "शायद यह सबसे बड़ा बाज़ार तो नहीं है, लेकिन यह है बहुत अच्छा।" यात्री ने कहा, "तुम निश्चित रूप से ग़लत हो।" मैं तुम्हें बता सकता हुँ कि दुनिया का सबसे बड़ा या अच्छा बाज़ार कौन सा है..." उस शहर के नागरिकों ने उस अजनबी यात्री को शाम के धुंधलके में दफ़न कर दिया।

फ़ेबल्स, रॉबर्ट लुई स्टीवेन्सन, 1850-1894

अगर मैकियावली का शिष्य कोई राजा होता, तो उसने उसे करने के लिए पहली चीज़ यह दी होती कि वह मैकियावली के सिद्धांतों के ख़िलाफ़ कोई पुस्तक लिखे।

वोल्टेयर,

1694-1778

अप्रत्यक्ष रूप से दें), तो वे चिढ़ जाते हैं।

समझदार और चतुर लोग जल्दी ही यह सीख लेते हैं कि चाहे उन्हें परंपरा पर विश्वास हो या न हो, उन्हें पारंपरिक व्यवहार करना चाहिए और परंपरागत विचार व्यक्त करना चाहिए। इस तरह ख़ुद को ढालने से इन लोगों को वह शक्ति मिल जाती है कि वे अपने मनचाहे विचार सोच सकते हैं और उन्हें अपने मनचाहे लोगों के सामने व्यक्त कर सकते हैं, लेकिन उन्हें अकेलापन नहीं झेलना पड़ता। शक्तिशाली स्थिति में आने के बाद वे एक बड़े समूह को अपने विचारों के सही होने के बारे में विश्वास दिला सकते हैं - शायद अप्रत्यक्ष रूप से काम करके।

यह कल्पना करने की मूर्खता न करें कि आज के समय में पुरानी परंपराएँ ख़त्म हो चुकी हैं। उदाहरण के लिए, जोनस साक ने सोचा कि विज्ञान राजनीति और प्रोटोकॉल से आगे निकल चुका है। इसलिए पोलियो के टीके की खोज में उन्होंने सारे नियम तोड़ डाले। वैज्ञानिक समुदाय को दिखाने से पहले अपनी खोज जनता के सामने ले जाकर उन्होंने टीके का सारा श्रेय ले लिया। उन्होंने उन वैज्ञानिकों के योगदान को स्वीकार नहीं किया, जिन्होंने उन्हें राह दिखाई थी। नतीजा यह हुआ कि वे स्टार बन गए। जनता उनसे प्रेम करती थी, लेकिन वैज्ञानिक उनसे दूर ही रहते थे। अपने समुदाय की परंपराओं की अवज्ञा के कारण वे अलग-थलग पड़ गए। उन्होंने इस दूरी को

https://freehindipustakalya.blogspot.com

https://freehindipustakalya.blogspot.com

पाटने के लिए बरसों तक कोशिश की और धनराशि तथा सहयोग के लिए संघर्ष किया।

शक्तिशाली लोग न सिर्फ़ जोनस साक जैसे अपराध से बचते हैं, बल्कि वे चालाक लोमड़ी का अभिनय करना भी सीख लेते हैं और आम आदमी होने का नाटक करते हैं। चतुर कलाकारों और राजनेताओं की सदियों से यही नीति रही है। जूलियस सीज़र और फ्रैंकलीन डी. रुज़वेल्ट जैसे नेताओं ने आम आदमी जैसा दिखने के लिए अपने स्वाभाविक सामंती स्वरूप को बदला। उन्होंने इसे छोटी-छोटी प्रतीकात्मक मुद्राओं में व्यक्त किया, ताकि लोग देख सकें कि उनके ऊँचे पद पर पहुँचने के बावज़ूद वे आम जनता के जीवनमूल्यों पर चलते हैं।

इस व्यवहार का तार्किक विस्तार यह है कि आप हर एक के सामने उस जैसे हो जाएँ। यह योग्यता अमूल्य है। समाज में जाने पर अपने ख़ुद के विचारों व जीवनमूल्यों को पीछे छोड़ दें और उस नक़ाब को लगा लें, जो उस समूह में लगाना सबसे उचित है। बिस्मार्क ने यह खेल बरसों तक खेला - उस समय ऐसे लोग थे, जो अस्पष्ट रूप से उनके इरादे समझते थे, लेकिन बहुत स्पष्टता से नहीं समझते थे। लोग आपका डाला दाना आसानी से निगल लेंगे। कारण यह है की उन्हें यह विश्वास हो जाएगा कि आपके विचार भी उनके जैसे हैं। यह उन्हें अपनी चापलूसी लगेगी। अगर आप सावधान रहें, तो वे आपको पाखंडी नहीं मानेंगे। जब तक आप ख़ुद ही उन्हें अपने असली विचार नहीं बताएँगे,

https://freehindipustakalya.blogspot.com

तब तक वे आप पर पाखंड का आरोप लगा भी कैसे सकते हैं? न ही वे आपको जीवनमूल्यों से हीन मानेंगे। ज़ाहिर है, उनके साथ रहते समय आपके जीवनमूल्य भी उन्हीं जैसे दिखते हैं।

तस्वीर : काली भेड़। भेड़ों का झुंड काली भेड़ को दूर रखता है, क्योंकि उन्हें यह विश्वास नहीं होता कि काली भेड़ उनमें से एक है। इसलिए काली भेड़ झुंड से पीछे रह जाती है या दूर चलती है, जहाँ भेड़िये इसे फँसा लेते हैं और खा जाते हैं। झुंड के साथ रहें - संख्या में शक्ति होती है। अपनी भिन्नताओं को अपने मन में ही रखें, उन्हें सबके सामने उजागर न करें।

विशेषज्ञ की राय : कुत्तों को पवित्र चीज़ें न दें। सुअरों की तरफ़ मोती न उछालें, क्योंकि वे उन पर पैर रखकर उन्हें चूर-चूर कर देंगे और आप पर हमला कर देंगे। (ईसा मसीह, मैथ्यू 7:6)

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम

39

मछली पकड़ने के लिए पानी हिलाएँ

विचार

क्रोध और भावनाएँ रणनीति की दृष्टि से नुक़सान पहुँचाती हैं। आपको हमेशा शांत और उद्देश्य पर केंद्रित रहना चाहिए। स्वयं शांत रहते हुए अगर आप अपने शत्रुओं को ग़ुस्सा दिला सकें, तो आपको निश्चित रूप से लाभ होता है। अपने शत्रुओं को असंतुलित कर दें। उनके दंभ में कोई दरार खोजें, जिसके द्वारा आप उन्हें हिला सकें। अगर आप ऐसा करेंगे, तो उनकी बागडोर आपके हाथ में होगी।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

शक्ति की कुंजी

गुस्सैल लोग आम तौर पर मूर्ख नज़र आते हैं, क्योंकि वे छोटे से कारण पर बहुत ज़्यादा प्रतिक्रिया करते हैं। वे चीज़ों को कुछ ज़्यादा ही गंभीरता से ले लेते हैं और अपनी चोट या अपमान को बढ़ा-चढ़ाकर महसूस करते हैं। वे अपमान के प्रति बहुत संवेदनशील होते हैं और यह देखना मज़ेदार होता है कि वे हर चीज़ को व्यक्तिगत मान लेते हैं। इससे भी मज़ेदार बात यह है कि वे यह मानते हैं कि उनका ग़ुस्सा शक्ति का प्रतीक है। सच्चाई इसके विपरीत है। चिड़चिड़ापन शक्ति की नहीं, कमज़ोरी की निशानी है। हो सकता है लोग अस्थायी रूप से आपके भावावेश से सहम जाएँ, लेकिन उनके मन में आपके प्रति सम्मान नहीं रहेगा। वे यह भी समझ लेते हैं कि जिस व्यक्ति में इतना कम आत्म-नियंत्रण है, उसे वे आसानी से नष्ट कर सकते हैं।

बहरहाल, इसका समाधान यह नहीं है कि हम अपने ग़ुस्से या भावनात्मक प्रतिक्रियाओं का दमन कर दें। दमन हमारी ऊर्जा को निचोड़ लेता है और हमारे व्यवहार को अजीब बना देता है। इसके बजाय हमें अपना दृष्टिकोण बदलना चाहिए। हमें यह एहसास होना चाहिए कि सामाजिक क्षेत्र और शक्ति के खेल में कुछ भी व्यक्तिगत नहीं है।

हर व्यक्ति घटनाओं की ऐसी शृंखला में उलझा हुआ है, जो बहुत पहले शुरू हुई थीं। हमारा ग़ुस्सा अक्सर हमारे बचपन की समस्याओं

अगर संभव हो, तो किसी के प्रति शत्रुता महसूस नहीं करना चाहिए... किसी से गुस्से में बोलना, शब्दों या हावभाव से नफ़रत का प्रदर्शन करना अनावश्यक तो है ही, ख़तरनाक, मूर्खतापूर्ण और घटिया भी है। गुस्सा या नफ़रत कभी नहीं दिखाना चाहिए। आपको जो कुछ भी दिखाना हो, अपने काम से दिखाएँ। कर्म करते समय आपकी भावनाएँ अधिक प्रभावी होंगी, क्योंकि आपने किसी और तरीक़े से उनका प्रदर्शन नहीं किया है। सिर्फ़ ठंडे ख़ून वाले जानवरों का काटना ही ज़हरीला होता है।

आर्थर शोपेनहार, 1788–1860

https://freehindipustakalya.blogspot.com

से उत्पन्न होता है, हमारे माता-पिता का ग़ुस्सा उनके बचपन की समस्याओं से उत्पन्न होता है, और इसी तरह सिलसिला चलता रहता है। हमारे गुस्से की जड़ें दूसरों द्वारा अब तक हमारे साथ किए गए व्यवहार में होती हैं। हमारे ग़ुस्से की जड़ें उन असफलताओं तथा दुखों में होती हैं, जिन्हें हमने ज़िंदगी में झेला है। जब कोई व्यक्ति अक्सर हमें ग़ुस्सा दिलाता है, तो बात इतनी सी नहीं होती। यह इससे जटिल मामला है। उस व्यक्ति ने हमारे साथ क्या किया, बात इससे बहुत आगे तक जाती है। अगर कोई व्यक्ति आप पर आग बबूला हो जाता है (और आपको ऐसा लगता है कि आपकी ग़लती की तुलना में उसका ग़ुस्सा बहुत ज़्यादा है) तो आपको ख़ुद को यह याद दिलाना चाहिए कि उसका पूरा ग़ुस्सा शायद आप पर केंद्रित नहीं है। यह मुग़ालता न पालें। उस ग़ुस्से का कारण इससे कहीं ज़्यादा बड़ा और पुराना है। इसमें उसकी ज़िंदगी के दर्जनों पुराने घाव शामिल हैं और यह इतना मूल्यवान नहीं है कि इसे समझने की झंझट मोल ली जाए। किसी के ग़ुस्से या भावनात्मक आवेश को व्यक्तिगत वैमनस्य के रूप में न देखें, इसे तो इस रूप में देखें कि सामने वाला आप पर शक्ति पाने के लिए यह चाल चल रहा है। वह आहत भावनाओं और ग़ुस्से के पीछे छिपकर आपको नियंत्रित करने या सज़ा देने की कोशिश कर रहा है।

जब आप अपना नज़रिया बदल लेंगे, तो आप ज़्यादा स्पष्टता और ऊर्जा के साथ शक्ति

द्वितीय श्रेणी के एक अफसर किनयो का एक भाई था, जिसे पुरोहित योगाकू कहा जाता था। वह बहुत बुरे स्वभाव का था। उसके मठ के पास बिच्छू-बूटी का एक बड़ा पेड़ था, इसलिए लोगों ने उसका नाम बिच्छू-बूटी पुरोहित रख दिया। पुरोहित ने कहा, "यह कितना घटिया नाम है।" उसने पेड़ कटवा दिया, लेकिन उसका ठूँठ फिर भी बचा रह गया। लोग अब उसे ठूँठ पुरोहित कहने लगे। पहले से भी ज़्यादा ग़ुस्सा होकर पुरोहित ने उस ठूँठ को भी उखड़वा कर दूर फिंकवा दिया, लेकिन इससे वहाँ पर गड्ढा हो गया। अब लोग उसे गड्ढा पुरोहित कहने लगे।

एसेज़ इन आइडलनेस, केंको, जापान, चौदहवीं सदी

https://freehindipustakalya.blogspot.com

का यह खेल खेल सकेंगे। तब आप अति-प्रतिक्रिया करने और लोगों की भावनाओं में उलझने के बजाय उनके गुस्से से लाभ उठा पाएँगे।

तीसरी सदी में थ्री किंगडम्स नाम का महत्वपूर्ण युद्ध हुआ। इसमें साओ-साओ नाम के सेनापति के सलाहकारों के हाथ कुछ ऐसे दस्तावेज़ लग गए, जिनसे यह पता चला कि उनके कुछ जनरलों, ने दुश्मन के साथ मिलकर षड्यंत्र किया था। उन्होंने सेनापति को सलाह दी कि वह उन जनरलों को गिरफ़्तार करके सज़ा दे। लेकिन सेनापति ने ऐसा नहीं किया। इसके बजाय उसने दस्तावेज़ों को जलाने और मामले को भूल जाने का आदेश दिया। यह युद्ध का निर्णायक पल था और उस समय विचलित होने या न्यायपूर्ण काम करने से जीतना मुश्किल हो जाता। उसके ग़ुस्से भरे काम से लोगों का ध्यान जनरलों की गद्दारी की तरफ़ जाता, जिससे सैनिकों का मनोबल कम हो जाता। न्याय तो बाद में भी हो सकता था। गद्दार जनरलों को सज़ा तो बाद में भी दी जा सकती थी। साओ-साओ ने अपने दिमाग़ का इस्तेमाल करके सही निर्णय लिया।

ग़ुस्सा सिर्फ़ आपके विकल्पों को कम करता है और शक्तिशाली व्यक्ति विकल्पों के बिना फल फूल नहीं सकता। जब आप यह सीख जाते हैं कि मामलों को व्यक्तिगत नहीं मानना है और अपनी भावनात्मक प्रतिक्रियाओं पर क़ाबू रखना है, तो आप में ज़बर्दस्त शक्ति आ जाती है : अब आप दूसरों की भावनात्मक

https://freehindipustakalya.blogspot.com

प्रतिक्रियाओं से खेल सकते हैं। असुरक्षित लोगों को काम करने के लिए उकसाने का तरीक़ा यह है कि आप उनकी मर्दानगी पर संदेह प्रकट करें और उन्हें आसान विजय की संभावना दिखाएँ। गर्ममिज़ाज दुश्मन के सामने सबसे अच्छी प्रतिक्रिया यही है कि कोई प्रतिक्रिया ही न की जाए। जब बाक़ी सबका दिमाग़ गर्म हो रहा है, तो ठंडे दिमाग वाले व्यक्ति से ज़्यादा ग़ुस्सा दिलाने वाली और कोई चीज़ नहीं है। अगर लोगों को विचलित करने से आपको लाभ होता है, तो सामंतों की तरह बोरियत भरी मुद्रा का नाटक करें : यह मुद्रा मखौल उड़ाने वाली या विजयी नहीं होना चाहिए, बल्कि सिर्फ़ उदासीन होना चाहिए। इससे उनका फ़्यूज़ उड़ जाएगा। जब वे गुस्से की बौखलाहट से ख़ुद को लज्जित करेंगे, तो आप कई जीतें हासिल करेंगे। इनमें से एक जीत यह है कि उनके बचपने के बावज़ूद आपने अपनी गरिमा और शांति क़ायम रखी है।

तस्वीर : मछलियों से भरा तालाब। पानी स्वच्छ व शांत है और मछलियाँ सतह के काफ़ी नीचे हैं। पानी को हिलाएँ, तो वे ऊपर आ जाएँगी। पानी को कुछ और ज़्यादा हिलाएँगे, तो उन्हें गुस्सा आ जाएगा और वे सतह पर आकर सबसे पास वाली चीज़ को काटने लगेंगी - जिसमें ताज़ा दाना लगा हुक भी शामिल होगा।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

विशेषज्ञ की राय : अगर आपका विरोधी गुस्सैल है, तो उसे चिढ़ाने की कोशिश करें। अगर वह दंभी है, तो उसके गर्व को हवा देने की कोशिश करें... जो व्यक्ति अपने शत्रु से क़दम बढ़वाने में कुशल होता है, वह इस तरह अपनी मनचाही स्थिति पैदा कर लेता है और शत्रु से अपनी इच्छा के अनुसार काम करवाता है। वह शत्रु को ऐसा प्रलोभन देता है, जिस पर वह निश्चित प्रतिक्रिया करता है। वह उस दाने या प्रलोभन को दिखाकर शत्रु से क़दम बढ़वाता है और फिर अपने चुने हुए सैनिकों के साथ उस पर हमला कर देता है। (सुन त्सू, चौथी सदी, ई.पू.)

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम 40

मुफ़्त लंच का तिरस्कार करें

विचार

मुफ़्त में मिली चीज़ ख़तरनाक होती है। आम तौर पर इसमें कोई चाल या एहसान छिपा होता है। जिस वस्तु का कोई मूल्य होता है, वह क़ीमत चुकाने लायक होती है। जब आप क़ीमत चुकाते हैं, तो आप कृतज्ञता, अपराधबोध और धोखे से बचे रहते हैं। अक्सर पूरी क़ीमत चुकाने में ही समझदारी होती है - उत्कृष्टता के साथ किसी तरह का समझौता नहीं करना चाहिए। अपने धन को उदारता से ख़र्च करें और इसे प्रवाहित होने दें। उदारता शक्ति की निशानी है और इसे खींचने वाला चुंबक भी है।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

एक कंजूस ने अपनी सारी संपत्ति को सुरक्षित रखने के लिए सब कुछ बेच दिया और सोने का एक बड़ा ढेला ख़रीद लिया, जिसे उसने ज़मीन में एक गड्ढे में छिपा दिया। इसके बाद वह हर दिन उसे देखने जाता था। इससे उसके एक नौकर की उत्सुकता जाग गई। उसे शक हो गया कि मालिक ने वहाँ पर ख़ज़ाना छिपाकर रखा होगा। जब मालिक वहाँ से चला गया, तो वह उस जगह पर गया और उसने सोने का ढेला चुरा लिया। जब कंजूस अगले दिन अपना ख़ज़ाना देखने गया और उसे वह जगह ख़ाली मिली, तो वह रोने लगा और अपने बाल नोंचने लगा। एक पड़ोसी ने जब उसे इतना दुखी देखा और उसे

धन एवं शक्ति

शक्ति के क्षेत्र में हर चीज़ का मूल्यांकन उसकी क़ीमत के आधार पर किया जाना चाहिए, क्योंकि हर चीज़ की एक क़ीमत होती है। मुफ़्त या बहुत सस्ते में जो दिया जाता है उसकी अक्सर एक मनोवैज्ञानिक क़ीमत होती है - एहसान की जटिल भावना, गुणवत्ता के साथ समझौता, समझौते के कारण उत्पन्न असुरक्षा आदि। शक्तिशाली व्यक्ति जल्दी ही अपने सबसे बहुमूल्य संसाधनों यानी अपनी स्वतंत्रता और चाल चलने की जगह को सुरक्षित रखना सीख लेते हैं। पूरी क़ीमत चुकाकर वे ख़तरनाक बंधनों और चिंताओं से मुक्त रहते हैं।

धन के मामले में उदार और लचीला बनना रणनीतिक उदारता के मूल्य भी सिखाता है, जो इस पुरानी चाल का ही दूसरा रूप है, "लेने से पहले दें।" उचित उपहार देकर आप सामने वाले पर एहसान लाद देते हैं। उदारता से लोग अक्सर नर्म पड़ जाते हैं। फिर उन्हें धोखा दिया जा सकता है। उदारता की छवि के कारण लोग आपकी तारीफ़ करते हैं और आपकी चालों की तरफ़ उनका ध्यान नहीं जाता।

अगर एक व्यक्ति धन के साथ खेलता है, तो हज़ारों लोग धन का रचनात्मक और रणनीतिक प्रयोग करने से कतराते हैं और इस तरह अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मार लेते हैं। इस तरह के लोग अक्सर शक्तिशाली लोगों के विपरीत ध्रुव पर रहते हैं और आपको उन्हें पहचानना सीख लेना चाहिए, ताकि आप उनके

https://freehindipustakalya.blogspot.com

ज़हरीले स्वभाव से बच सकें या उनकी कठोरता से लाभ उठा सकें।

लोभी मछली। लोभी मछली धन को ही देखती है, मानवीय पहलू को नहीं देखती। ये लोग भावहीन और बेरहम होते हैं। वे सिर्फ़ बेजान बैलेंस शीट को ही देखते हैं। दौलत का पीछा करते समय ये लोग दूसरों को या तो प्यादा समझते हैं या फिर बाधा। वे दूसरों की भावनाओं को कुचलते हैं और मूल्यवान सहयोगियों को खुद से दूर कर लेते हैं। कोई भी व्यक्ति लोभी मछली जैसे लोगों के साथ काम नहीं करना चाहता है और बरसों बाद वे अंत में अकेले रह जाते हैं, जिससे अक्सर वे बर्बाद हो जाते हैं। उन्हें धोखा देना आसान है : सिर्फ़ आसान धन का दाना डालकर उन्हें ललचाएँ। वे न सिर्फ़ दाना, बल्कि धागा, काँटा, लाइन, डंडा सब कुछ निगल जाएँगे। वे आपका शोषण करें, इससे पहले या तो उनसे बचकर निकल जाएँ या फिर उनके लोभ से लाभ उठाएँ।

भाव-ताव का राक्षस। शक्तिशाली लोग हर चीज़ का मूल्यांकन इस बात से करते हैं कि इसकी लागत क्या है, सिर्फ़ पैसों की नहीं, बल्कि समय, गरिमा, और मानसिक शांति की भी। और यही भाव-ताव करने वाले लोग नहीं कर सकते। भाव-ताव करते समय वे अपना क़ीमती समय बर्बाद करते हैं। वे हमेशा यही चिंता करते रहते हैं कि उन्हें कोई चीज़ थोड़े कम दाम पर कहाँ मिल सकती है। इसके

कारण पता चला, तो वह बोला, "चिंता मत करो! एक बड़ा सा पत्थर उठाकर उसी जगह पर रख दो और उसे ही अपना सोने का ढेला मान लो। चूँकि तुम उसका इस्तेमाल तो करना ही नहीं चाहते थे, इसलिए पत्थर और सोने के ढेर में कोई फ़र्क़ नहीं है।" धन का मूल्य उसका स्वामी बनने में नहीं, बल्कि उसका उपभोग करने में है।

फ़ेबल्स, ईसप, छठी सदी ई.पू.

जापान में एक कहावत लोकप्रिय है, "मुफ़्त की चीज़ से ज़्यादा महँगा कुछ नहीं होता।"

द अनस्पोकन वे, मिचिहिरो, मात्सुमोटो, 1988

https://freehindipustakalya.blogspot.com

अलावा, भाव ताव करने के बाद वे जो सामान ख़रीदते हैं, वह अक्सर घटिया होता है, शायद उनमें महँगी मरम्मत की ज़रूरत होती है या फिर उसे अच्छी क्वालिटी की चीज़ से ज़्यादा जल्दी बदलना पड़ता है। इस तरह के लोग सिर्फ़ ख़ुद को नुक़सान पहुँचाते हैं, लेकिन उनका नज़रिया संक्रामक होता है।

परपीड़क। आर्थिक रूप से परपीड़क लोग शक्ति के बहुत ख़तरनाक खेल खेलते हैं और अपनी शक्ति को प्रकट करने के लिए धन का इस्तेमाल करते हैं। उदाहरण के लिए, वे धन देने से पहले आपको इंतज़ार करवाते हैं और अपसे यह वादा करते हैं कि उन्होंने चेक डाक से भिजवा दिया है। परपीड़क यह सोचते हैं कि अगर वे किसी को धन दे रहे हैं, तो उन्हें बदले में उस व्यक्ति को परेशान करने का अधिकार मिल गया है। उन्हें धन के मामले में दरबारी गुणों का कोई एहसास ही नहीं होता। अगर आप इतने दुर्भाग्यशाली हैं कि ऐसे व्यक्ति के साथ संबंधित हो चुके हों, तो उसके इन ख़तरनाक खेलों में उलझने के बजाय आर्थिक नुक़सान उठाना ही लंबे समय में बेहतर होता है।

बेहद उदारता। उदारता शक्ति के क्षेत्र में एक निश्चित भूमिका निभाती है : यह लोगों को आकर्षित करती है, उन्हें नर्म बनाती है, उन्हें सहयोगी बनाती है। लेकिन इसका प्रयोग रणनीतिक रूप से किया जाना चाहिए और आपके मस्तिष्क में एक निश्चित लक्ष्य होना

चाहिए। दूसरी तरफ़, बेहद उदार लोग सिर्फ़ इसलिए उदार होते हैं, क्योंकि वे सबका प्रेम और प्रशंसा चाहते हैं। चूँकि उदारता दिखाते समय वे पात्र और कुपात्र पर विचार नहीं करते हैं, इसलिए हो सकता है कि उनकी उदारता का मनचाहा असर ही न हो : अगर वे सबको देते हैं, तो पाने वाला ख़ुद को ख़ास क्यों समझेगा? हालाँकि बेहद उदार लोगों को अपना निशाना बनाना आकर्षक लग सकता है, लेकिन इस तरह के लोगों के साथ किसी भी संबंध में आप अक्सर उनकी भावनात्मक ज़रूरतों का बोझ महसूस करेंगे।

तस्वीर : नदी। ख़ुद की रक्षा करने या अपने संसाधनों को बचाने के लिए आप इस पर बाँध बना देते हैं। बहरहाल जल्दी ही पानी ठहर जाता है और संक्रमित हो जाता है। इस ठहरे पानी में बहुत घटिया प्राणी ही ज़िंदा रह सकते हैं। कोई भी वहाँ यात्रा नहीं करता है और सारा व्यवसाय ठप्प हो जाता है। बाँध को गिरा दें। बहते पानी से हमेशा प्रचुरता, दौलत और शक्ति पैदा होती है। नदी में समय-समय पर बाढ़ आनी ही चाहिए, ताकि अच्छी चीज़ें समृद्ध हो सकें।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

https://freehindipustakalya.blogspot.com

विशेषज्ञ की राय : जो बड़ा आदमी कंजूस होता है, वह महामूर्ख होता है। उच्च पदों पर बैठे आदमी के लिए कंजूसी से ज़्यादा हानिकारक कोई अवगुण नहीं होता है। कंजूस व्यक्ति न तो देशों को जीत सकता है, न ही वह लॉर्ड की पादवी पा सकता है, क्योंकि उसके पास पर्याप्त मित्र नहीं होते हैं, जिनके द्वारा वह अपनी इच्छा पूरी कर सके। जो भी मित्र बनाना चाहता है, उसे अपनी वस्तुओं से ज़्यादा प्रेम नहीं करना चाहिए, बल्कि उचित तोहफ़े देकर मित्र बनाना चाहिए, क्योंकि जिस तरह चुंबक लोहे को आकर्षित करता है, उसी तरह सोना-चांदी के तोहफ़े लोगों के दिल को आकर्षित करते हैं। (द रोमांस ऑफ द रोज, गिलोमे द लॉरिस, 1200-1238)

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम

41

महान व्यक्ति का अनुसरण न करें

विचार

जो पहली बार होता है, वह हमेशा बाद में होने वाले से ज़्यादा अच्छा और मौलिक दिखता है। अगर आप किसी महान व्यक्ति के उत्तराधिकार या किसी मशहूर पिता कि संतान हैं, तो आपको उनसे ज़्यादा चमकने के लिए उनसे दोगुनी उपलब्धियाँ हासिल करनी होगी। कहीं आप उनकी छाया में खोकर न रह जाएँ या ऐसे अतीत में उलझकर न रह जाएँ, जिसका निर्माण आपने नहीं किया है। राह बदलकर अपनी पहचान और अपना ख़ुद का नाम स्थापित करें। दबंग पिता के चंगुल से बाहर निकलें, उसकी विरासत की उपेक्षा करें और अपने तरीक़े से चमककर शक्ति हासिल करें।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

पहला होना सर्वश्रेष्ठ है

कई लोग अपने काम में फ़ीनिक्स की तरह चमक सकते थे, अगर बाक़ी लोग उनसे पहले नहीं आए होते। किसी भी काम में सबसे पहला होना एक बड़ा लाभ है, श्रेष्ठता होने पर यह दोगुना अच्छा होता है। पहले व्यक्ति के रूप में आप किला फ़तह कर लेते हैं। जो लोग पहले पहुँचते हैं, वे जन्मसिद्ध अधिकार के कारण शोहरत हासिल कर लेते हैं, और उनके बाद पहुँचने वाले लोग छोटे पुत्रों की तरह होते हैं, जिन्हें संपत्ति की खुरचन ही मिलती है... सोलोमन के पिता कुशल योद्धा थे, लेकिन सोलोमन ने समझदारी से शांति का विकल्प चुना। अपनी दिशा बदलने

शक्ति की कुंजी

कई प्राचीन राज्यों जैसे बंगाल और सुमात्रा में जब राजा कई साल तक शासन कर लेता था, तो उसकी प्रजा उसे मौत के घाट उतार देती थी। यह नवीनीकरण की परंपरा तो थी ही, साथ ही ऐसा इसलिए भी किया जाता था, ताकि वह ज़रूरत से ज़्यादा शक्तिशाली न बन जाए। उसकी मौत के बाद उसके अहंकारी होने का कोई ख़तरा नहीं रहता था, इसलिए अब उसकी पूजा देवता के रूप में की जा सकती थी। इससे किसी नए और युवा राजा के लिए मैदान भी साफ़ हो जाता था।

राजा या पिता के प्रति उभयभावी, शत्रुतापूर्ण नज़रिया उन महान व्यक्तियों की दंतकथाओं में भी दिखाई देता है, जो अपने पिता को जानते ही नहीं थे। मोज़ेस, जो बाद में बहुत शक्ति-संपन्न बने, बुलरशेस में बेसहारा पाए गए थे और उन्हें अपने माता-पिता का ज्ञान नहीं था। चूँकि उन्हें अपने पिता के साथ प्रतियोगिता नहीं करनी पड़ी और वे अपने पिता की छवि द्वारा सीमित नहीं थे, इसीलिए वे शक्ति की ऊँचाइयों तक पहुँच सके। अपने जीवन के उत्तर काल में अलैक्ज़ेंडर महान ने यह दंतकथा फैलाई कि उनके पिता फ़िलिप ऑफ़ मैसीडॉन नहीं, बल्कि देवता जुपिटर एम्मॉन हैं। इस तरह की दंतकथाएँ और परंपराएँ असली पिता को नष्ट कर देती हैं, क्योंकि वह अतीत की विनाशकारी शक्ति का प्रतीक होता है।

अतीत यानी पिता युवा हीरो को अपना संसार बनाने से रोकता है। युवक को अपने पिता

https://freehindipustakalya.blogspot.com

का अनुसरण करना पड़ता है, भले ही उसका पिता मर चुका हो या अशक्त हो चुका हो। हीरो को अपने पूर्वज के सामने सिर झुकाना पड़ता है और परंपरा के अनुसार चलना पड़ता है।

शक्ति ख़ाली स्थान को भरने की योग्यता पर निर्भर करती है। इसके लिए अतीत की मुर्दा लाश के भार को हटाकर नई जगह बनानी पड़ती है। पिता के स्वरूप को रास्ते से हटाने के बाद ही आपको आवश्यक जगह मिलेगी, जहाँ आप नई व्यवस्था जमा सकें। ऐसी कई रणनीतियाँ हैं, जिनका इस्तेमाल करके आप ऐसा कर सकते हैं।

अतीत की छाया से बचने का शायद सबसे आसान तरीक़ा इसे छोटा बताना है, पीढ़ियों के बीच शाश्वत विरोध का उल्लेख करना है, युवाओं को वृद्धों के ख़िलाफ़ भड़काना है। इसके लिए आपको नसेनी पर लटकाने के लिए किसी सुविधाजनक वृद्ध व्यक्ति की ज़रूरत होती है।

अपने अग्रज से दूरी स्थापित करने के लिए अक्सर किसी तरह के प्रतीक की ज़रूरत होती है, ताकि जनता इस दूरी को समझ ले। उदाहरण के लिए लुई चौदहवें ने इसी तरह की प्रतीकात्मकता का प्रयोग किया, जब उसने फ्रांसीसी सम्राटों के पारंपरिक महल को अस्वीकार करते हुए वर्साई में अपना खुद का महल बनवाया। उसके उदाहरण का अनुसरण करें : कभी भी अपने अग्रज की बनाई राह पर न चलें। अगर आप ऐसा करेंगे, तो आप कभी उससे आगे नहीं निकल पाएँगे। आपको एक भिन्न शैली और प्रतीकात्मकता का प्रयोग करके अलगाव व अंतर को स्पष्ट रूप से

के कारण उनके लिए हीरो बनना ज़्यादा आसान हो गया... और हमारे महान फ़िलिप द्वितीय ने विवेक के सिंहासन पर बैठकर पूरी दुनिया पर शासन किया, जिसे देखकर पूरी दुनिया हैरान रह गई। अगर उनके अजेय पिता शक्ति के आदर्श थे, तो फ़िलिप विवेक की प्रतिमूर्ति थे... इस तरह के नए रास्ते पर चलकर समझदार लोग महान लोगों की श्रेणी में अपना नाम लिखा लेते हैं। अपनी कला को छोड़े बिना चतुर लोग आम रास्ता छोड़ देते हैं और व्यवसाय में भी श्रेष्ठता की ओर नए क़दम बढ़ाते हैं। होरेस ने महाकाव्य की राह वर्जिल के पास ही रहने दी, मार्शल ने गीत

होरेस के पास रहने दिए, टेरेन्स ने कॉमेडी को चुना और पर्सियस ने व्यंग्य को। इनमें से हर व्यक्ति साहित्य की अपनी विधा में सर्वप्रथम होने की आशा कर रहा था। चलताऊ नक़ल कभी साहसिक कल्पना का स्थान नहीं ले सकती है।

बाल्तेसर ग्रेशियन, ए पॉकेट मिरर फ़ॉर हीरोज़, क्रिस्टोफ़र मौरर द्वारा अनूदित, 1996

दिखा देना चाहिए।

इतिहास का अध्ययन करने पर हमें एक ज़िद्दी मूर्खता के बारे में पता चलता है, जो शक्ति की प्रबल विरोधी है। यह अंधविश्वास की अगर आपसे पहले वाला कोई काम करके सफल हुआ है, तो आप भी वही काम उसी तरीके से करके उसी की तरह सफल हो सकते हैं। यह अनुसरण नीति रचनात्मकता से रहित लोगों को ललचा सकती है, क्योंकि यह आसान है और यह उनकी भीरुता तथा आलस्य को अच्छी लगती है। लेकिन परिस्थितियाँ कभी ठीक वैसी ही नहीं होती हैं। आपको अतीत के प्रति निर्मम रणनीति अपनाना चाहिए : अपने अग्रजों की सभी पुस्तकें जला दें और परिस्थितियों पर भिन्न प्रतिक्रिया करना सीखें।

अंत में, प्रचुरता और समृद्धि हमें आलसी तथा निष्क्रिय बना देती हैं। जब हमारे पास शक्ति आ जाती है, तो हमें काम करने की ज़रूरत नहीं होती। यह एक गंभीर ख़तरा है। समृद्धि से मोटे और आलसी बनने के बजाय आपको मनोवैज्ञानिक रूप से फिर से पहले पायदान पर पहुँचने के लिए तैयार रहना चाहिए। हमारी शुरुआती विजयें अक्सर हमें कार्टूनों में बदल देती हैं। शक्तिशाली व्यक्ति इस जाल को पहचानते हैं। वे लगातार बदलने के लिए संघर्ष करते हैं। पिता की छाया को वापस लौटने की इजाज़त कभी नहीं देनी चाहिए। उसे हर कदम पर मौत के घाट उतार देना चाहिए।

https://freehindipustakalaya.blogspot.com

तस्वीर : पिता। वह अपने बच्चों पर विशाल छाया डालता है। वह उन्हें अतीत की डोर से बाँधे रखता है। वह उनकी युवा भावना को दबाता है और उन्हें उसी बोझिल रास्ते पर चलने के लिए विवश करता है, जिस पर वह खुद चला है। उसकी चालें बहुत सी हैं। हर चौराहे पर आपको अपने पिता के प्रभाव को मार डालना चाहिए और उसकी छाया से बाहर निकलना चाहिए।

विशेषज्ञ की राय : किसी महान व्यक्ति का अनुसरण न करें। उससे आगे निकलने के लिए आपको दोगुना हासिल करना होगा। जो लोग अनुसरण करते हैं, उन्हें नक़लची माना जाता है। चाहे वे कितनी ही मेहनत करें, वे उस छवि से नहीं उबर पाएँगे। उत्कृष्टता की नई राह या शोहरत का आधुनिक मार्ग खोजना एक असाधारण योग्यता है। लोकप्रियता पाने की बहुत सी राहें हैं, जिनमें से कई पर ज़्यादा लोग नहीं चले हैं। सबसे नई राहें कठिन हो सकती हैं, लेकिन वे अक्सर महानता का शॉर्टकट होती हैं। (बाल्तेसर ग्रेशियन, 1601–1658)

https://freehindipustakalya.blogspot.com

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम

42

गड़रिए को मार दें, भेड़ें तितर-बितर हो जाएँगी

विचार

मुश्किलें अक्सर किसी एक प्रबल व्यक्ति की वजह से पैदा होती हैं - जो दंभी और महत्वाकांक्षी होता है, जो आंदोलन करता है और सद्भावना में ज़हर भर देता है। अगर आप ऐसे लोगों को सक्रिय होने की जगह देते हैं, तो दूसरे उनके प्रभाव के प्रलोभन में आ जाएँगे। उनके द्वारा उत्पन्न मुश्किलों के कई गुना बढ़ने का इंतज़ार न करें। उनके साथ विचार-विमर्श करने की कोशिश न करें। वे कभी नहीं सुधर सकते। उन्हें अलग-थलग करके या देश से बाहर निकालकर देशनिकाला देकर उनके प्रभाव को ख़त्म कर दें। मुश्किल की जड़ यानी गड़रिए पर प्रहार करेंगे, तो भेड़ें अपने आप तितर-बितर हो जाएँगी।

https://freehindipustakalaya.blogspot.com

शक्ति की कुंजी

पुराने ज़माने में राजा और उसके मुट्ठी भर मंत्री पूरे देश पर शासन करते थे। सिर्फ़ सामंतों के पास शक्ति होती थी। सदियों बाद शक्ति धीरे-धीरे प्रजातांत्रिक हुई। बहरहाल, इससे एक आम ग़लत धारणा उत्पन्न हो गई कि अब शक्ति किसी विशेष समूह में केंद्रित नहीं है, बल्कि पूरी जनता में है। बहरहाल यह सच नहीं है। हालाँकि शक्तिशाली समूहों की संख्या में फ़र्क़ भले ही पड़ा हो, लेकिन इसका सार नहीं बदला है। आजकल उन शक्तिशाली तानाशाहों की संख्या तो कम हो गई है, जो लाखों-करोड़ों देशवासियों की ज़िंदगी और मौत की शक्ति को अपने हाथ में थामे रहते हैं। लेकिन आज भी छोटे-छोटे इलाक़ों पर शासन करनेवाले हज़ारों छोटे तानाशाह बचे हैं, जो अप्रत्यक्ष शक्ति की चालों या करिश्माई व्यक्तित्व के माध्यम से हुकूमत करते हैं। हर समूह में शक्ति एक-दो लोगों के हाथों में ही केंद्रित होती है, क्योंकि यह एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें मानवीय स्वभाव कभी नहीं बदलेगा : लोग किसी प्रबल व्यक्तित्व के चारों तरफ़ उसी तरह इकट्ठे होंगे, जिस तरह ग्रह सूर्य के चारों तरफ़ चक्कर लगाते हैं।

जिन लोगों को यह भ्रम होता है कि शक्ति के केंद्र का यह प्रकार अब मौजूद नहीं है, वे अंतहीन ग़लतियाँ करते हैं, अपनी ऊर्जा और समय बर्बाद करते हैं। शक्तिशाली लोग कभी समय बर्बाद नहीं करते हैं। बाहर से वे खेल खेलते नज़र आते हैं और यह नाटक करते हैं

जब पेड़ गिरता है,
तो बंदर
तितर-बितर हो
जाते हैं।

चीनी कहावत

https://freehindipustakalya.blogspot.com

भेड़िए और भेड़

एक बार की बात है। भेड़ियों ने भेड़ों के पास प्रतिनिधि भेजकर यह इच्छा जताई कि उनके बीच भविष्य में शांति रहे। भेड़ियों ने कहा, "आख़िर हमारे बीच यह अंतहीन युद्ध क्यों चलता रहे? दुष्ट कुत्ते ही इसका कारण हैं। वे हम पर लगातार भौंकते रहते हैं और हमें उत्तेजित करते हैं। उन्हें दूर भगा दो, ताकि हमारी शाश्वत मित्रता व शांति के बीच में कोई बाधा न रहे।" मूर्ख भेड़ों ने भेड़ियों की बात मानकर कुत्तों को वहाँ से भगा दिया। जब भेड़ों की रक्षा करने के लिए कुत्ते नहीं रहे, तो भेड़ें धोखेबाज़ दुश्मनों का आसान शिकार बन गईं।

फेबल्स, ईसप, छठी सदी ई.पू.

कि शक्ति बहुत से लोगों में निहित है, लेकिन छिपकर वे समूह के चुनिंदा लोगों पर नज़र रखते हैं, जिनके पास तुरुप के पत्ते होते हैं। इन्हीं लोगों पर वे काम करते हैं। किसी मुश्किल के आने पर वे उसके पीछे छिपे कारण की तलाश करते हैं, वे उस अकेले प्रबल चरित्र की तलाश करते हैं, जिसने मुश्किल पैदा की थी और जिसे दूर करने या अलग करने से पानी की सतह दोबारा शांत हो जाएगी।

अपनी पारिवारिक थैरेपी की प्रैक्टिस में डॉ. मिल्टन एरिकसन ने पाया कि अगर परिवार का माहौल गड़बड़ा गया है, तो हमेशा एक व्यक्ति ही इसके लिए ज़िम्मेदार होता है। अपने सत्र में वे उस सदस्य को दूर बैठा देते थे और प्रतीकात्मक रूप से उस सड़े सेवफल को अलग कर देते थे। धीरे-धीरे परिवार के बाक़ी सदस्य इस दूर बैठे व्यक्ति को अपनी मुश्किल के स्रोत के रूप में देखने लगते थे। एक बार जब आप यह पहचान जाएँ कि आग कौन लगा रहा है, तो इसे दूसरे लोगों को बताने से बहुत कुछ हासिल हो सकता है। याद रखें : आग लगाने वाले छिपकर अपना काम करते हैं। वे दूसरों की प्रतिक्रियाओं में अपने कार्य छिपा लेते हैं। उनके कार्यों को सबके सामने ले आएँगे, तो उनकी मुश्किलें पैदा करने की शक्ति चली जाएगी।

रणनीति के खेलों में एक प्रमुख तत्व है शत्रु को अलग-थलग करना। शतरंज में आप राजा को किसी कोने में ले जाने की कोशिश करते हैं। गो नामक चीनी खेल में आप दुश्मन

https://freehindipustakalya.blogspot.com

की शक्तियों को छोटे स्थानों पर अलग-अलग रखने की कोशिश करते हैं, ताकि वे हिल न पाएँ और प्रभावहीन हो जाएँ। अपने दुश्मनों को नष्ट करने के बजाय उन्हें अलग-थलग करना अक्सर ज़्यादा अच्छा होता है, क्योंकि इससे आप कम क्रूर दिखते हैं। हालाँकि परिणाम वही होता है, क्योंकि शक्ति के खेल में एकाकीपन का मतलब मौत है।

एकाकीपन का सबसे प्रभावी रूप यह है कि मुश्किलें पैदा करने वाले को उसकी शक्ति के आधार से दूर कर दिया जाए। जब माओत्से-तुंग शासक समूह में शामिल किसी दुश्मन को नष्ट करना चाहते थे, तो वे सीधे उस पर आक्रमण नहीं करते थे, बल्कि चुपचाप और चोरी से उसे अलग-थलग करने की कोशिश करते थे। वे उस व्यक्ति के सहयोगियों को उससे दूर कर देते थे और उसके समर्थन आधार को संकुचित कर देते थे। जल्दी ही वह व्यक्ति अपने आप ग़ायब हो जाता था।

अंत में, आप गड़रिए पर हमला इसलिए करते हैं क्योंकि इससे भेड़ें दहशत में आ जाती हैं। जब लीडर चला जाता है, तो गुरुत्वाकर्षण का केंद्र भी चला जाता है। ऐसा कोई नहीं रहता है, जिसके चारों तरफ़ घूमा जाए। हर चीज़ बिखर जाती है। लीडर्स पर निशाना साधें, उन्हें नीचे लाएँ और उत्पन्न होने वाली दुविधा में अनंत अवसरों की तलाश करें।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

तस्वीर : मोटी भेड़ों का रेवड़। एक-दो भेड़ें चुराने की कोशिश में अपना क़ीमती समय बर्बाद न करें। भेड़ों के रेवड़ की रक्षा करने वाले कुत्तों पर हमला करके अपनी जान जोखिम में न डालें। इसके बजाय गड़रिए पर निशाना साधें। अगर आप उसे दूर जाने के लिए प्रलोभन देंगे, तो कुत्ते भी उसके पीछे-पीछे चले जाएँगे। गड़रिए को नीचे गिरा दें। उसे गिरा देखकर भेड़ें तितर-बितर हो जाएँगी और आप उन्हें एक-एक करके उठा सकते हैं।

विशेषज्ञ की राय : अगर आप धनुष तानते हैं, तो सबसे मज़बूत धनुष तानें। अगर आप तीर का प्रयोग करते हैं, तो सबसे लंबे तीर का प्रयोग करें। घुड़सवार को मारने के लिए पहले उसके घोड़े को मारें। डकैतों के गिरोह को पकड़ने के लिए पहले उसके सरगना को पकड़ें। जिस तरह किसी देश की सीमा होती है, उसी तरह लोगों को मारने की भी सीमा होती है। अगर मुखिया को मारकर दुश्मन के हमले को रोका जा सकता है, तो अनावश्यक रूप से लोगों को मारने या घायल करने से क्या लाभ है? (चीनी कवि डू फ़ू, तांग डाइनैस्टी, आठवीं सदी)

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम
43

दूसरों के दिल और दिमाग़ पर काम करें

विचार

बलपूर्वक दमन करने से एक प्रतिक्रिया उत्पन्न होती है, जो अंततः आपके ख़िलाफ़ काम करती है। आपको दूसरों को इस तरह प्रेरित करना चाहिए, ताकि वे ख़ुशी-ख़ुशी आपकी बताई दिशा में चल पड़ें। जिस व्यक्ति को आप इस तरह से फँसा लेते हैं, वह आपका वफ़ादार प्यादा बन जाता है। दूसरों को फँसाने का तरीक़ा उनके व्यक्तिगत मनोविज्ञान और कमज़ोरियों से लाभ लेना है। उसके प्रतिरोध को नर्म करने के लिए उनकी भावनाओं पर काम करें, उनकी प्रिय चीज़ों का वायदा करें और जिनसे वे डरते हों, उनके बारे में आश्वस्त करें। अगर आप दूसरों के दिलोदिमाग़ को नज़रअंदाज़ करेंगे, तो वे आपसे नफ़रत करने लगेंगे।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

शासन इंसानों को सिर्फ़ समूह के रूप में देखता था। लेकिन हमारे लोग समूह के बजाय व्यक्ति थे... हमारे राज्य हर व्यक्ति के मस्तिष्क के भीतर थे।

सेवन पिलर्स ऑफ़ विस्डम, टी.ई. लॉरेंस, 1888-1935

शक्ति की कुंजी

शक्ति के खेल में आप ऐसे लोगों से घिरे रहते हैं, जो बिना स्वार्थ के आपकी मदद नहीं करेंगे। और अगर आप उन्हें मनचाही चीज़ नहीं दे पाएँगे तो इस बात की संभावना है कि आप उन्हें अपना शत्रु बना लेंगे, क्योंकि वे आपको सिर्फ़ एक ऐसा व्यक्ति मानेंगे, जो उनका समय बर्बाद कर रहा है। इस ठंडेपन से उबर चुके लोग वे कुंजी पा लेते हैं, जो अजनबी के दिल और दिमाग़ का ताला खोलती है तथा उसे प्रलोभन देकर अपने पक्ष में लाती है, अगर ज़रूरी हो तो उन्हें मुक्का मारने से पहले नर्म बनाती है। जब लोग किसी नए व्यक्ति से मिलते हैं, तो उसके अनूठेपन को देखने के बजाय वे अपने ही बारे में बातें करते हैं और अपनी इच्छाएँ तथा पूर्वाग्रह लादने के लिए उत्सुक होते हैं। अनजाने में ही वे एक गोपनीय शत्रु बना रहे हैं, क्योंकि इंसान को सबसे ज़्यादा ग़ुस्सा इसी बात से आता है कि उसे नज़रअंदाज़ कर दिया जाए और उसके मनोविज्ञान को स्वीकार ही न किया जाए।

याद रखें : लोगों को मनाने की कुंजी उन्हें ऊपर उठाकर नर्म करना है और फिर धीरे से नीचे लाना है। दोतरफ़ा नीति अपनाएँ : उनकी भावनाओं को हवा दें और उनकी बौद्धिक कमज़ोरियों से खेलें। इस बारे में सचेत रहें कि कौन सी चीज़ उन्हें बाक़ी लोगों से अलग करती है (उनका व्यक्तिगत मनोविज्ञान) और किस बात में वे बाक़ी लोगों के समान हैं (उनकी

https://freehindipustakalya.blogspot.com

मूलभूत भावनात्मक प्रतिक्रियाएँ)। इन मूलभूत भावों पर निशाना साधें - प्रेम, नफ़रत, ईर्ष्या। जब आप उनके भाव जगा देंगे, तो इसका मतलब यह है कि आपने उनके आत्म-नियंत्रण को कम कर दिया है और अब वे आपकी बात मानने के लिए पहले से ज़्यादा तैयार हो चुके हैं।

प्रथम विश्व युद्ध में जब टी.ई. लॉरेंस मध्य-पूर्व के रेगिस्तानों में तुर्कों के ख़िलाफ़ लड़ रहे थे, तो उन्हें अचानक दिव्य ज्ञान प्राप्त हुआ : उन्हें ऐसा लगा कि पारंपरिक युद्ध का मूल्य अब ख़त्म हो चुका है। पुराने क़िस्म का सैनिक समय की विशाल सेनाओं में गुम हो गया था, जिसमें उसे किसी बेजान पिद्दी की तरह आदेश दिया जाता था। लॉरेंस इसको पलटना चाहते थे। उनके लिए हर सैनिक का मस्तिष्क एक राज्य था, जिसे उन्हें जीतना था। उनका मानना था कि मनोवैज्ञानिक रूप से प्रेरित निष्ठावान सैनिक पिद्दी से ज़्यादा मेहनत और कुशलता से लड़ेगा।

लॉरेंस का विचार आज की दुनिया में भी सही है। आज भी हममें से बहुत से लोग सत्ता से अलग-थलग, गुमनाम और सत्ता के प्रति शक्की महसूस करते हैं, जो शक्ति के खुले खेल खेलते हैं और ज़्यादा प्रतिकूल व ख़तरनाक शक्ति उत्पन्न करते हैं। लक्ष्य का पीछा करते समय अपने समर्थकों का इस्तेमाल बेजान पिद्दियों की तरह न करें। इसके बजाय उन्हें उस लक्ष्य की प्राप्ति का विश्वास दिला दें और रोमांचित कर दें। ऐसा करने के लिए आपको उनके

जिन लोगों ने दुनिया को बदला है, वे अपने लीडर्स को ख़ुश करके नहीं, बल्कि जनता को प्रेरित करके वहाँ पहुँचे हैं। लीडर्स को ख़ुश करना चालाकी भरा तरीक़ा है और इससे सिर्फ़ दोयम दर्जे के परिणाम मिलते हैं। बहरहाल, जनता को ख़ुश करना एक महान काम है, जिससे दुनिया का नक़्शा बदल जाता है।

नेपोलियन बोनापार्ट,

1769-1821

https://freehindipustakalya.blogspot.com

व्यक्तिगत मनोविज्ञान से निबटना होगा। यह सोचने की ग़लती कभी न करें कि जो रणनीति एक व्यक्ति पर कारगर होती है, वह दूसरे पर भी उतनी ही कारगर हो सकती है।

लोगों से अपनी बात मनवाने का सबसे तेज़ तरीक़ा उन्हें यह दिखाना है कि उस काम से उन्हें क्या लाभ होगा। आत्म-रुचि या स्वार्थ सबसे बड़ा उद्देश्य होता है : महान उद्देश्य से दिमाग़ प्रभावित हो सकता है, लेकिन रोमांच का पहला प्रभाव ख़त्म होते ही रुचि कमज़ोर हो जाएगी, जब तक कि किसी मनचाही चीज़ के मिलने की संभावना न हो। स्वार्थ ज़्यादा ठोस नींव है।

जो लोग दूसरों के दिमाग़ को सबसे ज़्यादा प्रभावित करते हैं, वे अक्सर कलाकार, बुद्धिजीवी और काव्यात्मक प्रकृति के होते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि विचार अलंकारों और तस्वीरों के माध्यम से सबसे आसानी से संप्रेषित होते हैं। इसलिए यह हमेशा अच्छी नीति है कि कम से कम एक कलाकार या बुद्धिजीवी आपकी जेब में रहे, जो लोगों के दिल को झकझोर सके।

अंत में संख्या का खेल खेलना सीखें। आपका आधार जितना बड़ा होगा, आपकी शक्ति उतनी ही ज़्यादा होगी। आपको हर स्तर पर ज़्यादा से ज़्यादा सहयोगी बनाने चाहिए - एक समय ऐसा ज़रूर आएगा, जब आपको उनकी ज़रूरत पड़ेगी।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

तस्वीर : चाबी का छेद। लोग आपको बाहर रखने के लिए दीवार बनाते हैं। कभी भी अंदर घुसने के लिए शक्ति का प्रयोग न करें। आपको दीवारों के भीतर और दीवारें मिलेंगी। इन दीवारों में दरवाज़े होते हैं, दिल और दिमाग़ के दरवाज़े। इन दरवाज़ों में चाबी के छेद होते हैं। उनकी चाबी खोजकर उससे दरवाज़ा खोलें। ऐसा करने पर आप उनकी इच्छा तक पहुँच जाएँगे और बलपूर्वक घुसपैठ का कोई बदसूरत निशान भी नज़र नहीं आएगा।

विशेषज्ञ की राय : किसी को राज़ी करने की राह में कठिनाई बस इतनी सी है कि मुझे उसके दिल को पूरी तरह समझना होगा, ताकि मैं उसके अनुरूप शब्दों का प्रयोग कर सकूँ... जो भी सिंहासन पर बैठे व्यक्ति का दिल जीतने की कोशिश करना चाहता है, उसे पहले तो सावधानी से सम्राट की प्रेम और नफ़रत की भावनाओं, उसकी गोपनीय इच्छाओं और डरों को समझना होगा, तभी वह उसका दिल जीत सकता है। (हान फेई त्सू, चीनी दार्शनिक, तीसरी सदी, ई.पू.)

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम

44

दर्पण देखकर निरस्त्र और क्रोधित करें

विचार

दर्पण सच्चाई का प्रतिबिंब दिखाता है, लेकिन यह धोखे का आदर्श हथियार भी हो सकता है। जब आप अपने शत्रुओं का प्रतिबिंब बन जाते हैं, जब आप उन्हीं की नक़ल करते हैं, तो वे आपकी रणनीति का अनुमान नहीं लगा सकते। नक़ल से वे चिढ़ जाते हैं और अपमानित महसूस करते हैं, जिससे वे अति-प्रतिक्रिया कर बैठते हैं। उनका प्रतिबिंब सामने रखकर आप उन्हें बरगलाते हैं कि आपमें भी उन्हीं जैसे जीवनमूल्य हैं। उनके कार्यों की नक़ल करके आप उन्हें सबक़ सिखाते हैं। बहुत कम लोग नक़ल प्रभाव की शक्ति का प्रतिरोध कर पाते हैं।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

दर्पण के प्रभाव

दर्पण में हमें विचलित करने की शक्ति होती है। दर्पण में अपने प्रतिबिंब को निहारते समय हम अक्सर वही देखते हैं, जो हम देखना चाहते हैं - अपनी ऐसी छवि, जिसे हम सबसे ज़्यादा पसंद करते हैं। हमारी यह आदत होती है कि हम ज़्यादा क़रीब से नहीं देखते हैं और अपनी झुर्रियों तथा दागों को अनदेखा कर देते हैं। लेकिन अगर हम प्रतिबिंब को ज़्यादा ग़ौर से देखें, तो हम कई बार यह महसूस करते हैं कि हम खुद को उसी तरह देख रहे हैं, जिस तरह दूसरे लोग देखते हैं।

दर्पण के प्रभाव का इस्तेमाल करके हम प्रतीकात्मक रूप से इस विचलित करने वाली शक्ति को उत्पन्न करते हैं। हम दूसरों के कार्यों का प्रतिबिंब दिखाकर, उनकी हरकतों की नक़ल करके उन्हें विचलित कर सकते हैं या ग़ुस्सा दिला सकते हैं। उन्हें लगता है उनकी खिल्ली उड़ाई जा रही है, नक़ल की जा रही है, आत्मा के बिना तस्वीर बनाई जा रही है और इस बात पर वे नाराज़ हो जाते हैं। या उसी काम को थोड़े अलग तरीक़े से कर दें। इससे वे निरस्त्र हो जाएँगे, क्योंकि आपने उनकी इच्छाओं को आदर्श तरीक़े से प्रतिबिंबित कर दिया है। इस प्रभाव में बड़ी शक्ति होती है, क्योंकि यह सबसे मूल भावों पर काम करता है।

शक्ति के क्षेत्र में दर्पण के चार मुख्य प्रभाव होते हैं :

जब आप दुश्मन के साथ गुत्थमगुत्था हों और आपको यह एहसास हो कि आप आगे नहीं बढ़ सकते, तो आप किसी उपयुक्त तकनीक का प्रयोग करके जीत सकते हैं... आप अक्सर इस ज्ञान के लाभ से निर्णायक जीत हासिल कर सकते हैं कि दुश्मन को अंदर कैसे "सोखा" जाता है, जबकि उससे दूर होने पर आप जीतने का मौक़ा गँवा देंगे।

मियामोटो मुसाशी, ए बुक ऑफ़ फ़ाइव रिंग्स, जापान, सोलहवीं सदी

जब मैं यह पता लगाना चाहिता हूँ कि कोई व्यक्ति कितना समझदार या मूर्ख, कितना अच्छा या बुरा है, या इस समय उसके विचार क्या हैं, तो मैं अपने हावभाव को यथासंभव उसी की तरह बनाने की कोशिश करता हूँ और फिर यह देखता हूँ कि मेरे मन में किस तरह के विचार आते हैं।

एडगर एलन पो.

1809-1849

निष्प्रभावी करने वाला प्रभाव। अगर आप वही करते हैं, जो आपके दुश्मन करते हैं, अगर आप उनके कामों की सर्वश्रेष्ठ नक़ल करते हैं, तो वे आपके इरादों को नहीं भाँप पाते। आपके दर्पण के कारण वे अंधे हो जाते हैं। आपके साथ निबटने की उनकी रणनीति इस बात पर निर्भर करती है कि आप अपने तरीक़े से उन पर प्रतिक्रिया करें। उनकी नक़ल करने का खेल खेलकर इसे निष्प्रभावी कर दें। इस रणनीति का एक मज़ाकिया, यहाँ तक कि ग़ुस्सा दिलाने वाला प्रभाव पड़ता है। हममें से ज़्यादातर को बचपन का वह अनुभव याद होगा, जब कोई हमारे शब्दों को दोहराकर हमें चिढ़ाता था। इसका नतीजा यह होता था कि कुछ समय बाद ही हम उसके चेहरे पर मुक्का जमाने की बात सोचने लगते थे। वयस्क के रूप में अधिक सूक्ष्म व्यवहार करके आप अपने विरोधियों को इसी तरीके से विचलित कर सकते हैं और दर्पण के द्वारा अपनी रणनीति को बचाकर अदृश्य जाल बिछा सकते हैं या अपने विरोधियों को उस जाल में फँसा सकते हैं, जो उन्होंने आपके लिए बिछाया है।

नार्सीसस प्रभाव। हम सभी ख़ुद से बहुत प्रेम करते हैं। नार्सीसस प्रभाव इसी शाश्वत गुण का लाभ उठाता है : आप दूसरों की आत्माओं में गहराई से देखते हैं : उनकी सबसे गहन इच्छाएं, उनके जीवनमूल्य, उनकी रुचियाँ, उनका मनोबल। फिर आप ख़ुद को दर्पण का प्रतिबिंब बनाकर इन्हीं चीज़ों को उनकी ओर परावर्तित करते हैं।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

उनकी मनोदशा को परावर्तित करने की आपकी क्षमता से उन पर आपकी शक्ति बढ़ जाती है। इसके अलावा, हो सकता है वे थोड़ा प्रेम भी महसूस करने लगें।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नैतिक प्रभाव। नैतिक प्रभाव से आप लोगों को उन्हीं की दवा का स्वाद चखाकर सबक़ सिखाते हैं। आप प्रतिबिंबित करते हैं कि उन्होंने आपके साथ क्या किया है और आप ऐसा करते समय उन्हें यह एहसास दिला देते हैं कि आप उनके साथ ठीक वैसा ही कर रहे हैं, जैसा उन्होंने आपके साथ किया है। आप उन्हें यह महसूस कराते हैं कि उनका व्यवहार अप्रिय था। यह शिकायत करने या चीख़ने-चिल्लाने से नहीं हो पाता है, जिससे उनका रक्षाकवच ऊपर हो जाता है। जब वे अपने कार्यों के परिणाम दर्पण में प्रतिबिंबित होते देखते हैं, तो उन्हें बहुत गहराई से यह आभास होता है कि वे अपने असामाजिक व्यवहार से दूसरों को कितनी चोट पहुँचाते हैं या सज़ा देते हैं।

भ्रांतिजनक प्रभाव। दर्पण बड़े धोखेबाज़ होते हैं, क्योंकि वे यह एहसास दिलाते हैं कि आप असली दुनिया को देख रहे हैं। हालाँकि सच तो यह है कि आप एक काँच के टुकड़े को देख रहे हैं। जैसा सब जानते हैं कि दर्पण दुनिया के वास्तविक स्वरूप को नहीं दिखा सकता है : आइने में हर चीज़ उलटी दिखती है।

भ्रांतिजनक प्रभाव किसी वस्तु, जगह या व्यक्ति की हूबहू प्रतिलिपि बनाने से आता है।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

यह प्रतिलिपि एक तरह की डमी का काम करती है – लोग इसे असली चीज़ मान लेते हैं, क्योंकि यह भौतिक रूप से वास्तविक चीज़ जैसी दिखती है। यह धोखेबाज़ों की सबसे प्रिय तकनीक है, जो रणनीति बनाकर असली दुनिया की नक़ल करके आपको धोखा देते हैं। इसका हर उस क्षेत्र में उपयोग किया जा सकता है, जिसमें छल की ज़रूरत होती है।

तस्वीर : पर्सियस की ढाल, जो दर्पण की तरह चमकती थी। मेड्यूसा उसे नहीं देख सकती थी, वह तो सिर्फ़ अपनी बदसूरती को परावर्तित होते देख सकती थी। इस तरह के दर्पण के पीछे आप धोखा दे सकते हैं, चिढ़ा सकते हैं और ग़ुस्सा दिला सकते हैं। एक झटके में आप मेड्यूसा के सिर को धड़ से अलग कर सकते हैं।

विशेषज्ञ की राय : सैन्य प्रक्रिया का काम दुश्मन के इरादों को भाँपना है... जहाँ वे पहुँचना चाहते हैं, वहाँ उनसे पहले पहुँचने के लिए उनके इरादों को चतुराई से भाँपें। अनुशासित रहें और शत्रु के अनुकूल ढल जाएँ... इसलिए सबसे पहले आपको एक युवती की तरह होना चाहिए, ताकि शत्रु अपना दरवाज़ा खोल दे। फिर आपको खुले ख़रगोश की तरह होना चाहिए, ताकि शत्रु आपको बाहर न रख सके। (सुन त्सू, चौथी सदी, ई.पू.)

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम 45

परिवर्तन की आवश्यकता का भाषण दें, लेकिन एकदम बहुत ज़्यादा सुधार कभी न करें

विचार

हर व्यक्ति मानसिक रूप से परिवर्तन की ज़रूरत समझता है, लेकिन दिन-प्रतिदिन के स्तर पर लोग आदतों के हिसाब से चलते हैं। बहुत ज़्यादा प्रयोगशीलता से परेशानी पैदा हो जाती है और विद्रोह की नौबत भी आ सकती है। अगर आप शक्ति के किसी पद पर नए हो या बाहरी व्यक्ति के रूप में शक्ति की नींव बनाने की कोशिश कर रहे हों, तो पुराने तरीक़ों का सम्मान करने का ढोंग करें। अगर परिवर्तन आवश्यक हो, तो ऐसा जताएँ, जैसे परंपरा में सिर्फ़ थोड़ा-सा ही सुधार किया जा रहा है।

https://freehindipustakaliya.blogspot.com

शक्ति की कुंजी

मानवीय मनोविज्ञान में कई विरोधाभास होते हैं। उनमें से एक यह है कि हालाँकि लोग परिवर्तन की ज़रूरत को समझते हैं और यह जानते हैं कि यह संस्थानों और व्यक्तियों के नवीनीकरण के लिए बहुत महत्वपूर्ण होता है, लेकिन वे उन परिवर्तनों से चिढ़ जाते हैं और विचलित हो जाते हैं, जो उन्हें व्यक्तिगत रूप से प्रभावित करते हैं। वे जानते हैं कि परिवर्तन ज़रूरी है और नवीनता के कारण बोरियत से राहत मिलती है, लेकिन दिल की गहराई में वे अतीत को जकड़े रहते हैं। वे भाववाचक या सतही परिवर्तन चाहते हैं, लेकिन मूलभूत आदतों या दिनचर्या को बदलने वाला परिवर्तन उन्हें बहुत बुरा लगता है।

कोई भी क्रांति ऐसी नहीं थी, जिसके खिलाफ़ बाद में सशक्त प्रतिक्रिया न हुई हो। क्योंकि क्रांति बाद में यह जो ख़ालीपन पैदा करती है, वह इंसान को बहुत परेशान करता है, जो अचेतन रूप से इस तरह के ख़ाली स्थान को मौत तथा अराजकता के साथ जोड़कर देखता है। परिवर्तन और नवीनीकरण के लालच में लोग क्रांति के पक्ष में तो आ जाते हैं, लेकिन जब उनका उत्साह ठंडा पड़ जाता है, जो कभी न कभी होता ही है, तो उनमें एक ख़ालीपन आ जाता है। अतीत की चाह में वे इसके वापस आने के लिए अपने द्वार खोल देते हैं।

मैकियावली के अनुसार जो व्यक्ति परिवर्तन सिखाता और लाता है, वह सिर्फ़ हथियार

क्रिसमस कहाँ से आया

नए साल का स्वागत करना प्राचीन परंपरा है। रोमवासी फ़सल के देवता शनि के सम्मान में 17 से 23 दिसंबर के बीच सैटनेलिया नामक त्योहार मनाते थे। यह साल का सबसे सुखद त्योहार होता था। सारा काम-काज बंद हो जाता था और सड़क भीड़ से भर जाती थी। जश्न का माहौल रहता था। दासों को कुछ समय के लिए मुक्त कर दिया जाता था और घरों को सजाया जाता था। लोग एक दूसरे के घर जाते थे और मोमबत्तियों तथा अन्य चीज़ों के तोहफ़े देते थे। ईसा मसीह के जन्म से बहुत पहले यहूदी लोग साल के इसी समय रोशनी का

उठाकर ही बच सकता है। जब जनता अतीत जैसी स्थितियों की चाह करे, तो उसे शक्ति का इस्तेमाल करने के लिए तैयार रहना चाहिए। लेकिन हथियारबंद आदमी भी लंबे समय तक नहीं टिक सकता, जब तक कि वह पुराने जीवनमूल्यों और परंपराओं की जगह पर नए जीवनमूल्य और परंपराएँ उत्पन्न न कर दे। इस तरह वह परिवर्तन से डरने वाले लोगों की चिंताओं को शांत कर देता है। यह धोखेबाज़ी का खेल ज़्यादा आसान और कम ख़ून-खराबे भरा है। आप परिवर्तन की जितनी चाहे उतनी पैरवी करें और यहाँ तक कि अपने सुधारों पर अमल भी करें, लेकिन उन्हें पुरानी घटनाओं और परंपराओं का तसल्ली देने वाला रूप दे दें।

पुराने पदनाम का इस्तेमाल करें। समूह के लिए वही संख्या रखें। इस तरह की छोटी-छोटी बातों से आप खुद को अतीत से जोड़ सकते हैं और इतिहास का समर्थन पा सकते हैं।

परिवर्तन को छिपाने की एक और रणनीति अतीत के जीवनमूल्यों का ज़ोरदार और सार्वजनिक समर्थन करना है। जब आप परंपरा के भक्त नज़र आएँगे, तो बहुत कम लोग यह देख पाएँगे कि आप कितने क्रांतिकारी हैं। पुनर्जागरण काल का फ़्लोरेंस सदियों पुराना गणराज्य था और अपनी परंपराओं की अवहेलना करने वाले हर व्यक्ति को संदेह से देखता था। कोसिमो डे मेडिसी ने गणतंत्र के उत्साहपूर्ण समर्थन का दिखावा किया, जबकि दरअसल वह इस शहर को अपने दौलतमंद परिवार के नियंत्रण में लाने

त्योहार मनाते थे। ऐसी मान्यता है कि जर्मनी के लोग न सिर्फ़ कर्क-संक्रांति, बल्कि मकर-संक्रांति भी धूम-धाम से मनाते थे। इस समय वे सूर्य के पुनर्जन्म का जश्न मनाते थे और फ़सल के देवी-देवताओं वोटन, फ्रेया, डोनर (थोर) और फ्रेयर की पूजा करते थे... 274 में रोमन शासक ऑरेलियन (214-275) ने सूर्य-ईश्वर मिथराज का आधिकारिक पंथ शुरू किया और अपने जन्मदिन 25 दिसंबर को राष्ट्रीय अवकाश घोषित किया। मिथराज का पंथ, प्रकाश का आर्यन देव, फ़ारस से एशिया माइनर से ग्रीस, रोम और जर्मनी तथा ब्रिटेन तक पहुँच गया। उसके मंदिरों के असंख्य अवशेष

https://freehindipustakalya.blogspot.com

https://freehindipustakalya.blogspot.com

आज भी इस बात की गवाही देते हैं कि फ़सल, शांति और विजय देने वाले इस भगवान का कितना ज़्यादा सम्मान किया जाता होगा, ख़ास तौर पर रोमवासियों द्वारा। यह एक चतुर क़दम था, जब 354 ईसवी में क्रिश्चियन चर्च ने पोप लाइबेरियस (352-366) के नेतृत्व में 25 दिसंबर को मिथराज के जन्मदिन के साथ ही ईसा मसीह का जन्मदिन भी घोषित कर दिया।

एन-सूज़न रिश्क, निक्र जोर्कर जीतुग, डिसेम्बर 25, 1983

की कोशिश कर रहा था। ऊपर से मेडिसी परिवार ने गणतंत्र के हुलिये को बनाए रखा, लेकिन अंदर से उन्होंने इसे खोखला कर दिया। वे चुपचाप मूलभूत परिवर्तन करते रहे, जबकि ऊपर से वे परंपरा के पहरेदार नज़र आए।

लोगों की निहित रूढ़िवादिता का जवाब परंपरा के प्रति ऊपरी निष्ठा दिखाना है। अपनी क्रांति के उन तत्वों को पहचानें, जो अतीत की नींव पर टिके नज़र आते हों। सही बातें कहें, अतीत की पैरवी करने का ढोंग करें और इस दौरान अपने सिद्धांतों को मूलभूत परिवर्तन का काम करने दें।

अंत में, सशक्त लोग युगबोध पर ध्यान देते हैं। अगर उनका सुधार उनके समय से बहुत आगे का है, तो बहुत कम लोग इसे समझ पाएँगे, इससे चिंता उत्पन्न होगी और उनकी बात का ग़लत मतलब निकाला जाएगा। आप जो परिवर्तन करते हैं, उसे ज़्यादा क्रांतिकारी नहीं लगना चाहिए।

युगबोध को ध्यान में रखें। अगर आप उथल-पुथल के समय में काम कर रहे हैं, तो अतीत, सुख और परंपरा की ओर लौटने का भाषण देकर शक्ति हासिल की जा सकती है। दूसरी तरफ़ स्थिरता के समय में सुधार और क्रांति का तुरुप खेलें - लेकिन इस बारे में सावधान रहें कि आप किसे उकसाते हैं। जो लोग क्रांति को ख़त्म करते हैं, वे क्रांति शुरू करने वाले नहीं होते हैं।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

तस्वीर : बिल्ली। यह आदत की ग़ुलाम होती है। यह परिचय की ऊष्मा को पसंद करती है। इसकी दिनचर्या में बाधा डालें या इसके स्थान को अव्यवस्थित कर दें, तो यह नियंत्रण से बाहर हो जाएगी और ग़ुस्सा हो जाएगी। इसकी आदतों का समर्थन करके इसे शांत रखें। अगर परिवर्तन ज़रूरी हो, तो अतीत की गंध को क़ायम रखकर बिल्ली को धोखा दें। इसकी जानी-पहचानी वस्तुओं को महत्त्वपूर्ण जगहों पर रख दें।

विशेषज्ञ की राय : जो व्यक्ति किसी सरकार को सुधारने की इच्छा रखता है या कोशिश करता है, उसे कम से कम पुराने स्वरूपों का आवरण बनाए रखना चाहिए, ताकि लोगों को यह लगे कि संस्थाओं में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है, हालाँकि दरअसल वे पुरानी संस्थाओं से बिलकुल अलग होती हैं। ज़्यादातर लोग छवियों को ही वास्तविक मान लेते हैं और इसी से संतुष्ट हो जाते हैं। (निकोलो मैकियावली, 1469-1527)

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम

46

बहुत आदर्श नज़र न आएँ

विचार

दूसरों से बेहतर नज़र आना हमेशा ख़तरनाक होता है, लेकिन सबसे ख़तरनाक यह है कि आपमें एक भी ग़लती या कमज़ोरी नज़र न आए। ईर्ष्या गोपनीय शत्रु पैदा करती है। कभी-कभार दोषों का प्रदर्शन करना या हानिरहित कमज़ोरियों को स्वीकार करना ज़्यादा समझदारी भरा तरीक़ा है, ताकि ईर्ष्या उत्पन्न न हो और आप ज़्यादा मानवीय नज़र आएँ। सिर्फ़ ईश्वर और मुर्दा लोग ही बिना किसी भय के डरे आदर्श दिख सकते हैं।

शक्ति की कुंजी

इंसान को हीनता की भावनाओं से निबटने में बहुत मुश्किल होती है। श्रेष्ठ योग्यता, गुण या शक्ति के सामने हम अक्सर विचलित और परेशान हो जाते हैं। हममें से ज़्यादातर अपने बारे में बहुत ऊँचे विचार रखते हैं और जब हम अपने से श्रेष्ठ लोगों से मिलते हैं, तो वे हमारे सामने यह स्पष्ट कर देते हैं कि हम दरअसल साधारण हैं या कम से कम उतने प्रतिभाशाली तो नहीं हैं, जितना हम मानते हैं। हमारी आत्म-छवि में अगर इस तरह का परिवर्तन होता है, तो कुछ समय बाद ही हमारे मन में बुरी भावनाएँ पैदा हो जाती हैं। सबसे पहले तो हम ईर्ष्या महसूस करते हैं। लेकिन ईर्ष्या से हमें न तो राहत मिलती है, न ही यह हमें उनकी बराबरी पर लाती है। हम अपनी ईर्ष्या को दिखा भी नहीं सकते हैं, क्योंकि इससे लोग हम पर भ्रकुटियाँ चढ़ा लेंगे - ईर्ष्या दिखाना हीनता का सूचक है। इसलिए हम इसे कई तरीक़ों से छिपाते हैं, जैसे उस श्रेष्ठ व्यक्ति की आलोचना करने के आधार खोजना।

ईर्ष्या के ख़तरनाक और विनाशक प्रभाव से निबटने की कई रणनीतियाँ हैं। सबसे पहले तो यह समझ लें कि जब आप शक्ति हासिल करते हैं, तो आपसे नीचे के लोग आपसे ईर्ष्या करेंगे। हो सकता है वे इसे प्रदर्शित न करें, लेकिन ऐसा होना अपरिहार्य है। वे सामने जो झूठा पर्दा दिखाते हैं, नादानी से उसे सच न मानें। उनकी आलोचनाओं, तानों, पीठ पीछे आलोचना के

ईर्ष्यालु व्यक्ति भी रहस्यमयी या वासनामयी पापी की तरह सावधानी से छिपा रहता है और ख़ुद को छिपाने की असंख्य तरीकीबें तथा चालें खोज लेता है। इस तरह वह दूसरों की श्रेष्ठता से अनभिज्ञ होने का नाटक करता है, जबकि अंदर ही अंदर वह उनसे बुरी तरह जलता है। वह इस तरह जताता है जैसे उसने उन्हें देखा ही नहीं है, उनकी बातें सुनी ही नहीं हैं या उनके वहाँ होने पर ध्यान ही नहीं दिया है। वह निपुण अभिनेता होता है। दूसरी तरफ़ वह षड्यंत्र करने में अपनी पूरी ताक़त लगा देता है और इस तरह श्रेष्ठता के किसी भी रूप को रोकता है। और अगर ऐसा हो जाता है, तो

https://freehindipustakalaya.blogspot.com

https://freehindipustakalya.blogspot.com

वह उन पर तोहमत लगाता है, आलोचना करता है, व्यंग्य करता है और ज़हर उगलने वाले भेक की तरह घातक प्रहार करता है। दूसरी तरफ़, वह उसी तरह की गतिविधियों में महत्वहीन, औसत, यहाँ तक कि हीन लोगों को भी ऊपर उठाता है।

आर्थर शोपेनहार, 1788-1860

चिन्हों और अत्यधिक प्रशंसा पर निगाह रखें। ये आपके पतन की तैयारी के सूचक हैं। उनकी आँखों में द्वेष के भाव पढ़ें। ईर्ष्या के साथ आधी समस्या तब आती है, जब हम इसे पहचानने में बहुत देर कर देते हैं।

दूसरी बात, इस बात के लिए तैयार रहें कि जब लोग आपसे ईर्ष्या करेंगे, तो वे आपके ख़िलाफ़ काम भी करेंगे। वे आपके रास्ते में ऐसी बाधाएँ खड़ी कर देंगे, जिनका आप पहले से अनुमान नहीं लगा सकते। इस तरह के हमले से खुद को बचाना आपके लिए मुश्किल होगा। चूंकि ईर्ष्या उत्पन्न होने के बाद उससे निबटना मुश्किल है और ईर्ष्या उत्पन्न न होने देना ज़्यादा आसान है, इसलिए आपको इसके बढ़ने से पहले ही रोकने की रणनीति बनाना चाहिए। ईर्ष्या उत्पन्न करने वाले कार्यों और गुणों के प्रति सचेत होकर आप इसके दाँत ही नहीं निकलने देते हैं, जो आपको कुतर-कुतर कर मौत के मुँह में ले जा सकते हैं।

शक्ति के क्षेत्र में एक बड़ा ख़तरा अप्रत्याशित खुशक़िस्मती है - अचानक मिलने वाला प्रमोशन, विजय या सफलता। इससे आपके समकक्षों के बीच ईर्ष्या निश्चित रूप से उत्पन्न होगी।

जब आर्कबिशप रेट्ज़ को 1651 में कार्डिनल के पद पर प्रमोशन मिला, तो वे बहुत अच्छी तरह जानते थे कि उनके कई पूर्व सहकर्मी उनसे ईर्ष्या कर रहे होंगे। अपने नीचे के लोगों से खुद को अलग करने की मूर्खता को समझते हुए रेट्ज़ ने हर वह काम किया, जो वे अपनी

योग्यता को कम करने के लिए कर सकते थे। उन्होंने अपनी सफलता में किस्मत की महत्वपूर्ण भूमिका पर ज़ोर दिया। लोगों को सहज बनाने के लिए उन्होंने विनम्रता का अभिनय किया, जैसे कुछ भी नहीं बदला हो। उन्होंने लिखा है कि इन समझदारीपूर्ण नीतियों का "अच्छा प्रभाव पड़ा, जिससे मेरे ख़िलाफ़ उत्पन्न ईर्ष्या कम हुई।" रेट्ज़ के उदाहरण का अनुसरण करें। अपनी ख़ुशक़िस्मति पर ज़ोर दें। ऐसा दिखाएँ जैसे आपकी ख़ुशी दूसरे लोग भी हासिल कर सकते हैं और इस तरह ईर्ष्या को कम प्रबल बना दें।

ईर्ष्या को दूर करने के लिए किसी कमज़ोरी, छोटी सामाजिक ग़लती या हानिरहित दोष का प्रर्दशन करें।

ईर्ष्या के कुछ छलावों से सावधान रहें। अत्यधिक प्रशंसा इस बात की पक्की निशानी है कि तारीफ़ करने वाले लोग आपसे ईर्ष्या कर रहे हैं। ऐसे लोग या तो आपको पतन के लिए तैयार कर रहे हैं - उनकी तारीफ़ के अनुरूप काम करना आपके लिए असंभव है - या फिर वे आपकी पीठ के पीछे अपनी तलवार पर धार कर रहे हैं। साथ ही, जो लोग आपकी बहुत आलोचना करते हैं या जनता में आपका अपमान करते हैं, वे भी शायद आपसे ईर्ष्या करते हैं। उनके व्यवहार को छिपी हुई ईर्ष्या मानें और उन पर बदले में कीचड़ उछालने के जाल में न फँसें। इसके अलावा उनकी आलोचना को दिल पर न लें। उनके प्रतिशोध को नज़रअंदाज़

कहावत है कि ज़्यादातर लोग समृद्ध मित्र को बिना ईर्ष्या के सहन नहीं कर सकते हैं और ईर्ष्यालु मस्तिष्क के आस-पास ठंडा ज़हर रहता है, जो ज़िंदगी में दोगुना कष्ट पहुँचाता है। उसके अपने घाव उसे सताते हैं, जिन पर उसे मरहम-पट्टी करनी होती है और दूसरे की ख़ुशी उसे शाप की तरह महसूस होती है।

एगामैमनॉन, एस्कीलस, 525-456 ई.पू.

अनुमानित

https://freehindipustakalya.blogspot.com

https://freehindipustakalya.blogspot.com

करके या उनकी घटिया मौजूदगी उपस्थिति से बचकर विजय हासिल करें, और उन्हें अपने बनाए नर्क में उबलने दें।

अपनी योग्यता और गुणों को छिपाने में बहुत योग्यता और गुणों की जरूरत होती है।

ला रोशफूको, 1613–1680

तस्वीर : खरपतवार से भरा बगीचा। हो सकता है आप खरपतवार को खाद न दें, लेकिन जब आप बगीचे में पानी देते हैं, तो वे फैलते हैं। आप यह नहीं देख सकते कि वे ऐसा कैसे करते हैं, लेकिन पूरे बगीचे पर कब्ज़ा जमा लेते हैं। वे ऊँचे होते हैं और किसी भी सुंदर फूल वाले पौधे को पल्लवित होने से रोकते हैं। बहुत ज़्यादा देर होने से पहले ही बिना सोचे-समझे पानी डालना बंद कर दें। ईर्ष्या की खरपतवार को भोजन दिए बिना ही उसे नष्ट कर दें।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

विशेषज्ञ की राय : सही अवसर मिलते ही अपने चरित्र का कोई हानिरहित दोष प्रकट कर दें। ईर्ष्यालु लोग सबसे निष्पाप व्यक्ति पर पाप का आरोप लगाते हैं। वे आर्गस की तरह बन जाते हैं और वे दोष खोजने के लिए उत्कृष्ट व्यक्ति पर सौ आँखें गड़ा देते हैं - यह उनकी इकलौती संतुष्टि होती है। ईर्ष्या के ज़हर से बचें। बहादुरी या बुद्धि में किंचित कमज़ोरी का नाटक करें, ताकि ईर्ष्या उत्पन्न ही न हो। इस तरह आप ईर्ष्या के सींग के सामने अपनी लाल टोपी हिलाते हैं, ताकि आपकी अमरता बच सके। (बाल्तेसर ग्रेशियन, 1601-1658)

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम
47

लक्ष्य से आगे न जाएँ, सीखें कि जीतने के बाद कहाँ रुकना है

विचार

विजय का पल अक्सर सबसे ख़तरनाक पल होता है। विजय की गर्मी में दंभ और अति आत्मविश्वास आपको उस लक्ष्य से आगे धकेल सकता है, जिस पर आपने निशाना लगाया था। आप जितने शत्रुओं को पराजित करते हैं, ज़्यादा आगे निकलने के चक्कर में उससे ज़्यादा शत्रु बना लेते हैं। सफलता को अपने दिमाग़ पर न चढ़ने दें। रणनीति और सुनियोजित योजना का कोई विकल्प नहीं है। लक्ष्य तय करें और उस तक पहुँचने के बाद रुक जाएँ।

शक्ति की कुंजी

शक्ति की अपनी लय और तंत्र होता है। जो लोग इस खेल में सफल होते हैं, वे अपने तंत्र को नियंत्रित करते हैं और इच्छानुसार बदलते हैं। वे अपनी गति निर्धारित करके लोगों का संतुलन बिगाड़ देते हैं। रणनीति का सार यह नियंत्रित करना है कि बाद में क्या होगा। विजय का उल्लास भविष्य को नियंत्रित करने की आपकी योग्यता को दो तरीकों से विचलित कर सकता है। सबसे पहले, आप अपनी सफलता एक तंत्र को देते हैं, जिसे आप दोहराने की कोशिश करना चाहते हैं। आप रुके बिना उसी दिशा में जाने की कोशिश करेंगे और यह देखना चाहेंगे कि यह दिशा अब भी आपके लिए सर्वश्रेष्ठ है या नहीं। दूसरी बात, सफलता आपके सिर पर सवार हो जाती है और आपको भावुक बना देती है। ख़ुद को अजेय मानते हुए आप आक्रामक क़दम उठाते हैं, जो अंततः आपकी हासिल की हुई विजय को नष्ट कर देंगे।

सबक़ आसान है : सशक्त लोग अपनी लय और तरीक़े बदलते रहते हैं, दिशा बदलते रहते हैं, परिस्थितियों के अनुसार ढलते रहते हैं और नया काम करना सीखते रहते हैं। नाचते हुए क़दमों के साथ आगे जाने के बजाय वे पीछे हटते हैं और यह देखते हैं कि वे कहाँ जा रहे हैं। ऐसा लगता है जैसे उनकी ख़ून की धार में ही विजय के दीवाने उल्लास का उपचार है, जिससे वे अपनी भावनाओं को नियंत्रित कर लेते हैं और सफलता हासिल करने के बाद एक

दो मुर्गे कचरे के ढेर पर लड़ रहे थे। उनमें से एक ज़्यादा शक्तिशाली था। उसने दूसरे मुर्गे को हराकर कचरे के ढेर से दूर भगा दिया। सारी मुर्गियाँ विजयी मुर्गे के पास इकट्ठी होकर उसकी तारीफ़ करने लगीं। विजयी मुर्गा चाहता था कि अगले अहाते में उसकी ताक़त और शोहरत का डंका बज जाए, इसलिए वह अगले अहाते में चला गया। वह खलिहान के ऊपर उड़कर बैठ गया और अपने पंख लहराकर तेज़ आवाज़ में बोला : "तुम सब मेरी तरफ़ देखो। मैं जीतने वाला मुर्गा हूँ। दुनिया में किसी और मुर्गे में मेरे जितनी ताक़त नहीं है।" अभी मुर्गे की बात पूरी भी नहीं हो पाई थी कि एक

https://freehindipustakalaya.blogspot.com

https://freehindipustakalya.blogspot.com

बाज़ ने उस पर झपट्टा मारा, उसे अपने पंजों में दबाया और अपने घोंसले में ले गया।

फ़ेबल्स, लियो टॉल्स्टॉय, 1828–1910

तरह के मानसिक ठहराव की स्थिति में आ जाते हैं। वे ख़ुद को सँभालते हैं, थोड़ा ठहरकर घटनाओं पर विचार करते हैं, अपनी सफलता में परिस्थिति और भाग्य की भूमिका की जाँच करते हैं।

शक्ति पाने में क़िस्मत और परिस्थिति की हमेशा महत्वपूर्ण भूमिका होती है। लेकिन आप चाहे जो भी सोचें, ख़ुशक़िस्मती बदक़िस्मती से ज़्यादा ख़तरनाक होती है। बदक़िस्मती आपको धैर्य, टाइमिंग और बुरी घटनाओं से निबटने की तैयारी की ज़रूरत के बारे में मूल्यवान सबक़ सिखाती है। ख़ुशक़िस्मती आपको उलटी दिशा में ले जाती है और आप यह सोचने लगते हैं कि आप अपनी प्रतिभा के कारण ही सफल हुए हैं। आपकी क़िस्मत हमेशा पलटेगी और जब ऐसा होगा, तो आप इसके लिए ज़रा भी तैयार नहीं होंगे। जो ख़ुशक़िस्मती आपको ऊपर उठाती है या आपकी सफलता पर मोहर लगाती है, वह आपकी आँखें खोलने का पल भी लाती है। क़िस्मत का पहिया आपको उतनी ही आसानी से नीचे फेंक देगा, जितनी आसानी से इसने आपको ऊपर उठाया है। अगर आप गिरने की तैयारी कर लेते हैं, तो आपकी बर्बादी की संभावना न्यूनतम हो जाएगी।

शक्ति की लय में अक्सर शक्ति के परिवर्तन और चालाकी की ज़रूरत होती है। ताक़त के बहुत ज़्यादा इस्तेमाल से प्रतिक्रिया होती है। बहुत ज़्यादा चालाकी, चाहे यह कितनी ही चतुराई भरी क्यों न हो, दिख सकती है। जब

आप विजयी हों, तो ज़मीन पर ही रहें और तूफ़ान को निष्क्रिय बना दें। लय के ये परिवर्तन बहुत सशक्त होते हैं।

जो लोग लक्ष्य के आगे पहुँच जाते हैं, अक्सर वे अपनी निष्ठा साबित करके किसी मालिक को ख़ुश करना चाहते हैं। लेकिन प्रयास की अधिकता से यह ख़तरा पैदा हो सकता है कि मालिक आप पर शक करने लग जाए। कई मौक़ों पर मैसीडोनिया के फ़िलिप ने विजय पाने वाले अधीनस्थ सेनापतियों को अपमानित करके उन्हें छोटा पद दे दिया। फ़िलिप का सोच यह था कि अगर उन्होंने भविष्य में एक और युद्ध जीत लिया, तो वे उनके अधीनस्थ रहने के बजाय प्रतिद्वंद्वी बन जाएँगे। जब आप किसी मालिक की सेवा करते हैं, तो अक्सर समझदारी इसी में होती है कि आप अपनी विजय को सावधानीपूर्वक नापें, उसे शोहरत हासिल करने दें और उसे कभी असहज न बनाएँ। यह भी समझदारीपूर्ण है कि आप कठोर आज्ञाकारिता का तंत्र स्थापित करके उसका विश्वास हासिल करें।

जब आप आख़िरकार रुकते हैं, तो वह बहुत ही महत्वपूर्ण बन जाता है। सबसे आख़िर में जो आता है, वह मस्तिष्क में किसी विस्मयवाचक चिन्ह की तरह जमा रहता है। रुकने और छोड़ देने के लिए विजय के ठीक बाद का समय सबसे अच्छा होता है। विजय के बाद भी जोखिम यह रहता है कि आपका प्रभाव कम हो सकता है, यहाँ तक कि आप

क्रॉस-एग्ज़ामिनेशन की शृंखला

सभी क्रॉस-एग्ज़ामिनेशन्स में... सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हमेशा रुकने के लिए अच्छी जगह के बारे में सतर्क रहें। कोई भी चीज़ इससे ज़्यादा महत्वपूर्ण नहीं है कि आप अपनी बात को विजय के साथ ख़त्म करें। बहुत से वकील गवाह के गंभीर झूठ को पकड़ लेते हैं, लेकिन वे इससे संतुष्ट नहीं होते हैं और लगातार सवाल पूछते जाते हैं। वे मूर्खतापूर्ण तरीक़े से तब तक सवाल पूछते जाते हैं, जब तक कि उनके द्वारा पकड़े गए झूठ का प्रभाव जूरी पर पूरी तरह ख़त्म नहीं हो जाता।

फ्रांसिस एल. वेलमैन, द आर्ट ऑफ़ क्रॉस-एग्ज़ामिनेशन, 1903

https://freehindipustakalya.blogspot.com

हार भी सकते हैं। जैसा वकील क्रॉस-एग्ज़ामिनेशन के बारे में कहते हैं, "हमेशा जीतने के बाद रुक जाएँ।"

बहुत ऊँचाई पर उड़ने लगता है। अंततः सूर्य की गर्मी से उसके पंख पिघल जाते हैं और वह नीचे गिरकर मर जाता है।

विशेषज्ञ की राय : राजाओं और गणराज्यों को विजय से संतुष्ट हो जाना चाहिए, क्योंकि जब वे इससे ज़्यादा का लक्ष्य बनाते हैं, तो वे आम तौर पर हार जाते हैं। शत्रु के प्रति अपमानजनक भाषा का प्रयोग विजय के दंभ या झूठी आशा से उत्पन्न होता है। झूठी आशा से मनुष्य की बातें और काम ग़लत दिशा में चले जाते हैं, क्योंकि जब झूठी आशा मस्तिष्क पर हावी हो जाती है, तो मनुष्य अपने लक्ष्य से आगे चला जाता है और निश्चित अच्छाई को छोड़कर अनिश्चित बेहतरी की ओर क़दम बढ़ाने लगता है।
(निकोलो मैकियावली, 1469-1527)

https://freehindipustakalya.blogspot.com

नियम

48

निराकार बनें

विचार

दिखने वाली योजना बनाकर आप ख़ुद को हमले का निशाना बना लेते हैं। साकार बनकर ख़ुद को शत्रु की पकड़ में रखने लाने के बजाय ख़ुद को लगातार ढालते रहें। इस सच्चाई को स्वीकार करें कि कुछ भी निश्चित नहीं है और कोई नियम तय नहीं है। अपने को बचाने का सर्वश्रेष्ठ तरीक़ा पानी की तरह द्रव और निराकार होना है। स्थिरता या स्थायी व्यवस्था पर भरोसा न करें। हर चीज़ बदलती है।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

शक्ति की कुंजी

इंसान आकार से पहचाना जाता है। शायद ही कभी वह अपने भाव सीधे तौर पर व्यक्त करता है। वह उन्हें भाषा से या सामाजिक रूप से स्वीकृत परंपराओं से आकार देता है। हम बिना आकार के अपने भाव व्यक्त नहीं कर सकते।

बहरहाल जो आकार हम बनाते हैं, वे बदलते रहते हैं – फ़ैशन में, शैली में, उस पल के मूड का प्रतिनिधित्व करने वाली मानवीय घटनाओं में। हम लगातार पिछली पीढ़ियों से विरासत में मिले आकारों को बदलते रहते हैं। ये परिवर्तन जीवन और जीवंतता के संकेत हैं। दरअसल जो चीज़ें नहीं बदलती हैं, जो रूप कठोर हो जाते हैं, वे हमें मौत की तरह दिखने लगते हैं और हम उन्हें नष्ट कर देते हैं।

अक्सर शक्तिशाली व्यक्ति अपनी जवानी में किसी नई चीज़ को नए रूप में व्यक्त करके प्रचुर रचनात्मकता दिखाते हैं। समाज इस तरह के नएपन का भूखा होता है, इसलिए वह उन्हें शक्ति और पुरस्कार देता है। समस्या बाद में आती है, जब वे अक्सर रूढ़िवादी और अधिकारवादी बन जाते हैं। अब वे नए आकार बनाने के सपने नहीं देखते हैं। उनकी पहचान बन जाती है, उनकी आदत पड़ जाती है और उनकी कठोरता उन्हें आसान निशाना बना देती है।

शक्ति सिर्फ़ तभी बढ़ सकती है, जब इसका आकार लचीला हो। निराकार रहने का मतलब अव्यवस्थित होना नहीं है। हर चीज़ का एक आकार होता है – इससे बचना असंभव है।

मार्शल आर्ट्स में यह महत्वपूर्ण होता है कि रणनीति समझ में न आ पाए, छिपकर दाँव लगाया जाए और गतिविधियाँ अप्रत्याशित हों, ताकि उनके ख़िलाफ़ तैयारी करना असंभव हो। हमेशा सफल होने वाले सेनापति की सफलता का राज़ यह है कि उसकी बुद्धि अथाह होती है और उसकी रणनीति का कोई निशान नहीं होता है। सिर्फ़ निराकार को ही प्रभावित नहीं किया जा सकता। साधु अथाह निराकार में छिप जाते हैं, ताकि उनकी भावनाएँ नज़र न आएँ। वे निराकार के भीतर रहते हुए काम करते हैं, ताकि राहों में उलझन न हो।

द बुक ऑफ़ द हुआनैन मास्टर्स, चीन, दूसरी सदी ई.पू.

https://freehindipustakalya.blogspot.com

शक्ति का निराकार होना पानी या पारे की तरह है, जो अपने माहौल के हिसाब से रूप बदल लेता है। यह आकार लगातार बदलता रहता है, इसका कोई पूर्वानुमान नहीं लगाया जा सकता।

निराकार होने की पहली मनोवैज्ञानिक आवश्यकता खुद को प्रशिक्षित करना है कि हम किसी चीज़ को व्यक्तिगत रूप से न लें। कभी रक्षात्मकता न दिखाएँ। जब आप रक्षात्मक काम करते हैं, तो आप अपने भावों को दिखाते हैं और एक स्पष्ट रूप उजागर करते हैं। आपके विरोधी यह समझ लेंगे कि उन्होंने दुखती रग पर हाथ रख दिया है। और वे बार-बार उसी जगह पर हाथ रखेंगे। अपने चेहरे को निराकार नक़ाब की तरह बना लें। इस तरह आप अपने चालबाज़ सहकर्मियों और विरोधियों को ग़ुस्सा दिला देंगे तथा उन्हें विचलित कर देंगे।

इस तकनीक का इस्तेमाल करने वाले एक व्यक्ति बैरन जेम्स रॉथ्सचाइल्ड थे। वे पेरिस में रहने वाले जर्मन यहूदी थे। वहाँ की संस्कृति विदेशियों के लिए दोस्ताना नहीं थी। लेकिन रॉथ्सचाइल्ड ने इसे व्यक्तिगत रूप से नहीं लिया। इसके अलावा उन्होंने राजनीतिक माहौल में खुद को ढाला, चाहे वह जैसा भी हो। रॉथ्सचाइल्ड ने सबको स्वीकार किया और वे माहौल में घुल-मिल गए। उनका कोई आकार नहीं होने के कारण वे माहौल में ढलकर समृद्ध हुए, जबकि दूसरे अमीर परिवार उस समय के जटिल बदलावों और क़िस्मत के उतार-चढ़ाव में

ज्ञानी न तो प्राचीन तरीक़ों का अनुसरण करना चाहता है, न ही शाश्वत मानदंड निर्धारित करना चाहता है। वह तो अपने युग की जाँच करता है और उससे निबटने की तैयारी करता है। सुंग में एक व्यक्ति था, जो एक खेत जोतता था। उस खेत में एक पेड़ का तना खड़ा था। एक बार एक ख़रगोश तेज़ी से भागते हुए उसके तने से टकरा गया और गर्दन टूटने के कारण मर गया। इस पर उस आदमी ने अपने हल को एक तरफ़ रख दिया और उस पेड़ को देखा। वह एक और ख़रगोश के आने की उम्मीद कर रहा था। बहरहाल उसने कभी कोई और ख़रगोश नहीं पकड़ा तथा सुंग के लोगों ने उसकी हँसी उड़ाई।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

अगर कोई पुराने राजाओं की नीतियों से वर्तमान युग के लोगों पर शासन करना चाहे, तो वह भी उसी पेड़ देखने वाले आदमी की तरह का काम ही कर रहा होगा।

हान-फ़ेई-त्सू, चीनी दार्शनिक, तीसरी सदी ई.पू.

बर्बाद हो गए। अतीत में जकड़े रहकर उन्होंने अपना स्पष्ट स्वरूप उजागर कर दिया था।

जब आपकी उम्र बढ़े, तो आपको अतीत पर कम विश्वास करना चाहिए। सतर्क रहें, वरना आपके चरित्र का आकार कहीं आपको अवशेष न बना दे।

बहरहाल यह कभी न भूलें कि निराकार होना एक रणनीतिक अभिनय है। यह आपको रणनीतिक आश्चर्य रचने की जगह देता है। जब आपके दुश्मन आपके अगले क़दम का अनुमान लगाने के लिए संघर्ष करते हैं, तो वे अपनी रणनीति उजागर कर देते हैं और घाटे की स्थिति में आ जाते हैं। इससे आपको पहल करने की शक्ति भी मिलती है, जबकि आपके शत्रु हमेशा प्रतिक्रिया करने के लिए विवश हो जाते हैं। याद रखें : निराकार होना एक औज़ार है। इसे बहाव-के-साथ-बहें वाली शैली न मानें या क़िस्मत के थपेड़ों के प्रति सहिष्णुता न समझें। आप निराकार का उपयोग आंतरिक लय और शांति उत्पन्न करने के लिए नहीं करते हैं, बल्कि अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए करते हैं।

अंत में, हर नई परिस्थिति के अनुरूप ढलना सीखने का मतलब है घटनाओं को अपनी आँखों से देखना और दूसरों की अनचाही सलाह को नज़रअंदाज़ करना। इसका मतलब है कि अंततः आपको दूसरों के सिखाए नियमों को दूर फेंक देना चाहिए। आपको उन पुस्तकों को भी दूर फेंक देना चाहिए, जो बताती हैं

https://freehindipustakalya.blogspot.com

कि आपको क्या करना चाहिए। यही आपको बड़े-बूढ़ों की समझदारीपूर्ण सलाह के साथ भी करना चाहिए। दूसरों के विचारों पर बहुत ज़्यादा भरोसा करेंगे, तो आप अंततः एक ऐसा आकार ले लेंगे, जिसे आपने नहीं बनाया है। अतीत के प्रति क्रूर रहें, ख़ासकर अपने अतीत के प्रति और उन जीवन-दर्शनों के प्रति भी कोई सम्मान न रखें, जो आप पर किसी दूसरे ने थोपे हों।

तस्वीर : मर्करी या बुध। पंखों वाला संदेशवाहक, वाणिज्य का देवता, चोरों तथा जुआरियों का संरक्षक देव, तेज़ी से धोखा देने वाले लोगों का अधिपति। जिस दिन मर्करी पैदा हुआ था, उसी दिन उसने लायर नाम का वाद्ययंत्र खोज लिया था। शाम तक उसने अपोलो के मवेशी चुरा लिए थे। वह संसार भर में अपना मनचाहा रूप रखकर घूमता था। पारे को मर्करी इसीलिए कहा जाता है, क्योंकि यह भी उतना ही अस्थिर और निराकार है। यह निराकार होने की शक्ति दर्शाता है।

https://freehindipustakalya.blogspot.com

विशेषज्ञ की राय : सेना की पूर्णता निराकार बनने में है। युद्ध में विजय एक ही रणनीति को बार-बार दोहराने से नहीं मिलती है, बल्कि लगातार बदलाव करने से मिलती है... सेना का एक ही व्यूह नहीं होता है, पानी का एक ही आकार नहीं होता है। विरोधी के अनुसार बदलकर और ढलकर विजय हासिल करने की योग्यता को ही प्रतिभा कहते हैं। (सुन त्सू, चौथी सदी, ई.पू.)